ईश्वर में हमारा विश्वास

राष्ट्रीय नवीन मेल

सत्यमेव जयते

डालटनगंज (मेदिनीनगर) एवं रांची से एक साथ प्रकाशित

www.rastriyanaveenmail.com • डालटनगंज • कार्तिक कृष्ण पक्ष 01 • विक्रम संवत 2080 • रविवार, 29 अक्टूबर 2023 • वर्ष-30 • अंक-14 • पृष्ठ-12 • मूल्य ₹ 2.00

'आर्या' में ऐसी ताकत है जो बवंडर का मुकाबला ... पेज 10 पर

चंदवा में उप मुखिया को अपराधियों ने गोली मारकर किया घायल

• परमेश्वर यादव पर जतरा मेला से वापस घर लौटने के दौरान हुआ जानलेवा हमला

नवीन मेल संवाददाता। चंदवा थाना क्षेत्र अंतर्गत बरवाटोली पंचायत के उप मुखिया परमेश्वर यादव को अज्ञात बदमाशों ने गोली मारकर घायल कर दिया है। अपराधी घटना को अंजाम देने के बाद मौके से फरार हो गए। जानकारी के अनुसार बरवाटोली पंचायत अंतर्गत हेसालोंग के मूर्तिटोंगरी में अखंड कीर्तन सह जतरा मेला का कार्यक्रम चल रहा था। मेले में मुख्य अतिथि के रूप में चतरा लोकसभा क्षेत्र से चुनाव की तैयारी कर रहे डॉ. अभिषेक भी शामिल होने पहुंचे थे। उप मुखिया परमेश्वर यादव भी उसी कार्यक्रम में शामिल होने गये थे। वह कार्यक्रम से देर शामअपने दो सहयोगियों के साथ हेसालोंग गांव स्थित अपने घर लौट रहे थे। इसी दौरान हेसालोंग व बेलंगा के बीच दो अपराधी अपाची बाइक से पहुंचे और चलते चलते ही बाइक चला रहे उप मुखिया परमेश्वर यादव के ऊपर गोली चला दी। गोली उप मुखिया के बाजू को छेदते हुए आरपार हो गई। गोली

मारने के बाद अपराधी अंधेरे का फायदा उठाते हुए बेलंगा की ओर भाग निकले। घायल अवस्था में उनके सहयोगी उन्हें लेकर कुडू सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे जहां से डॉक्टरों ने उन्हें बेहतर इलाज हेतु रिम्स रेफर कर दिया गया। घटना के संबंध में घायल परमेश्वर यादव ने बताया कि उसकी किसी से कोई दुश्मनी नहीं है। उसपर किसने हमला किया या करवाया है इसकी उन्हें कोई जानकारी नहीं है। इधर घटना के बाद पुलिस मामला दर्ज करते हुए अपराधियों की पहचान में जुटी हुई है।

बरवाटोली में दो माह पूर्व भी हो चुकी है एक युवक की हत्या

बरवाटोली पंचायत के जमुआरी गांव में दो माह पूर्व 24 अगस्त की रात प्रदुमन यादव (30), पिता संहगु यादव की अज्ञात बदमाशों ने गोली मारकर हत्या दी थी। घटना के वक़्त प्रदुमन यादव मोबाइल फोन पर बात करते हुए घर से बाहर निकले ही थे की पहले से घात लगाकर बैठे अपराधियों ने उन्हें गोली मार दी थी, जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। घटना के दो माह बाद भी अपराधी पुलिस की गिरफ्त से बाहर है। लगातार अपराधिक घटनाओं में हो रही वृद्धि से ग्रामीणों के बीच भय का माहौल व्याप्त है। अपराधी खुलेआम घटना को अंजाम देकर हैं फरार हो जा रहे हैं।

सीएम 16 नवंबर से करेंगे 'आपकी योजना आपकी सरकार कार्यक्रम' की शुरुआत

नवीन मेल संवाददाता

रांची। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन 16 नवंबर से 'आपकी योजना, आपकी सरकार,आपके द्वार' कार्यक्रम का तीसरा चरण शुरू करने वाले हैं। मुख्यमंत्री साहिबगंज के बरहेट में अमर शहीद सिदो कान्हू के जन्मस्थली भोगनाडीह से इसकी शुरूआत करेंगे। इसका समापन दिसंबर महीने के अंतिम सप्ताह में धरती आबा बिरसा मुंडा के समाधि स्थल पर होगी। झारखंड मुक्ति मोर्चा के

केंद्रीय महासचिव विनोद पांडेय ने बताया कि 'आपका अधिकार, आपकी सरकार, आपके द्वार-3.0' की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं और विधिवत इसकी जानकारी मीडिया के माध्यम से जनता को दी जाएगी। विनोद पांडेय ने कहा कि इस कार्यक्रम के दौरान जिस जिस जिले में मुख्यमंत्री का कार्यक्रम होगा वहां की जिला और प्रखंड इकाई पूरी तरह सहयोग करेगी। मुख्यमंत्री की 16 नवंबर से प्रस्तावित 'आपका अधिकार, आपकी सरकार, आपके द्वार-3.0' बाबूलाल मरांडी की राज्यव्यापी संकल्प यात्रा की समाप्ति के बाद हो रही है। बाबूलाल मरांडी की करीब दो महीना 10 दिन चली संकल्प यात्रा ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

गागर में सागर

दादा व चाचा निकले छह वर्षीय अमन के कातिल

दोनों गिरफ्तार तीसरी आरोपी चाची फरार

इटखोरी (चतरा)। दादा व चाचा की हैवानियत ने इस पवित्र रिश्ते को जिले के इटखोरी में कलंकित कर दिया है। थाना क्षेत्र के नवादा पंचायत के अंतर्गत कोइंडा के चर्चित अमन कुमार हत्याकांड का खुलासा पुलिस ने तीन दिन के अंदर करते हुए बालक की हत्या में शामिल उसके दादा सकलदेव साव व चाचा आशीष साव को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। इस संबंध में थाना प्रभारी विनोद कुमार ने बताया कि आपसी रंजिश के कारन रामवृक्ष साव के छह वर्षीय पुत्र अमन कुमार की हत्या उसके सगे दादा सकलदेव, चाचा आशीष व चाची ने जिंदा शौचालय की टंकी में डालकर कर दी। आरोपी दादा व चाचा को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। इसमें शामिल तीसरी आरोपी मृतक की चाची फरार है।

आईजी मुख्यालय की समीक्षा बैठक 30 को

रांची। झारखंड पुलिस मुख्यालय में आईजी मुख्यालय मनोज कौशिक 30 अक्टूबर को समीक्षा बैठक करेंगे। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आईजी मुख्यालय सभी जिलों के एसएसपी और एसपी के साथ बैठक करेंगे। इस संबंध में सभी जिलों के एसएसपी और एसपी को पत्र लिखा गया है। पत्र में कहा गया है कि झारखंड पुलिस मुख्यालय पीजी पोर्टल में कुल 807 शिकायत लंबित पायी गयी है। इसमें सभी एसएसपी और एसपी को शामिल होने के लिए कहा गया है। लंबित मामलों को शीघ्र निष्पादित करने के लिए यह समीक्षा बैठक बुलायी गयी है।

झारखंड में 1.60 लाख के केसीसी लोन के लिए गारंटी जरूरी नहीं

रांची। राज्य में किसानों को बिना किसी दस्तावेज के 1.60 लाख रुपये तक केसीसी (किसान क्रेडिट कार्ड) लोन दिया जा रहा है। अब किसानों को दस्तावेज वेरिफिकेशन के लिए बैंक का चक्कर काटने की कोई जरूरत नहीं है। राज्य में 1.60 लाख रुपये का केसीसी लोन लेने के लिए किसान को किसी भी तरह के दस्तावेज (गारंटी) देने की जरूरत नहीं है। हालांकि, इस वर्ष मात्र तीन हजार किसानों ने ही डेढ़ लाख से दो लाख रुपये तक केसीसी ऋण लिया है। अधिकतम लोन 50 हजार रुपये से एक लाख रुपये के बीच लिया जाता है। कुल 4.15 लाख किसानों ने 25 हजार से 50 हजार रुपये तक का कर्ज लिया है। किसान क्रेडिट कार्ड लोन को लेकर आरबीआई की तरफ से नई गाइडलाइंस जारी की गई है। इस गाइडलाइंस के माध्यम से केसीसी लोन को पूरी तरह से डिजिटल किया जा रहा है। इसे किसानों यह फायदा होगा कि उन्हें लोन लेने के लिए किसी भी तरह के डॉक्यूमेंट को लेकर बैंक की ओर रुख करने की जरूरत नहीं है।

योगेंद्र तिवारी खोल रहा नेताओं-अफसरों के राज, कोर्ट ने छह दिनों के लिए रिमांड बढ़ाई

रांची। झारखंड में शराब घोटाले के किंगपिन योगेंद्र तिवारी से ईडी अगले छह दिनों तक दोबारा पूछताछ करेगी। पीएमएलए (प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट) स्पेशल कोर्ट ने शनिवार को ईडी की दरख्वास्त पर उसकी रिमांड को बढ़ाने की मंजूरी दे दी। इसके पहले ईडी योगेंद्र तिवारी से आठ दिनों तक पूछताछ कर चुकी है। इस दौरान उसने एजेंसी को अपने संरक्षकों और शराब कारोबार में पैसा लगाने वालों के नाम बताए हैं। उसने कई राजनेताओं और अफसरों का संरक्षण होने की बात स्वीकार की है। योगेंद्र तिवारी को 19 अक्टूबर को गिरफ्तार किया था। इसके पहले शराब घोटाला मामले में प्रवर्तन निदेशालय ने 23 अगस्त को राज्य भर में 36 ठिकानों पर छापेमारी की थी। ईडी ने अपनी जांच में पाया है कि देवघर के रहने वाले योगेंद्र तिवारी ने पूर्व की सरकार से लेकर अब तक शराब के धंधे से करोड़ों की संपत्ति अर्जित की है।

आईसीसी क्रिकेट वर्ल्ड कप-2023

आस्ट्रेलिया - 388 /10 (49.2 ओवर)

न्यूजीलैंड - 383/9 (50 ओवर)

नीदरलैंड - 229 / 10 (50 ओवर)

बांग्लादेश -142 /10 (42.2 ओवर)

आज का मैच

भारत बनाम इंग्लैंड : लखनऊ (2:00 बजे से)

नक्सलियों के खिलाफ लातेहार पुलिस की बड़ी कार्रवाई

आठ लाख का इनामी अघनु गंझू गिरफ्तार

- ▸▸ चंदवा में पुलिस पार्टी पर हमले का मुख्य आरोपी है गंझू
- ▸▸ गंझू पर चार जिलों के कई थानों में 78 मामले हैं दर्ज
- ▸▸ राज्य सरकार व एनआईए ने घोषित कर रखा था इनाम
- ▸▸ चंदवा थाना क्षेत्र के बेतर जंगल से की गई गिरफ्तारी

नवीन मेल संवाददाता। लातेहार/चंदवा नक्सलियों के खिलाफ लातेहार पुलिस को बड़ी कामयाबी हासिल हुई है। जिले में आतंक का पर्याय बन चुके भाकपा माओवादी के सक्रिय सबजोनल कमांडर अघनु गंझू को गिरफ्तार करने में पुलिस ने बड़ी सफलता प्राप्त की है। अघनु गंझु वर्ष 2019 में चंदवा के लुकुइया मोड़ पर हुई पुलिस पेट्रोलिंग पार्टी के ऊपर हमले का मुख्य आरोपी है। अघनु गंझू पर लातेहार, लोहरदगा, गुमला, रांची जिला के विभिन्न थानों में कुल 78 मामले दर्ज हैं।

लातेहार पुलिस अधीक्षक कार्यालय में आयोजित प्रेस वार्ता में जानकारी देते हुए एसपी अंजनी अंजन ने बताया है कि पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि चंदवा थाना क्षेत्र अंतर्गत बेतर गांव के समीप जंगलों में भाकपा माओवादी उग्रवादी संगठन का दस्ता भ्रमणशील है। सूचना के आलोक में लातेहार एसडीपीओ संतोष कुमार मिश्रा के नेतृत्व में छापेमारी दल का गठन किया गया। गठित टीम के द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए ग्राम बेतर जाने वाली पक्की सड़क स्थित पुल के सामने बेतर जंगल पहुंचकर भाकपा माओवादी उग्रवादी संगठन के विरुद्ध सघन छापेमारी की गई। छापेमारी के क्रम में भाकपा माओवादी उग्रवादी संगठन के सक्रिय सबजोनल कमांडर अघनु गंझू (55), पिता स्व. खेटा गंझू, साकिन मड़मा, थाना चंदवा (लातेहार) को पुलिस बल ने साहस का परिचय देते हुए गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार नक्सली झारखंड के लातेहार, गुमला, लोहरदगा, रांची जिलों के विभिन्न थाना क्षेत्र में सक्रिय था एवं काफी दिनों से फरार चल रहा था। गिरफ्तार नक्सली अघनु गंझू वर्ष 2019 में चंदवा थाना क्षेत्र अंतर्गत लुकुइया मोड़ के पास हुए पुलिस पार्टी पर हमले का मुख्य आरोपी है। उल्लेखनीय है कि गिरफ्तार अभियुक्त के विरुद्ध झारखंड सरकार द्वारा पांच लाख एवं एनआईए द्वारा तीन लाख रुपये का इनाम घोषित है। छापेमारी दल में लातेहार एसडीपीओ संतोष कुमार मिश्रा, पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी चंदवा बबलु कुमार, बालूमाथ थाना प्रभारी धर्मेंद्र कुमार महतो, पुअनि जमील अंसारी, पुअनि नारायण यादव, पुअनि दिव्यप्रकाश, पुअनि कुंदन कुमार, पुअनि सुनील टूटी सभी थाना चंदवा, सअनि चंदन मांझी, सैट 44, सैट 206 माल्हन पिकेट के सशत्र बल के जवान शामिल थे।

झारखंड में फरेबियों की सरकार इसको जाना चाहिए : जेपी नड्डा

हरमू मैदान में हुआ प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी की संकल्प यात्रा का समापन समारोह

रांची। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने शनिवार को हेमंत सरकार पर जमकर निशाना साधा और कहा कि फरेबियों की सरकार है। सरकार में अपराध चरम पर है। भ्रष्टाचार में सरकार आकंठ डूबी हुई है। मुख्यमंत्री के पीछे ईडी पड़ी हुई है। यह ऐसी सरकार है, जहां शराब माफिया, लैंड-सैंड माफिया दनदना रहे हैं। ऐसी सरकार को जाना चाहिए।

नड्डा रांची के हरमू मैदान में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी की संकल्प यात्रा के समापन समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा और कांग्रेस आदिवासियों के नाम पर राजनीति करती है। आदिवासियों को जितना नुकसान हेमंत की सरकार में हुआ है, उतना पहले किसी दूसरी सरकार में नहीं हुआ है। इस सरकार का जाना तय है लेकिन झारखंड की भोली जनता एक बात समझ ले भाजपा की सरकार जब सत्ता पर बैठती है तो जनता की सेवा के लिए बैठती है। जब जेएमएम और कांग्रेस के लोग सत्ता पर बैठते हैं तो अपनी सेवा के लिए बैठते हैं। भाजपा अध्यक्ष ने हेमंत सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि मंदिर तोड़े जा रहे हैं। शिव बारात को रोका जाता है। ऐसी सरकार जो तुष्टिकरण से युक्त हो, भ्रष्ट हो उसे वापस नहीं आने देंगे। एक समय था जब भाजपा की सरकार थी तो नक्सल पर नियंत्रण था।

राज्य के हिस्से जो काम आया उसका बंटाधार हुआ

नड्डा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकास कार्यों का जिक्र करते हुए कहा कि झारखंड में सात हजार सात सौ 91 किमी की हाइवे है। एक हजार एक सौ करोड़ की लागत से एम्स बनाकर दिया। चार साल के अंदर देवघर का मेडिकल कॉलेज बनकर तैयार हुआ। जो काम प्रदेश के हाथ पड़ा उसका बंटाधार हो गया लेकिन मोदी के हाथ जो काम लगा उसका विकास हो गया। विश्व स्तर का रेलवे स्टेशन बनकर आयेगा यह तय है। जेपी नड्डा ने गोड्डा, गढ़वा, देवघर और रांची में होने वाले विकास कार्यों का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने पीएम मोदी का रिपोर्ट कार्ड आपके सामने रखा है।

आज नक्सलियों की हालत क्या है। वह दनदना रहे हैं। आज राज्य में रेप हो रहा है। लूट हो रही है। यह जंगल राज बनाकर रखा है। मैं बाबूलाल और भाजपा को बधाई देना चाहता हूं कि सही पर बाबूलाल ने जनता को जगाया है।

आदिवासियों के नाम पर सिर्फ वोट की राजनीति : उन्होंने कहा कि आदिवासियों की चर्चा तो बहुत ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

जेपीएससी परीक्षा में करीब 100 अभ्यर्थियों की कॉपी में ओवरराइटिंग, इंटरव्यू में भी दिये गये ज्यादा नंबर

रांची। पहली और दूसरी जेपीएससी की परीक्षा में जबरदस्त धांधली की गयी है। झारखंड हाई कोर्ट में सीबीआई ने जो जानकारी दी है उसके मुताबिक अब तक की जांच में यह बात सामने आयी है कि लगभग 100 अभ्यर्थियों की उत्तर पुस्तिका में ओवरराइटिंग कर न सिर्फ नंबर बढ़ाये गये, बल्कि उन्हें इंटरव्यू में भी ज्यादा नंबर दिये गये हैं। इस बात की पुष्टि एफएसएल (फॉरेंसिक साइंस लेबोरेट्री) की जांच में भी हुई है। इसमें जेपीएससी के तत्कालीन अध्यक्ष व सदस्य राधा गोविंद नागेश और को-ऑर्डिनेटर परमानंद सिंह की काफी महत्वपूर्ण भूमिका थी। हाई कोर्ट में सीबीआई द्वारा दी गयी इस जानकारी के बाद अदालत ने सरकार से यह पूछा है कि जिन अफसरों के खिलाफ आरोप प्रथम दृष्टया से सही पाये गये हैं, उनके खिलाफ अब तक क्या कार्रवाई की गयी है। इस पूरे मामले की हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश संजय कुमार मिश्र और जस्टिस आनंदा सेन की खंडपीठ इस पूरे मामले पर सुनवाई कर रही है। अदालत अब इस मामले में नौ नवंबर को सुनवाई करेगी। जेपीएससी की तरफ से ली गई विभिन्न परीक्षाओं में गड़बड़ी का आरोप लगाते हुए साल 2008 में बुद्धदेव उरांव ने जनहित याचिका दाखिल की थी, जिसपर सुनवाई करते हुए हाई कोर्ट ने इन परीक्षाओं की सीबीआई जांच करने का निर्देश दिया था और नियुक्ति पर रोक लगा दी थी। हाई कोर्ट के इस आदेश से प्रभावित अभ्यर्थियों ने सुप्रीम कोर्ट की शरण ली थी। यहां अभ्यर्थियों को राहत मिली थी। सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के नियुक्ति प्रक्रिया को रोकने के आदेश को खारिज कर दिया था, लेकिन सीबीआई जांच के आदेश को बरकरार रखा था।

हेमंत सरकार सिर्फ कमाने में लगी है : बाबूलाल मरांडी

नवीन मेल संवाददाता

रांची। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि 4 साल से झारखंड में हेमंत सोरेन की सरकार है। 4 वर्षों में से विकास ठप है। हेमंत सरकार कमाने में लगी हुई है। झारखंड में जो भी विकास का काम दिख रहा है वह भाजपा सरकार की देन है। देश में बीजेपी की सरकार बनी तो अलग झारखंड बना। राज्य बनने के बाद विकास का काम प्रारंभ हुआ। इस प्रदेश में गांव तक सड़क, बिजली, पुल पुलिया का निर्माण हुआ। कांग्रेस ने 50-55 वर्षों तक राज किया परंतु गांव की सुधि नहीं ली। ना ही राज्य अलग किया। पहले वाजपेई जी और मोदी जी के नेतृत्व में काम हो रहा है। मरांडी ने कहा कि हेमंत सोरेन सरकार ने कई घोषणा की। 5 लाख युवाओं को रोजगार देने, रोजगार नहीं तो बेरोजगारी भत्ता देने की। यह घोषणा केवल चुनावी मंचों से नहीं किया बल्कि विधानसभा से किया लेकिन कोई भी काम पूरा नहीं हुआ। हेमंत सोरेन सरकार के रहते प्रदेश का विकास नहीं हो सकता है। यह लोग सिर्फ अपना, अपने परिवार का विकास करते हैं। पैसे की राजनीति करते हैं।

मरांडी ने कहा कि कानून व्यवस्था की पूरे राज्य में स्थिति खराब है। चोरी डकैती अपहरण बलात्कार हो रही है। बहू बेटियां सुरक्षित नहीं है। ब्लॉक ▸▸शेष पृष्ठ 11 पर

व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों को मिलेंगे 1200 रुपये

नवीन मेल संवाददाता

रांची। राज्य के सरकारी स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों को 80 घंटे की इंटर्नशिप अनिवार्य रूप से कराई जाएगी। साथ ही इन विद्यार्थियों को इंटर्नशिप के दौरान 1,200 रुपये का स्टाइपेंड भी मिलेगा। यह राशि उनके बैंक खाते में डायरेक्ट बेनेफिट ट्रांसफर की जाएगी। इस दौरान सभी विद्यार्थियों को बैंक खाता अनिवार्य रूप से खोलने का निर्देश दिया गया है। बैंक खाता के माध्यम से राशि डीबीटी का जा सकेगी। इसके अलावा व्यावसायिक शिक्षा के तहत इंटर्नशिप पूरा करने वाले विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र भी दिया जाएगा। इस दौरान 446 स्कूलों में 11वीं और 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों की इंटर्नशिप कराई जानी है। फिलहाल, 11 तरह की व्यावसायिक शिक्षा विद्यार्थियों को दी जा रही है।

व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम के राज्य समन्वयक स्वप्निल कुजूर ने शनिवार को बताया कि संस्थान का विद्यार्थियों के प्रति व्यवहार और बच्चों का कार्य में मन कितना लग रहा है। इन सभी विषयों का निरंतर आकलन करते रहना चाहिये। इसके अलावा इंडस्ट्रियल विजिट के लिए प्रति विजिट स्कूलों को 7500 रुपये भी दिए जाएंगें।

पलामू प्रमंडल में दूसरों दलों से आये कर रहे प्रतिनिधित्व, कैडर की उपेक्षा जारी

कभी रहे अन्य दलों के माननीय अब बने भाजपा के खेवनहार

अखिलेश चौबे

मेदिनीनगर। पलामू व गढ़वा जिले के सभी विधान सभा क्षेत्रों में अन्य दलों के माननीय ही वर्तमान में भाजपा का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। इससे राजनीति में सत्ता की महत्ता के मामले में पार्टी विद डिफरेंस कही जाने वाली भाजपा व दूसरे दलों में कोई अंतर प्रतीत नहीं होता।

वर्तमान में पलामू व गढ़वा अंतर्गत स्थित भवनाथपुर विधान सभा से नवयुवक संघ के भानू प्रताप शाही, गढ़वा से झाविमो के सत्येंद्रनाथ तिवारी, विश्रामपुर से राजद के रामचंद्र चंद्रवंशी, पाटन से राजद की ही पुष्पा देवी व डालटनगंज से झाविमो के आलोक चौरसिया भाजपा के खेवनहार बने हैं। गढ़वा निवासी राजद के प्रदेश अध्यक्ष व कई बार क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले गिरिनाथ सिंह भी भगवा दल में अहम जिम्मेदारी निभा रहे हैं। झारखंड प्रदेश में तो यह फेहरिस्त काफी लंबी है। भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व में अनंत काल से सत्ता हासिल करना ही राजनीतिक सफलता का प्रमुख सिद्धांत रहा है। सिंहासन के लिए भाईयों के बीच हुए विनाशकारी संघर्ष को ही हम महाभारत कहते हैं। वर्तमान में तो सत्ता के लिए आदर्शों की तिलांजलि आम बात हो गई है। कुर्सी की महक पाते कब, कहां और कौन किस पाले में जा बैठेगा। कोई नहीं जानता। वर्तमान में विश्व की सबसे बड़ी पार्टी कही जाने वाली भाजपा अपनी स्थापना 1980 से ही पार्टी विद डिफरेंस का राग अलापती रही है। शुरूआती दशकों में पार्टी उसूल पर कायम भी रही। किंतु कहते हैं सत्ता का इंतजार अच्छे-अच्छों को डिगा देता है। सत्ता के लिए अटल युग में ही गठबंधन राजनीति का दौर प्रारंभ हुआ था। किंतु मोदी काल में अब नया दौर शुरू हो गया है तथा किसी भी प्रकार चुनाव जितना ही पार्टी का मूलमंत्र बन गया है। पलामू जिले की बात करें तो यहां कई पार्टी के कार्यकर्ता उपेक्षित महसूस कर रहे हैं। इसे देखते हुए कालांतर में पार्टी ने मूल कैडरों को दरकिनार कर अन्य दलों के माननीयों पर दाव आजमाना जारी है।

कुनबा बढ़ाने में जुटे दल : चुनाव नजदीक आते ही सभी दल अपना-अपना कुनबा बढ़ाने में जुट गये हैं। कोई घर वापसी तो कोई आ अब लौट चले के नारों के साथ चुनाव फतह करने की जुगत में लगा है। कमोबेस कभी दल अन्य दल के कार्यकर्ताओं को गाजे-बाजे के साथ अपने पाले में ला रहे हैं।

कैडर कार्यकर्ता हाशिये पर

अन्य दलों से आये लोगों को तरजीह मिलने के कारण पार्टी के कैडर कार्यकर्ता धीरे-धीरे हाशिये पर आते जा रहे हैं। कभी चुनाव के दौरान भाजपा को पानी पी-पी कर कोसने वाले जहां अब सबसे निष्ठावान बन गये हैं। वहीं उस समय उनके हमलों का करारा जबाब देने वाले रहिमन चुप हो बैठिये, देख दिनन का फेर की उक्ति को चरितार्थ कर रहे हैं।

नाबालिग फुटबॉल खिलाड़ी के साथ प्रशिक्षक ने की छेड़खानी, गिरफ्तार

रांची। रांची के धुर्वा इलाके की एक फुटबॉल खिलाड़ी के साथ छेड़खानी की घटना को अंजाम दिया गया है। इस वारदात को उसके प्रशिक्षक ने गुरुवार की शाम अंजाम दिया है। मामले को गंभीरता से लेते हुए धुर्वा पुलिस ने आरोपी प्रशिक्षक को गिरफ्तार कर लिया है। गिरफ्तार आरोपी का नाम सतीश मिंज है और वह धुर्वा थेथरकोचा का रहने वाला है। पुलिस के अनुसार नाबालिग खिलाड़ी आठवीं कक्षा में पढ़ाई भी करती है। सतीश नाबालिग खिलाड़ी को ट्यूशन के साथ उसे फुटबॉल खेलने की ट्रेनिंग भी दिया करता है। गुरुवार को आरोपी सतीश नाबालिग को ट्यूशन पढ़ाने के लिए उसके घर गया। उस वक्त घर पर कोई नहीं था। अकेला पाकर आरोपी ने नाबालिग के साथ जबरन अश्लील हरकत करने लगा। विरोध करने पर आरोपी ने नाबालिग को जान से मारने की भी धमकी दी।

गागर में सागर

कल रांची में मनरेगाकर्मी मंत्री का करेंगे घेराव

हुसैनाबाद। लंबित मांगों को लेकर मोहम्मदगंज प्रखंड में कार्यरत मनरेगा कर्मी सोमवार को रांची में ग्रामीण विकास मंत्री का घेराव करेंगे। इस बाबत कर्मियों ने शनिवार को बीडीओ को ज्ञापन भी सौंपा है। मौके पर मौजूद प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी चन्द्रशेखर कुमार, सहायक अभियंता बसंत कुमार, लेखा सहायक जगत प्रसाद मेहता, कंप्यूटर सहायक उपेन्द्र पासवान, मिन्हाज आलम व संतोष कुमार, कनीय अभियंता अजीत कुमार पाठक, नजमा खातून, शमशाद अहमद, राजीव कुमार, जनेश्वर राम, संजय बैठा, नरेंद्र कुमार बैठा आदि मनरेगा कर्मियों ने बताया कि यदि उनकी समस्याओं का निराकरण नहीं किया गया तो दूसरे दिन भी घेराव कार्यक्रम जारी रहेगा। इस दौरान प्रखंड कार्यालय में मनरेगा संबंधी समस्त कार्य बाधित रहेंगे।

9 मवेशी जब्त, दो गिरफ्तार

मेदिनीनगर। नावा बाजार थाना समीप एनएच 98 मुख्य मार्ग औरंगाबाद- मेदिनीनगर पथ पर थाना प्रभारी दीपक कुमार दास के नेतृत्व में पुलिस ने तस्करी कर ले जाये जा रहे नौ मवेशियों को जहां जब्त कर लिया। वहीं पिकअप चालक व खलासी को गिरफ्तार कर लिया। शुक्रवार की रात में गश्त के दौरान पुलिस ने गढवा बाजार से बिहार की तरफ जा रहे पिकअप की तलाशी ली। इस दौरान पुलिस ने पिकअप पर लदे तीन बैल व छह गाय को जब्त कर लिया। पुलिस ने वाहन चालक दीपक कुमार पिता अरुण महतो निवासी ग्राम जगनबीघा थाना दाउदनगर बिहार व उपचालक अकरम अली पिता अहमद अली ग्राम दाउदनगर बिहार को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के बाद वाहन था वाहन मालिक एवं दो अन्य क्रे खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।

सर्पदंश से महिला की मौत

हुसैनाबाद। हुसैनाबाद अनुमंडल क्षेत्र के पंसा गांव निवासी अर्जुन मेहता की 40 वर्षीय पत्नी मीना देवी की शुक्रवार की देर शाम सर्पदंश से मौत हो गई। परिजनों ने बताया कि मीना घर में रखें ड्रम के नीचे से सामान निकाल रही थीं। उसी क्रम में उनको सांप ने डंस लिया। बेहोशी की हालत में आनन- फानन में परिजन इलाज के लिए उन्हें हुसैनाबाद अनुमंडलीय अस्पताल में भर्ती कराया। जहां इलाज के क्रम में उनकी मौत हो गई। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस ने अस्पताल पहुंचकर परिजनों से बयान लेने के बाद पोस्मार्टम कराकर शनिवार को शव परिजनों को सौंप दिया।

लालगढ स्टेशन-पंजरी खुर्द रोड निर्माण की मांग

नावा बजार। लालगढ पंचायत के मुखिया धर्मेंद्र चौधरी ने व्यापक जन हित को देखते हुए लालगढ स्टेशन से पंजरी खुर्द तक सडक निर्माण की मांग की है। उन्होंने कहा कि उक्त कच्ची रोड की हालत अत्यंत खस्ता हो गई है। इससे ग्रामीणों को आवागमन करने में भारी परेशानी उठानी पड रही है। सडक का निर्माण हो जाने से ग्रामीणों को मुख्य मार्ग तक पहुंचने में काफी सुविधा होगी।

बीएसओ ने की जांच, मौके से डीलर अनुपस्थित

तीन माह के राशन घोटाले की सत्यता उजागर

राशन मांगने पर उन्हें डांट कर भगा दिया जा रहा है : गामीण

नवीन मेल संवाददाता

उंटारी। जिला आपूर्ति पदाधिकारी के निर्देश पर प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी संजय कुमार ने उंटारी रोड प्रखंड अंतर्गत डेवडर के निलंबित जन वितरण प्रणाली दुकान की जांच की। जांच के बाद बीएसओ ने बताया की डीलर के प्रति लगाए गए आरोप सत्य हैं। इसकी पूरी रिपोर्ट जिला आपूर्ति पदाधिकारी को सौंपी जायेगी। जांच के दौरान आरोपित डीलर उजाला समूह की अध्यक्ष अनुपस्थित रहीं। इस दौरान दुकान में खाद्यान का स्टाक भी कम पाया गया। मौके पर उपस्थित ग्रामीणों ने बताया की उन्हें तीन माह से राशन नहीं मिला है। अंगूठा लगवा कर भी डीलर राशन नही देती है। राशन मांगने पर उन्हें डांट कर भगा दिया जा रहा है। लाभुकों को आपूर्ति पदाधिकारी ने नवम्बर माह से नजदीकी जन वितरण दुकान के डीलर भरोसा राम से राशन लेने का निर्देश दिया। उन्होंने नवनियुक्त डीलर को निर्देश दिया कि हर हाल में कार्डधारकों को नवम्बर से राशन वितरण सुनिश्चिम करें। पदाधिकारी ने बताया की संबंधित समूह को पहले ही निलंबित किया जा चुका है। जांच रिपोर्ट तैयार कर उक्त समूह पर प्राथमिकी दर्ज कर रिकवरी किया जायेगा।

एसपी ने एससी-एसटी मामलों की समीक्षा की

नवीन मेल संवाददाता

हरिहरगंज। पलामू की पुलिस अधीक्षक रिष्मा रमेशन ने शनिवार को हरिहरगंज, पिपरा व छतरपुर थाने में दर्ज 7 एससी-एसटी एक्ट के तहत दर्ज मामलों की समीक्षा की। इस दौरान हरिहरगंज थाना में एसपी ने बताया कि हरिहरगंज में 2, पिपरा में 3 तथा छतरपुर में 2 मामलों की समीक्षा कर मातहतों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिया गया है। उन्होंने कानून व्यवस्था के मद्देनजर थाना प्रभारी को निर्देशित किया। मौके पर छतरपुर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अजय कुमार, प्रशिक्षु डीएसपी राजेश यादव, राजीव रंजन, पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी सुदामा कुमार दास मौजूद थे।

रेलवे ट्रैक पर गिरे वृद्ध की मौत

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। शहर के रेड़मा जोगियाही पुल के समीप रेलवे ट्रैक पार करते समय ट्रैक पर गिर जाने से एक वृद्ध की मौत हो गई। शनिवार की रात करीब आठ बजे एक वृद्ध रेलवे ट्रैक पार कर रहे थे। इसी दौरान असंतुलित होकर वे ट्रैक पर ही गिर गये। इस दौरान संघातिक चोट लगने से उनकी मौत हो गई। स्थानीय लोगों की सूचना पर पहुंची जीआरपी थाना पुलिस ने शव की शिनाख्तगी की कोशिश की, किंतु उसकी पहचान नहीं हो सकी। टीओपी 2 प्रभारी सुधीर सिंह भी सदल-बल मौके पर पहुंचकर मौका मुआयना किया। पुलिस ने शव को अंत्यपरीक्षण के लिए भेज दिया है।

आर्थिक तंगी से परेशान युवक ने खाया कीटनाशक

विश्रामपुर। आर्थिक तंगी से परेशान विश्रामपुर थाना क्षेत्र के बघमानवा गांव निवासी युवक ने शनिवार को कीटनाशक का सेवन कर लिया। युवक की पहचान मंटू पासवान पिता भूखन पासवान के रूप में हुई है। जिन्हें परिजनों ने सीएचसी विश्रामपुर में भर्ती करवाया। जहां चिकित्सकों ने युवक की प्राथमिक उपचार के बाद जिला अस्पताल मेदिनीनगर रेफर कर दिया है।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का श्रोताओं ने उठाया लुत्फ

नवीन मेल संवाददाता

हुसैनाबाद। अनुमंडल के कर्पूरी मैदान में टीम सूर्या सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें डिंपल सिंह, अनुपमा यादव, माही, मनीषा, प्रवीण सिंह और चंदन यादव आदि भोजपुरी कलाकारों ने एक से बढ़कर एक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की। कार्यक्रम का उदघाटन स्थानीय विधायक कमलेश कुमार सिंह, एसडीओ कमलेश्वर नारायण व एनसीपी प्रदेश प्रवक्ता सूर्या सिंह ने संयुक्त रूप से किया। योगेंद्र सिंह की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम की शुरूआत प्रवीण सिंह द्वारा प्रस्तुत देवी गीते अंगना लिपईबो ये मईया से की गई। अनुपमा यादव ने तेरे दर पे आये हैं ओ मेरी मईया शेरों वाली, कागज कलम दवाद ला लिख दू दिल तेरे नाम, आई हो दादा कईसन पिअवा के चरित्र बा आदि गीतों की मोहक प्रस्तुति की। अपने संबोधन में विधायक श्री सिंह ने कहा कि सांस्कृतिक कार्यक्रम से लोगों को मनोरंजन के साथ आपसी सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिलता है। इस मौके पर इंटक नेता विनय कुमार सिंह उर्फ बिनु सिंह, विधायक प्रतिनिधि अजीत सिंह, चंदन सिंह, मिथिलेश कुमार सिंह,पप्पू सिंह, प्रकाश अग्रवाल, अंजली शर्मा, पवन अग्रवाल, प्रिंस शर्मा, विनय पासवान, मो.अब्बास अंसारी, जिशान हसन, रहमान राइन, रतन प्रसाद, सत्येंद्र सिंह, इम्तियाज मौजूद थे।

छात्र-छात्राओं की शिकायतों का होगा त्वरित निष्पादन

राज्य विश्वविद्यालयों के लिए लोकपाल की होगी तैनाती

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। नीलांबर-पीतांबर विश्वविद्यालय सहित प्रदेश के सभी 28 विश्वविद्यालयों के लिए लोकपाल की तैनाती की जाएगी। जिससे छात्र-छात्राओं की शिकायतों का त्वरित निष्पादन संभव हो सकेगा। बताते चलें कि झारखंड में सरकारी विश्वविद्यालय की संख्या 12 है, जबकि निजी विश्वविद्यालय की संख्या 15 है। इसके अतिरिक्त एक महाविद्यालय को डीम्ड यूनिवर्सिटी का दर्जा दिया गया है। इससे विश्वविद्यालयों की कुल संख्या 28 हो गई है। सरकार द्वारा नियुक्त लोकपाल विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की शिकायतों और उनके आवेदनों पर निर्णय लेगी। यह व्यवस्था छात्र और छात्राओं को हो रही बहुत सारी परेशानियां और शिकायतों के मद्देनजर की जा रही है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग दिल्ली ने 2019 में ही यह नियमावली दी थी कि के प्रत्येक राज्य में स्थित विश्वविद्यालयों के लिए राज्य के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा लोकपाल की नियुक्ति की जाये। इस तारतम्य में 18 अक्टूबर को झारखंड सरकार के उच्च शिक्षा विभाग के सचिव राहुल कुमार पुरवार ने अधिसूचना जारी की है। कुलाधिपति के शिक्षा सलाहकार ए बाला गुरु सामी को पांच सदस्यीय सर्च कमेटी का अध्यक्ष बनाया गया है।

तापमान में उतार-चढाव से बीमार हो रहे लोग

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। तापमान में उतार-चढाव से नागरिक तेजी से विभिन्न संक्रामक बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। सुदूर अंचलों में समुचित स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव से लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड रहा है। पलामू में इन दिनों जहां सुबह-शाम असरकारी ठंड पड रही है। वहीं दिन में चटख धूप के कारण पारा चढ जा रहा है। इसका लोगों के स्वास्थ्य पर व्यापक दुष्प्रभाव पड रहा है। अनियमित मौसम के कारण नागरिक तेजी से वायरल फीवर, सर्दी-खांसी आदि बीमारियों का शिकार हो रहे हैं। चिकित्सालयों में विभिन्न मौसमी बीमारियों से ग्रसित मरीजों की भारी भीड उमड रही है। सुदूर ग्रामीण अंचलों में मुकम्मल स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव में नागरिक झोला छाप चिकित्सकों की शरण लेने को विवश हैं। लोगों ने जिला प्रशासन का ध्यान आकृष्ट कराते हुए सुदूर अंचलों में मोबाइल चिकित्सा शिविर लगाये जाने की मांग की है।

OFFICE OF THE DEPUTY COMMISSIONER, LATEHAR (DMFT Cell)

Refno.: -Date: -

NOTICE FOR INVITING VERY SHORT TERM EOI

Subject – Invitation of Very Short-Term Expression of Interest (EOI) for Rate Contract ofSupply and installation of Solar Based Robotic Pump Set 1 HP at different Area in Latehar District under DMFT Fund 2023-24.

District Administration, Latehar invites very short term EOIs from reputed firms/ Company/Partnership firm for Supply and installation of Solar Based Robotic Pump Set 1 HP at different area in Latehar district.

1	Name of Work	Supply and installation of Solar Based Robotic Pump Set 1HP in different Area of LATEHAR District.
2	EMD & Processing Fee etc.	10,00,000INR In Favor of Deputy Commissioner, LATEHARTenderFeesRs10,000INR(Non-Refundable)(DD in favour of **District Mineral Foundation Trust, Latehar**)
3	Last Date of Submission of EOI	07/11/2023, Till 05:00 PM
4	Date of Opening of EOI	08/11/2023 at 11:30 AM
5	Place of Submission/forgetting Required Information	DMFT Cell, Latehar
6	Place of Opening of EOI	Chamber ofDDC-cum-Member Secretary, DMFT

Complete EOI Document, terms & conditions are available on official website of the district:-https://latehar.nic.in/

DDC-CUM-MEMBER SECRETARY DMFT LATEHAR

PR 310045 District(23-24)D

पुलिस अधीक्षक का कार्यालय, गढ़वा

आवश्यक सूचना।
(नोटिस)

नाम–(1) दिलीप कुमार गुप्ता, पे0–स्व0 मंगरु प्रसाद गुप्ता, सा0–लमारीकला, थाना–काण्डी, जिला–गढ़वा, झारखण्ड, आपको सूचित किया जाता है कि आप भवनाथपुर थाना कांड सं0–75/2017, दिनांक –27.07.2017, धारा–420/34, भा0द0वि0 के प्राथमिकी अभियुक्त हैं, आप उक्त काण्ड में फिरार है। माननीय न्यायालय, श्री अमित खन्ना एस0डी0जे0एम0 नगर उंटारी, जिला–गढ़वा के द्वारा आपके विरुद्ध इश्तिहार निर्गत किया गया है, निर्गत इश्तिहार का विधिवत तामिला दिनांक–25.10.2023 को कराया गया। परन्तु आप अपने स्थाई पता–सा0– लमारीकला, थाना–काण्डी, जिला–गढ़वा से फिरार है। माननीय न्यायालय द्वारा उक्त कांड में आपको दिनांक–30.11.2023 तक उक्त न्यायालय में आत्मसमर्पण करने हेतु समयावधि दिया गया है। अतः आपको सूचित किया जाता है कि माननीय न्यायालय श्री अमित खन्ना, एस0डी0जे0एम0 नगरउंटारी, जिला–गढ़वा के न्यायालय में अविलंब दिनांक –30.11.2023 तक आत्मसमर्पण करना सुनिश्चित करें।

PR.NO.310074 Police(23-24):D — पुलिस अधीक्षक, गढ़वा।

पुलिस अधीक्षक का कार्यालय गढ़वा

आवश्यक सूचना

(चारो गयी वाहन हिरो स्पलेण्डर प्रो मोटर साईकिल, रंग-काला)

गढ़वा थाना कांड सं0–373/23, दिनांक–10.08.2023, धारा–379, भा0द0वि0 में चोरी गयी हिरो स्पलेण्डर प्रो मोटर साईकिल जिसका रजि0 नं0– JH03N-2179, इंजन नं0–HA10EYGC00399 एवं चेचिस नं0– MBLHA10CAG4C00470 का अज्ञात अपराधकर्मी द्वारा चोरी कर लिया गया है। जिसकी बरामदगी अबतक नहीं हो पाई है। अतः आम जनता से अनुरोध है कि उक्त चोरी गयी वाहन के बारे में किसी भी व्यक्ति को किसी प्रकार की सूचना प्राप्त हो, तो पुलिस उपाधीक्षक (मुख्यालय) गढ़वा के मो0 नं0– 9431706284 अथवा पुलिस अधीक्षक, गढ़वा के मो0नं0–9431706281 पर सूचित करने का कष्ट करेंगे।

निवेदक,
पुलिस अधीक्षक, गढ़वा

PR 310073 Police (23-24)_D

पत्रांक 405/खेल

समाहरणालय, चतरा।

(पर्यटन, कला–संस्कृति, खेलकूद एवं युवाकार्य शाखा)

Gmail - sport.chatra@gmail.com

"इच्छा की अभिव्यक्ति"

पर्यटन के क्षेत्र में पर्यटको को बेहतर सुविधा देने के उदेश्य से चतरा जिला के सदर प्रखण्ड अन्तर्गत लक्ष्मणपुर स्थित भेड़ी फार्म डेम तथा परिसर क्षेत्र का विकास कार्य कराया गया है, जिसका संचालन/बंदोबस्ती/लीज के माध्यम से किया जाना है। इस निमित इच्छुक फर्म/संस्थान (EOI) के माध्यम से दिनांक 06.11.2023 के अपराह्न 2:00 बजे तक बंदोबस्ती आवेदन बंद लिफापे में आमंत्रित किये जाते है। उसी दिन दिनांक 06.11.2023 को अपराह्न 03:00 बजे बंदोबस्ती आवेदन समाहरणालय के सभाकक्ष में खोली जायेगी।

इच्छुक फर्म/संस्थान इसकी विस्तृत विवरणी जिले के वेबसाईट www.chatra.nic.in पर देखा जा सकता है एवं विवरणी में अंकित शर्त इस कार्यालय में कार्यालय अवधि के दौरान देखा जा सकता है।

उपायुक्त,
चतरा

PR 310072Tourism, Art Culture Sports And Youth Affairs(23-24)#D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, लोहरदगा
(rdsd.lohardaga@rediffmail.com)

अतिअल्पकालीन ई-निविदा आमंत्रण सूचना

अतिअल्पकालीन ई–निविदा सूचना संख्या– **RDD/SD/LOHARDAGA/E-17/2023-24**

1. कार्य की विस्तृत विवरणी :–

क्रम संख्या	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रधन की राशि	परिमाण विपत्र का मुल्य	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	2	3	4	5	6
1	लोहरदगा जिलान्तर्गत कुडू प्रखण्ड में दीदी कैफे निर्माण कार्य।	74,91,000.00	1,50,000.00	10000.00	4 माह

2. वेबसाइट में निविदा प्रकाशन की तिथि :– 30.10.2023
3. ई–निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय :– दिनांक 30.10.2023 से दिनांक 08.11.2023 को अपराह्न 5:00 बजे तक।
4. ई–निविदा खोलने का स्थान :– कार्यपालक अभियंता, कार्यालय ग्रामीण विकास विशेश प्रमण्डल, लोहरदगा।
5. ई–निविदा खोलने की तिथि एवं समय :– दिनांक 09.11.2023 अपराह्न 3:00 बजे
6. ई–निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता :– कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, लोहरदगा।
7. ई–निविदा प्रकोष्ठ का दुरभाष संख्या :– 9934523795
8. परिमाण विपत्र की राशि घट–बढ़ सकती है तदनुसार अग्रधन की राशि देय होगी।
9. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल Online Mode द्वारा स्वीकार्य होगी।
10. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि का ई–भुगतान संवेदक द्वारा जिस बैंक खाता से किया जायेगा, उसी खाते में अग्रधन की राशि वापस होगी। अगर बैंक खाता को बंद कर दिया जाता है तो उसकी सारी जवाबदेही संवेदक की होगी।

विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट www.jharkhandtenders.gov.in एवं कार्यालय की सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता,
ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, लोहरदगा

PR 310081 Lohardaga (23-24)_D

झारखण्ड सरकारर
कार्यपालक अभियंता का कार्यालय ग्रामीण कार्य विभाग , कार्य प्रमण्डल,लोहरदगा

ई – अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना

ई– अल्पकालीन निविदा संख्या :– **01 /2023-24 / RWD /LOHARDAGA**

दिनांक 27.10.2023

कार्यपालक अभियंता,ग्रामीण कार्य विभाग , कार्य प्रमण्डल, लोहरदगा द्वारा निम्न विवरण के अनुसार e-procurement पद्धति से पैकेज के रूप में निविदा आमंत्रित की जाती है।

क्रम सं0	आईडेन्टी फिकेषन संख्या / पैकेज संख्या	कार्य का नाम	प्राक्कलित राषि (रूपये में) अंक में	प्राक्कलित राषि (रूपये में) अक्षर में	कार्य समाप्ति की तिथि	टेन्डर कॉल नं0
1	EE RWD/ LOHARDAGA/ 01/ STPKG -01/ 2023-24	बरवाडीह सीमाना से बारियातु भाया सरजू पावा तक पथ की सुदृढ़ीकरण कार्य। (लं0– 1.600 कि0 मी0) मक्का बाजारटांड़ से बरवाडीह भाया अम्बापावा एवं जामडीह तक पथ की सुदृढ़ीकरण कार्य। (लं0– 2.600 कि0 मी0) पतरातु से अराहासा सेन्हा सीमाना तक पथ की सुदृढ़ीकरण कार्य। (लं0– 2.00 कि0मी0) बदला से महुगांव तक पथ की सुदृढ़ीकरण कार्य। (लं0– 7.800 कि0 मी0) पषरार से खिजुरपतरा चन्दलागी भाया मेरूम तक पथ की सुदृढ़ीकरण कार्य। (लं0– 2.350 कि0 मी0)	116370200.00	ग्यारह करोड़ तीरेसठ लाख सत्तर हजार दो सौ0 रू0 मात्र।	09 माह	प्रथम

2. वेबसाईट में निविदा प्रकाशन की तिथि :– 04.11.2023 ।
3. ई–निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समय :– 16.11.2023 अपराहन् 5.00 बजे ।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय 17.11.2023 अपराह्न 3.30 बजे ।
5. निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पता :– कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण कार्य विभाग , कार्य प्रमण्डल,लोहरदगा पुराना डी0 आर0 डी0 ए0 भवन, लोहरदगा, पिन कोड– 835302
6. ई– निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं0.........................

विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट Jharkhandtenders.gov.in में देखा जा सकता है ।

कार्यपालक अभियंता
ग्रा0 का वि0 ,
कार्य प्रमण्डल, लोहरदगा

PR 310076 (Lohardaga)23-24*D

गागर में सागर

भाजपा नेता के भाई का निधन, शोक की लहर

मेदिनीनगर। भाजपा नेता अखिलेश तिवारी के बड़े भाई 65 वर्षीय शंकर तिवारी का निधन मेदिनीनगर में हो गया। वे चैनपुर प्रखंड के ओड़नार गांव के मूल निवासी थे तथा कैंसर रोग से पीड़ित थे। बीते कई बरसों से उनका इलाज चल रहा था। स्वर्गीय तिवारी अपने पीछे पत्नी, दो पुत्र, दो पुत्रीयां व नाती-पोता से भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं। उनके असामयिक निधन से परिवार सहित पूरा गांव शोकाकुल है। दुखद समाचार मिलते ही भाजपा के कार्यकताओं एवं नेताओं ने अखिलेश तिवारी के घर पहुंच कर शोक संवेदना व्यक्त की। जिनमें जिला अध्यक्ष विजयानंद पाठक, श्याम नारायण दुबे, अमलेश्वर दुबे, विपिन बिहारी सिंह, प्रेम सिंह, आनंद शंकर, मंगल सिंह, जय दुबे, उदय शुक्ला, प्रदीप सिंन्हा, दुर्गा जौहरी, विजय ओझा, बिभाकर पांडे, प्रफुल्ल सिंह,शिवकुमार मिश्र, ईश्वरी पांडे, भोला सिंह, शिवदीप सिंह, प्रभात भुइया, अरविंद गुप्ता, दिलीप तिवारी, मुरारी पांडेय, बवन तिवारी, कवि शर्मा, शशि भूषण पांडे, भोला पांडे, धीरेंद्र दुबे आदि शामिल थे। जिले से बाहर रहे नेताओं ने भी दुखद समाचार मिलते ही भाजपा नेता अखिलेश तिवारी को टेलिफोनिक माध्यम से अपनी शोक संवेदना व्यक्त की है। जिनमें पलामू के सांसद, विधायक, पूर्व सांसद, प्रदेश पदाधिकारी एवं प्रदेश प्रशिक्षण प्रमुख मनोज सिंह शामिल हैं।

स्वास्थ्य शिविर में 97 मरीजों का इलाज

पंडवा। पलामू जिला अंतर्गत लोहड़ा गांव के राजकीय मध्य विद्यालय परिसर में सीसीएल के राजहारा कोलियरी की ओर से स्वास्थ्य शिविर लगाया गया। इसमें 97 मरीजों का इलाज कर मुफ्त दवा दी गई। राजहारा चिकित्सा कोलियरी में पदस्थापित चिकित्सा पदाधिकारी डॉ सच्चिदानंद ने बताया कि सीएसआर के तहत शुक्रवार को क्षेत्र के 97 मरीजों को इलाज कर मुफ्त दवा दी गई।

रोटरी स्कूल चैनपुर में चला स्वच्छता अभियान

मेदिनीनगर। सीबीएसई के निर्देशानुसार शुक्रवार को रोटरी स्कूल चैनपुर में स्वच्छता अभियान चलाया गया। कार्यक्रम के शुरूआत में विद्यालय के प्राचार्य अशेष कुमार पाण्डेय ने प्रार्थना सभा में छात्र-छात्राओं व अध्यापकों को स्वचछता की शपथ दिलाई। इस दौरान सभी ने सप्ताह में 2 घंटे व साल में कम से कम 100 घंटे घर, बाहर या कार्यस्थल पर स्वच्छता से संबंधित सेवा देने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के 100 से अधिक छात्र छात्राओं द्वारा साइकिल रैली निकाली गई। प्राचार्य ने हरी झंड़ी दिखा कर रैली को रवाना किया। चैनपुर बाजार, पुरनचंद चौक, चैनपुर थाना होते हुए विद्यालय वापस पहुंचकर रैली का समापन किया गया। इससे पूर्व अध्यापकों के निर्देशन में छात्र-छात्राओं ने जहां विद्यालय परिसर के आसपास साफ-सफाई की गई वहीं स्वच्छता ही सेवा शीर्षक पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में भारी उत्साह के साथ शिरकत की। विद्यालय के चैयरमैन अनुग्रह नारायण शर्मा ने अपने सन्देश में कहा कि वर्तमान समय में स्वच्छता देश के सामाजिक सेवा में सर्वोपरि है। हम सभी का यह दायित्व बनता है कि प्राथमिकता देते हुए स्वच्छता को अपनी दिनचर्या में शामिल करें।

विधायक सरयू राय का कार्यकर्ताओं ने किया स्वागत

मेदिनीनगर। जनतंत्र मोर्चा ने पार्टी के मुख्य संरक्षक सह विधायक सरयू राय व केंद्रीय अध्यक्ष धर्मेंद्र तिवारी के आगमन पर डालटनगंज रेलवे स्टेशन पर स्वागत किया। पलामू जिला अध्यक्ष दिलीप पांडेय व गढ़वा जिला अध्यक्ष सुयस पांडेय के नेतृत्व में जिले के दर्जनों पदाधिकारी पलामू आगमन पर उपस्थित थे। स्वागत के बाद सर्किट हाउस में पार्टी पदाधिकारियों के साथ बैठकर एक-एक कर परिचय हुआ तथा कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा हुई। पार्टी का पंचायत स्तर तक विस्तार करने, प्रशासन में फैले भ्रष्टाचार रोकने, स्वास्थ्य सुविधाओं की लचर व्यवस्था, बालू को जनता के लिए फ्री करने तथा बिजली विभाग के द्वारा उपभोक्ताओं को मनमाना बिल भेजने एक उपभोक्ता का डबल कनेक्शन का मामला पर चर्चा की गई। मौके पर शत्रुघ्न ओझा, जिला उपाध्यक्ष हरि नारायण प्रजापति, रोहित मेहता, अभिषेक पांडेय, अनूप शर्मा, सुशील कुमार, सुनील सिंह, अभय यादव, विश्वजीत दुबे आदि उपस्थित थे।

रूलाने लगी प्याज, शहर में भाव 50 रूपये किलो

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पलामू सहित पूरे देश में प्याज की बढ़ी कीमतों ने एक बार फिर से लोगों को रूलाना शुरू कर दिया है। शनिवार को मेदिनीनगर शहर के सब्जी मंडी में प्याज की कीमत 50 रूपये प्रति किलो पहुंच गई। व्यापारियों ने बताया कि पलामू में महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश से प्याज आता है। वहां की मंडियों में ही प्याज की कीमत बढ गई है। आलू-प्याज के थोक कारोबारी समसुद्दीन ने बताया कि मेदिनीनगर के सब्जी बाजार में प्याज की कीमत 45 से 50 रुपए प्रति किलो है। महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश में ही प्याज की कीमत 40 से 45 रुपया प्रति किलो पहुंच गई है। व्यापारियों ने अंदेशा जताया है कि आगामी दिनों में प्याज की कीमत और भी बढ सकती है। प्याज की कीमतों में बढोतरी का कारण रकबा घटने के साथ ही अतिवृष्टि को बताया जा रहा है। बहरहाल प्याज की बढ़ी कीमतों ने लोगों की थाली का जायका फीका कर दिया है।

दिव्यांग बच्ची के साथ दुष्कर्म का आरोपी गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। नावाबाजार थाना क्षेत्र में आठ वर्षीय दिव्यांग बच्ची के साथ दुष्कर्म के आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पीड़िता को इलाज के लिए मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में भर्ती करवाया गया है। जहां पीड़िता की हालत गंभीर बनी हुई है। वह बोल नहीं पाती है। चिकित्सकों की टीम लगातार उसके स्वास्थ्य पर निगरानी रखे हुए है। जानकारी के अनुसार पीड़िता घर के बाहर खेल रही थी। इसी क्रम में पड़वा थाना क्षेत्र निवासी कंचन कुमार वहां पहुंचा और उसके साथ दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया। बच्ची के रोने की आवाज सुनकर परिजनों के पहुंचने पर मामले का खुलासा हुआ। पुलिस के अनुसार आरोपी ने शराब के नशे में घटना को अंजाम दिया है। वह शादीशुदा है और झारखंड से बाहर नौकरी करता था। हाल के दिनों में घर लौटा था। उसका एक 10 वर्ष का बेटा भी है।

भाजपा के 45 पदाधिकारी ट्रेन से रवाना होंगे नई दिल्ली

आज डालटनगंज पहुंचेगी अमृत कलश यात्रा ट्रेन

अमृत कलश यात्रा ट्रेन रविवार 29 अक्टूबर को रांची से दिन के 3 बजे खुलेगी

स्वीटी वर्मा

मेदिनीनगर। रांची से चलकर नई दिल्ली जाने वाली अमृत कलश यात्रा ट्रेन रविवार को डालटनगंज पहुंचेगी। ट्रेन से 45 भाजपा पदाधिकारी व कार्यकर्ता नई दिल्ली के लिए प्रस्थान करेंगे। डालटनगंज रेलवे स्टेशन के अधीक्षक उमेश कुमार ने बताया की अमृत कलश यात्रा ट्रेन रविवार 29 अक्टूबर को रांची से दिन के 3 बजे खुलेगी। यह ट्रेन डालटनगंज रेलवे स्टेशन पर शाम 6:20 बजे पहुंचेगी। स्टेशन पर इस ट्रेन का ठहराव केवल 2 मिनट का है। अमृत कलश यात्रा ट्रेन में 24 कोच है। यह ट्रेन नई दिल्ली 30 अक्टूबर को पहुंचेगी तथा 31 अक्टूबर की सुबह 6 बजे नई दिल्ली से रांची के लिए रवाना होगी। इसके लिए टिकट काउंटर से टिकट वितरण नहीं किया जाएगा। सामन्य यात्री इस ट्रेन से यात्रा नहीं कर पाएंगे। पलामू जिला भाजपा के अध्यक्ष विजयानंद पाठक ने बताया की अमृत कलश यात्रा में डालटनगंज रेलवे स्टेशन पर जिला के 45 भाजपा कार्यकर्ता व पदाधिकारी दिल्ली के लिए रवाना होंगे। मेरा माटी मेरा देश कार्यक्रम के तहत नई दिल्ली में अमृत कलश उत्सव मनाया जा रहा है। जिसके उपलक्ष्य में अमृत कलश ट्रेन चलाई जा रही है। इससे नई दिल्ली जाने वाले ही वापसी करेंगे।

ट्रक व कार की टक्कर में एक की मौत, दो गंभीर

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। पड़वा थाना क्षेत्र के कजरी में नेशनल हाइवे 75 पर शनिवार की भोर में कार और ट्रक की टक्कर में जहां एक युवक की मौत हो गई। वहीं दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गये। मिली जानकारी के अनुसार हुसैनाबाद में सांस्कृतिक कार्यक्रम देखकर वापस लौट रहे युवकों की कार को कजरी के समीप विपरीत दिशा से आ रहे ट्रक ने अपनी चपेट में ले लिया। हादसे में घायल कार सवारों को मौके पर पहुंची पुलिस ने इलाज के लिए मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पीटल में भर्ती करवाया। जहां विश्वजीत सिंह उर्फ बीनू सिंह को डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। जबकि रंजीत शुक्ला और अजय की गंभीर स्थिति को देख उन्हें रिम्स रेफर कर दिया गया। मृतक विश्वजीत डालटनगंज के हमीदगंज के रहने वाले थे। पड़वा थाना प्रभारी नकुल कुमार शाह ने मौका मुआयना कर वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की।

एमके डीएवी की खुशी बेस्ट कैडेट अवार्ड से सम्मानित

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। 44वीं बटालियन एनसीसी पलामू द्वारा एसपीडी कॉलेज गढ़वा में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर एमके डीएवी पब्लिक स्कूल मेदिनीनगर की खुशी ने बेस्ट कैडेट के अवार्ड पर कब्जा जमाया। एडीजी गढ़वा अमनदीप ने छात्रा को 10 हजार रूपये का नगद पुरस्कार प्रदान किया। 10 दिवसीय शिविर में विद्यालय के 27 छात्र-छात्राओं ने सहभागिता की। इस दौरान नृत्य में दक्ष कुमार व वाद-विवाद में रानी कुमारी ने प्रथम स्थान तथा समूह नृत्य में स्कूल की टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विद्यालय की प्रातः कालीन प्रार्थना सभा में प्रतिभागी छात्र-छात्राओं को सम्मानित करते हुए विद्यालय के प्राचार्य डा. जीएन खान ने उनका उत्साहवर्द्धन किया। उन्होंने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि इस विद्यालय के छात्र पठन-पाठन के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी उत्तम प्रदर्शन कर रहे हैं। एनसीसी छात्रों के अंदर अनुशासन राष्ट्रभक्ति एवं कर्तव्य निष्ठा भरने का काम करती है।आने वाले समय में राष्ट्रभक्ति से ओत प्रोत यह छात्र अनेक क्षेत्रों में अपनी सेवा प्रदान कर देश की उन्नति में अपनी सहभागिता दर्ज करायेंगे। एनसीसी प्रमाण पत्र के आधार पर इन छात्रों को उच्च शिक्षा एवं सेवा क्षेत्र में आरक्षण का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। विद्यालय के अन्य छात्र भी इनसे प्रेरणा लेंगे और इस तरह के कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में भाग लेंगे। कार्यक्रम में मंच संचालन शिक्षिका सुदेशना राय एवं शिप्रा सुमन ने किया। खेल शिक्षक विक्रम राय एवं काजोल सिंह संगीत शिक्षक नीरज कुमार सिन्हा, अनंत पाठक एवं अनुश्री चक्रवर्ती ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

लाखों की लागत वाली सात विकास कार्यों की रखी आधारशिला, ग्रामीणों में हर्ष

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। छतरपुर अनुमंडल के डाली बाजार पंचायत में शुक्रवार को विश्व व्यापी पर्यावरण संरक्षण अभियान के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सात योजनाओं की आधारशिला रखी। पंचायत अंतर्गत पहले फेज में 40 लाख की लागत से कौशल नगर बाजार प्रांगण में 25 लाख की लागत से पंचायत समृद्धि केंद्र भवन का निर्माण कराया जाएगा। जबकि उप स्वास्थ्य केंद्र , बेलटाड नदी पर छठ घाट , न्यू प्राथमिक विद्यालय में चहारदीवारी , डाली बाजार के मध्य विद्यालय में मॉडल किचन शेड , महावीर मंदिर रोड में नाली निर्माण और श्मशान शेड का निर्माण कराया जाएगा। जिला पार्षद अमित ने कहा कि इसके पहले के जनप्रतिनिधि चुनाव जीत कर केवल जश्न मनाते थे। क्षेत्र के विकास पर पहले के जनप्रतिनिधियों ने कोई ध्यान नहीं दिया। जिससे समस्याओं का अंबार लगा हुआ है। सात स्थानों पर शीला न्यास में पहुंचे प्रमुख लोगों में शंभू कुमार मिश्र , उप मुखिया नगीना खातून, पूर्व मुखिया अफजाल अंसारी, जुबेर अंसारी, रामजी प्रसाद, शिक्षक श्रवण जायसवाल, श्याम देव सिंह, शिवप्रसाद यादव, भूषण जायसवाल, कंचन देवी, खुर्शीद अंसारी, चंद्रेश सिंह,शोभा देवी, वार्ड श्याम नारायण सिंह ,रामजन्म यादव, दीनानाथ प्रसाद, विनोद यादव, धर्मदेव यादव, कृष्ण प्रसाद, शिवनाथ राम, रेणु देवी, बिजय सिंह, विशु देव सिंह, सनोज भुईयां ,सुरेंद्र प्रसाद, रविंद्र प्रसाद, लालबाबू प्रसाद, संतोष प्रसाद, सत्यनारायण सिंह, राजेश प्रसाद, मदन यादव, प्रमोद जायसवाल, दामोदर प्रसाद, सत्यदेव प्रसाद, बृजमोहन सिंह, नरेश सिंह, बाल गोविंद सिंह, मुन्तजिर अंसारी समेत कई कार्यकर्ता मौजूद थे।

मारपीट में अलग-अलग जगहों पर आधा दर्जन गंभीर

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। जिले के दो अलग-अलग स्थानों पर हुई मारपीट की घटना में आधा दर्जन लोग गंभीर रूप से घायल हो गये। पड़वा थाना क्षेत्र के मानहा गांव में जमीनी विवाद को लेकर शुक्रवार को हुई मारपीट में गोरिया परिवार के पांच व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गए। घायल लक्ष्मी देवी ने बताया कि शुक्रवार को उनके गोतिया आदित्य साव से उनके ससुर शिवनारायण साव और सास प्रेमन देवी का जमीनी विवाद को लेकर झगड़ा हो गया। इस बीच आदित्य साव, बेटा प्रफुल कुमार, पंचम कुमार,कुसमी देवी घर पर पहुंच कर लाठी डंडे से हमला बोल दिया। हमले में ससुर के अलावा उनकी सास प्रेमन देवी, पति महावीर गुप्ता, देवर सनिश कुमार घायल हो गये। मौके पर पहुंची पुलिस ने सभी घायलों को इलाज के लिए मेदिनीनगर सदर अस्पताल भेज दिया है। जहां इलाज के बाद भी प्रेमन देवी की गंभीर स्थिति बनी हुई है। पुलिस घटना से संबंधित मामले की छानबीन में जुट गई है। एक अन्य घटना में शहर थाना क्षेत्र के पहाड़ी मोहल्ला मुस्लिम नगर निवासी अब्दुल खान के पुत्र जायरान खान को अज्ञात लोगों ने शुक्रवार की शाम हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। मौके पर पहुंचे टीओपी 1 प्रभारी रेवा शंकर राणा ने घायल को इलाज के लिए मेदिनीनगर सदर अस्पताल पहुंचाया। परिजनों ने बताया कि हमलावरों के पास लाठी-डंडा के साथ तलवार भी था। पुलिस हमलावरों की तलाश में जुट गई है।

धार्मिक कार्यक्रम को चुनावी रैली समझते हैं भाजपाई : राजेंद्र

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर । झामुमो के पलामू जिलाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद सिन्हा ने भाजपा पर हमला बोलते हुए कहा है कि बाबूलाल मरांडी की संकल्प यात्रा फेल होने के बाद भाजपा के नेता घबराए हुए हैं और तरह तरह के प्रपंच करने लगे हैं। साथ ही झामुमो जिलाध्यक्ष ने पांकी विधायक शशि भूषण मेहता को भी आड़े हाथों लेते हुए कहा कि धार्मिक आयोजन में चुनावी भाषण देते हुए आम जनमानस में आपसी वैमनस्य स्थापित करने के लिए भड़काऊ भाषण देना जातिवादी विधायक को शोभा नहीं देता। उन्होंने कहा है कि हत्या और भ्रष्टाचार का आरोपित व्यक्ति ही समाज को तोड़ने का षड्यंत्र कर सकता है। पलामू की गंगा जमुनी तहजीब को बिगाड़ने की कोशिश पहले भी नाकाम हुई है, ऐसे लोगों का जनता बोरिया बिस्तर समेट देती है। जिलाध्यक्ष ने कहा कि भाजपाई हेमंत सोरेन की लोकप्रियता से डर चुके हैं। जिस तरीके से विकास हर व्यक्ति तक पहुंच रहा है, इन्हें दिन रात हार के सपने अभी से ही आने लगे हैं। जल्द ही सरकार आपके द्वार का तीसरा चरण भी स्टार्ट होने वाला है। सरकार के पदाधिकारी गरीब जनता के द्वार पर जा कर योजनाओं का लाभ देंगे।झामुमो के सभी नेता और कार्यकर्ता आम जनता की मदद के लिए कमर कस चुके हैं।

आस्था

श्रीमद्भागवत कथा आयोजन समिति ने पत्रकारों को किया सम्मानित

कथावाचक देवकीनंदन ठाकुर 21 नवम्बर को 9 बजे पहुंचेंगे पलामू

यज्ञ स्थल से बाहर चंदा नहीं करेगी समिति : अर्जुन पाण्डेय

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। शहर के हाउसिंग कॉलोनी में 21से 28नवम्बर तक आयोजित होने वाले श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ सह श्रीमद्भागवत कथा के आयोजन समिति के मुख्य संरक्षक अर्जुन पाण्डेय उर्फ गुरु पाण्डेय ने शनिवार कि यज्ञ स्थल पर आयोजित एक कार्यक्रम बोलते कहा कि इस पवित्र भगवत कार्य में समिति को सेवा व सहयोग देने वाले श्रद्धालू यज्ञ स्थल पर ही अपना सहयोग करेंगे। यज्ञ स्थल से बाहर यज्ञ समिति ना तो चंदा करेगी ना ही कोई धन का सहयोग लिया जायेगा । इस दौरान मुख्य संरक्षक श्री पाण्डेय के निर्देशन में पत्रकारों को सम्मानित किया गया। इस दौरान उन्होंने बताया कि इस महायज्ञ का शुभारंभ 21 नवंबर को कलशयात्रा सह शोभायात्रा से होगा। बनारस से हैलिकॉप्टर से कथावाचक देवकीनंदन ठाकुर महाराज 9 बजे पलामू पहुंचेंगे। जिसके बाद हजारों श्रद्धालुओं के साथ यज्ञ स्थल से कलश यात्रा कोयल नदी के लिए निकलेगी। इसके उपरांत 22 से 28 नवंबर तक कथा प्रवचन का कार्यक्रम संध्या 3 बजे से 6 बजे तक चलेगा । यज्ञ पूजन एवं आहूति का कार्य यज्ञाचार्य ब्रह्मचारी उदितानंद महाराज के निर्देशानुसार सुबह 7 बजे से दोपहर एक बजे तक संपन्न होगा। मौके पर यज्ञ मंडप, कथा पंडाल, मेला, पार्किंग एवं सुरक्षा से संबंधित जानकारी दी गई। मौके पर समिति के संरक्षक कृष्णकांत चौबे(मुखिया), मनु प्रसाद तिवारी, बलराम पाण्डेय, प्रवीण सिंह, नवीन तिवारी, अध्यक्ष देवेंद्र तिवारी, महासचिव शैलेश दूबे, कोषाध्यक्ष राकेश पाण्डेय, सुनील पाण्डेय, विकास दूबे उपाध्यक्ष शैलेश तिवारी,मुरारी पाण्डेय, बृजेश शुक्ला, रवि शर्मा, गोरख पाठक, संजय मिश्रा, चंदन तिवारी, कुलबुल दुबे, जिला पार्षद राम लव चौरसिया ,मनीष भिवानिया, मुरारी पांडेय, ज्ञानेश तिवारी, आनंद प्रकाश दुबे, विशाल पांडेय, मनीष तिवारी, विक्रांत त्रिपाठी, संजय पांडेय, संजय कुमार, सौरभ दुबे, शुभम दुबे महिला विंग प्रभारी मीना गुप्ता, श्वेता तिवारी, रानी शर्मा, माया मिश्रा समेत महायज्ञ समिति के अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे। इस यज्ञ के मुख्य यजमान अर्जुन पाण्डेय उर्फ गुरु पाण्डेय एवं उनकी अर्धांगिनी उषा पाण्डेय होंगे। शनिवार के कार्यक्रम का नेतृत्व समिति के मीडिया प्रभारी अवधेश शुक्ला एवं अजीत पाठक तथा संचालन प्रवक्ता आशुतोष पाण्डेय लक्की ने किया।

पांकी विधायक की सदस्यता समाप्त करें : कमाल खान

मेदिनीनगर। पांकी विधायक शशि भूषण मेहता ने एक विशेष समुदाय पर टिप्पणी कर विधायक की पवित्रता को खो दिया है। पलामू जिला गंगा जमुनी तहजीब की मिसाल है। शशि भूषण मेहता लगातार पांकी को अपनी गंदी राजनीति का शिकार बनाना चाहते हैं । उक्त बातें झामुमो के जिला उपाध्यक्ष कमल खान ने बयान जारी कर कही है। उन्होंने कहा है कि पांकी की जनता और प्रशासन पांकी विधायक की गंदी मानसिकता को समझ चुकी है। प्रशासन की इनके ऊपर पैनी नजर है।इनकी गंदी मानसिकता को प्रशासन कुचलने का काम करती आ रही है और करती रहेगी। जनाब कमल खान ने झारखण्ड के विधानसभा अध्यक्ष से शशि भूषण मेहता जैसी गंदी मानसिकता वाले विधायक की सदस्यता खत्म करने का अनुरोध किया है। कहा है कि ऐसी मानसिकता वाले विधायक पांकी ही नहीं पूरे राज्य के लिए विकास में बाधक तो है ही साथ ही साथ अमन चैन व शांति के लिए भी बाधक हैं ।

विहंगम योग संस्थान का रक्तदान शिविर आयोजित

नवीन मेल संवाददाता

मेदिनीनगर। विहंगम योग संस्थान के स्वर्वेद कथामृत के प्रवर्तक संत प्रवर विज्ञान देव महाराज का पावन जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर भक्तजनों ने उत्साहपूर्वक रक्तदान किया। शनिवार को मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज अस्पताल के ब्लड बैंक में संस्थान के द्वारा मेगा रक्तदान शिविर लगाया गया। मुख्य अतिथि सिविल सर्जन डॉ अनिल कुमार ने सदगुरुदेव के तस्वीर पर माल्यार्पण कर रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया। उन्होंने रक्तदाताओं का उत्साह बढ़ाते हुए रक्तदान के महत्व एवं उससे होने वाले लाभ के बारे में बताया। शिविर में धीरेंद्र शर्मा, सोनल, मनोज ठाकुर, योगमाया तिवारी, शुभम पांडेय, प्रमोद तिवारी, केशव पांडेय, चंदन तिवारी, शंभू, प्रीति, विवेक, अभिषेक, चंदन सिंह, प्रभाकर, उषा सिंह, अनिता, अजीत मेहता, रमेशचंद्र रवि, मधुबाला, रौशन दूबे सहित अन्य भक्तजनों ने रक्तदान किया। इसे सफल बनाने में संस्थान के रविंद्र श्रीवास्तव, जिला सह संयोजक बनारसी यादव, राकेश पाठक, भानु प्रताप देव, विशुनदेव मेहता, दशरथ पासवान, सत्यम सहित कई लोग सक्रिय थे।

'जो इंद्रियों पर राज करेगा वही दुनिया पर भी राज करेगा'

नवीन मेल संवाददाता। श्री बंशीधर नगर

पाल्हे-जतपुरा में चल रहे श्री लक्ष्मी नारायण महायज्ञ के अवसर पर श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण की कथा करते हुये अयोध्या से पधारे जगद्गुरु रत्नेशप्रपन्नाचार्य कहा कि जो अपने पर राज नहीं कर सकता वो दूसरे पर क्या राज करेगा। पहले अपने इंद्रियों पर राज जो करेगा वही दुनिया पर राज कर सकता है। रामराज्य की भूमिका त्याग और साधना से शुरू होती है। श्रीराम साधक बनकर, तपस्वी बनकर वन को गये। जीवन में जबतक हम तप को, श्रम को, त्याग को नहीं अपनायेंगे तब तक श्रेष्ठ जीवन की कल्पना नहीं हो सकती। श्रीराम के साथ माता सीता भी वन को गयी। माता सीता ने कहा कि पत्नी का अधिकार यदि पति के सुख में है तो दुख में भी होना चाहिये। हमें आगे बढ़कर एक दूसरे की विपत्ति का सहायक बनना चाहिये। हम हर किसी सुख में हिस्सेदारी तो चाहते हैं पर दुख में साथ छोड़ देते है। हमें अपने देश की विपत्ति में देश के साथ खड़ा होना चाहिये। रामायण की कथा हमें ये शिक्षा देती है। धर्म हमें स्वार्थ नहीं त्याग सिखाता है। भगवान श्रीराम के अवतरण के पूर्व भी राज्य तंत्र था और राजा प्रजापालन भी करते थे, किंतु वे प्रजा की उनके किसी कार्य की क्या प्रतिक्रिया होगी, इसका कदाचित ही चिंतन करते थे। भगवान श्रीराम ने प्रजा की इच्छानुकूल राज्य व्यवस्था की थी। वनगमन के समय जब अनुज लक्ष्मणजी साथ चलने का आग्रह करने लगे, तब प्रजातंत्र का अनन्यतम सूत्र प्रकट करते हुए प्रभु श्रीराम कहते हैं - हे भाई! तुम यहीं अयोध्या में रहो और सबका परितोष करो, अन्यथा बहुत दोष लगेगा। जिसके राज्य में प्यारी प्रजा दुःखी रहती है, वह राजा अवश्य ही नरक का अधिकारी होता है। ऐसी नृप नीति होने के कारण ही उनके राज्य में सभी सुखी रहते थे।

कहा कि भगवान श्रीराम त्रेतायुग के युगपुरुष थे। सतयुग में धर्म चारों पैरों पर स्थिर रहता है, तो त्रेता में मात्र तीन पदों पर, किंतु तत्समय उनके रामराज्य में ऐसा विलक्षण काल आया, जो सतयुग से भी गुरुतर हो गया। निषादराज तथाकथित निम्न जाति के होने पर भी मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने उनके साथ जो सखा धर्म निभाया, यही प्रजातंत्र का भी मूल ध्येय है। प्रभु श्रीराम उनको कहते हैं- हे प्रिय मित्र! तुम भरत तुल्य मेरे भ्राता हो। अयोध्या में आते-जाते रहना। श्रीराम के गुणों से माता कैकेयी भी अभिभूत थीं। दासी मंथरा ने मां को उकसाने की बहुत चेष्टा की, किंतु माता कैकेयी ने श्रीराम के बारे में जो कहा वह अविस्मरणीय रहेगा। 'राम धर्म के ज्ञाता, गुणवान, जितेंद्रिय, कृतज्ञ, सत्यवादी और पवित्र होने के साथ-साथ महाराज के ज्येष्ठ पुत्र हैं, अतः युवराज होने के योग्य वे ही हैं। वे दीर्घजीवी होकर अपने भ्राताओं और भृत्यों का पिता के सदृश पालन करेंगे। उनके अभिषेक से तू इतना क्यों जल-भुन रही है? मेरे लिए तो जैसी भरत के लिए मान्यता है, वैसी ही बल्कि उससे भी अधिक राम के लिए है, क्योंकि वे कौशल्या से भी बढ़कर मेरी सेवा-सुश्रूषा करते हैं...।' कथावाचकों में प्रमुख रूप से जगद्गुरु अयोध्यानाथ, मारुति किंकर, वैकुंठ नाथ, मुक्तिनाथ, चतुभुर्जाचार्य आदि ने भी प्रवचन किया।

'छल-छद्म, पाखंड से बड़ा आदमी बनने वाला बहुत दिनों तक टिक नहीं पाता'

नवीन मेल संवाददाता। श्री बंशीधर नगर

श्री बंशीधर नगर प्रखंड के पाल्हे जतपुरा गांव में शनिवार को श्री लक्ष्मी नारायण महायज्ञ के समापन के अवसर पर भागवत कथा के दौरान लक्ष्मी प्रपन्न जीयर स्वामी महाराज ने कहा कि परमात्मा ही सारे अवतारों के कर्ता हैं। जब-जब पृथ्वी पर उनकी आवश्यकता होती है तब तब अवतरित होते हैं। महाप्रलय के समय एकमात्र परमात्मा ही धरती पर विराजमान रहते हैं। परमात्मा वस्तुतः अवतार नहीं अवतारी हैं। समस्त अवतार परमात्मा (नारायण) से ही निःसृत होते हैं। सभी अवतार परमात्मा के ही रूप हैं। वह परमात्मा से अभिन्न हैं। सूत-शौनक संवाद की चर्चा करते हुए कहा कि धान का एक बीज बोने से सैकड़ो दाने आ जाते हैं। बीज रूप में बोया गया धान का मूल अलग है और उससे प्राप्त दान का स्वरूप अलग है। इस तरह परमात्मा मूल से ही अनेक रूपों में अवतार लेते हैं। परमात्मा के अनेक अवतारों को आश्चर्य नहीं मानना चाहिए। स्वामी ने कहा कि परमात्मा के अनंत अवतार हैं। इनमें 1000 विशेष हैं। उनमें 108 प्रसिद्ध हैं, जिनमें 24 अवतार प्रमुख हैं, इनमें से चार अवतारों की विशेष प्रसिद्ध है। इन चार अवतारों में भी दो बहु चर्चित हैं। इनमें से भी एक अवतार को सर्वाधिक प्रमुख माना गया है, जो कृष्णावतार हैं।

स्वामी जी ने कहा कि चारों युगों की अवधि अलग-अलग है। कलयुग का काल 4,32,000 वर्ष, द्वापर का 8,64,000 वर्ष, त्रेता का 12,96,000 वर्ष और सतयुग का 17,28,000 वर्ष है। स्वामी ने कहा कि छल-छद्म और पाखंड से बड़ा आदमी बनने वाला बहुत दिनों तक टिक नहीं पाता। क्योंकि उसकी बुनियाद कमजोर होती है। वह हमेशा निडर होने का दिखावा करता है, लेकिन भीतर से काफी कमजोर होता है।

गागर में सागर

भवनाथपुर बीडीओ को मिला केतार प्रखंड विकास पदाधिकारी का प्रभार

केतार। उपायुक्त शेखर जमुवार ने भवनाथपुर के प्रखंड विकास पदाधिकारी नंद जी राम को केतार बीडीओ का अतिरिक्त प्रभार सौंपा है। उपायुक्त ने भवनाथपुर बीडीओ को केतार बीडीओ के साथ- साथ, अंचलाधिकारी केतार, प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी, बाल विकास परियोजना पदाधिकारी केतार का भी प्रभार सौंपा है। उल्लेखनीय है कि केतार प्रखंड के बीडीओ मुकेश मछुआ की पदस्थापना अनुमंडल पदाधिकारी जगन्नाथपुर (पश्चिम सिंहभूम) के पद पर होने के कारण केतार में बीडीओ का पद रिक्त हो गया था। इससे भूमि संबंधी कार्य और प्रखंड में संचालित विकास योजनाएं प्रभावित हो रही थीं।

रमना उपडाकघर सुविधायुक्त गुलरही बांध के पास नये भवन में स्थानांतरित

रमना। उपडाकघर रमना अपने पुराने भवन से स्थानंतरित होकर गुलरही बांध के पास स्थित वीरेंदर प्रसाद के भवन में संचालित हो रहा है। इस बात की जानकारी देते हुए उपडाकपाल रामु कुमार गुप्ता ने बताया कि भारतीय स्टेट बैंक के बगल वाली गली अमवाटीकर में संचालित उपडाकघर भवन काफी छोटा था, जिसमें डाककर्मी और उपभोक्ताओं के लिए स्थान नहीं था। कमरे में डाक का सामान और कर्मियों के बैठने के लिए जगह पर्याप्त नहीं थी। इससे कार्य करने में कठिनाई होती थी। नये भवन में उपडाकघर स्थानांतरित होने से सभी कर्मियों के लिए अलग-अलग काउंटर हो गया है, जिससे ग्राहकों को किसी भी प्रकार की कोई समस्या नहीं होगी। 25 वर्ष बाद सुव्यवस्थित भवन मिलने से एक अलग ही ऊर्जा की अनुभूति है।

नौ दिवसीय रामलीला का हुआ शुभारंभ

चिनिया। प्रखंड मुख्यालय क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत रणपुरा में दशहरा पर्व शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हो जाने के बाद बाहर से बुलाए गए कलाकारों द्वारा 9 दिवसीय भव्य रामलीला कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इसका शुभारंभ शुक्रवार की देर शाम पंचायत के कई गणमान्य लोग व जनप्रतिनिधियों द्वारा किया गया। मौके पर मौजूद झामुमो पंचायत अध्यक्ष विभूति नारायण सिंह ने भगवान श्री राम के चरित्र पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें रामचरित्र मानस के पात्र और चरित्र को अपने जीवन में उतारना होगा, तभी हमारा जीवन सफल हो सकता है। भगवान राम आज्ञाकारी बेटे, मां सीता पतिव्रता पत्नी, लक्ष्मण, शत्रुघ्न, भरत एक आज्ञाकारी भाई होने का संदेश देते हैं। मौके पर पंचायत समिति सदस्य प्रतिनिधि सुगनी देवी, दयानंद राम, मधुसूदन सिंह, रमेश प्रसाद आदि मौजूद थे।

कुल 30 लाख से अधिक श्रद्धालुओं का विशाल समूह पहुंचा यज्ञ स्थल, अंतिम दिन घी व खीर की आहुति

ऐतिहासिक लक्ष्मीनारायण महायज्ञ का समापन

नवीन मेल संवाददाता। श्री बंशीधर नगर

प्रखंड के पाल्हे-जतपुरा में आयोजित ऐतिहासिक लक्ष्मीनारायण महायज्ञ का समापन शनिवार को हो गया। विगत 23 अक्टूबर को भव्य कलश यात्र के साथ शुरू हुए महायज्ञ में 30 लाख से अधिक श्रद्धालु शामिल हुये। शनिवार को घी और खीर की आहुति दी गयी, जिसके पश्चात यज्ञ संपन्न हो गया। यज्ञ महान संत जीयर स्वामी महाराज के सानिध्य में आयोजित हुआ था। उधर, अंतिम दिन यज्ञ मंडप की परिक्रमा करने के लिए श्रद्धालुओं का विशाल समूह यज्ञ स्थल पहुंचा और जीयर स्वामी का आशीर्वाद प्राप्त किया। श्रद्धालुओं ने बताया कि श्री बंशीधर नगर की पवित्र भूमि पर इस तरह का आयोजन अपने आप एक अलौकिक अनुभूति देने वाला रहा। एक साथ देशभर के साधु-संतों का दर्शन बहुत ही सौभाग्य की बात है। यज्ञ के अंतिम दिन यज्ञ में शामिल होने देश के हर क्षेत्र से लोग पहुंचे थे। अहले सुबह से ही बड़ी संख्या में महिला-पुरुषों की भीड़ परिक्रमा करने उमड़ पड़ी थी। व्यवस्था बनाये रखने में वोलेंटियर और पुलिस बल के जवानों को काफी मशक्कत करनी पड़ी। पार्किंग के लिए बनाए गये शहर के सभी एरिया गाड़ियों से पटा था। भवनाथपुर मोड से ही श्रद्धालुओं का तांता यज्ञ स्थल तक लगा था। पुलिस द्वारा जगह-जगह बैरिकेटिंग कर गाड़ियों को सही जगह लगाने के लिए निर्देशित किया जा रहा था।

संगीत संध्या में भोजपुरी कलाकारों ने दी प्रस्तुति

यज्ञ स्थल पर शुक्रवार की शाम धर्म सम्मेलन के बाद भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजन संध्या में भोजपुरी के दिग्गज कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति से उपस्थित जनसमूह को मंत्रमुग्ध कर दिया। भोजपुरी के दिग्गज कलाकार भरत शर्मा व्यास, रितेश पांडेय, अंकुश राजा और गोपाल राय ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति से लोगों को झूमने पर मजबूर किया। भरत शर्मा व्यास ने मोह माया छोड़ के अपन जीयर स्वामी जी होईल त्रिदंडी स्वामी के चेला के साथ कई भजन प्रस्तुत किये। अंकुश राजा ने सत्य सनातन धर्म के रक्षक कलयुग के भगवान जीयर स्वामी के साथ भगवान राम के जीवन चरित्र पर आधारित भजन गाया। गोपाल राय ने नाई देखली देवी देवता, नाहीं कोई भगवान, हो रउरे में देखली जीयर स्वामी जी श्याम हो के अलावे कवने विरिक्षिया के ए चिरई, खोतवा लगैलु गाकर दर्शकों को खूब झुमाया। रितेश पांडेय ने जगतगुरु जीयर स्वामी जी नाम अमृत का प्याला है, जीयर स्वामी जी की महिमा सुनो के अलावे कई भजन प्रस्तुत किया। भोजपुरी के इन दिग्गज कलाकारों को एक साथ देखने सुनने के लिए लोगों की भारी भीड़ देर रात तक पंडाल में जमी रही।

जो हमें अच्छी बात सिखाए वही सनातन धर्म है : जीयर स्वामी

अंतरराष्ट्रीय धर्म सम्मेलन : रामानुजीय परंपरा का सिद्धांत प्रत्येक मानव के लिए अनुकरणीय : स्वामी हरिप्रकाश

नवीन मेल संवाददाता। श्री बंशीधर नगर

प्रखंड के पाल्हे जतपुरा ग्राम में जीयर स्वामी महाराज की ओर से कराए जा रहे श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ के चौथे दिन यज्ञ स्थल पर अंतरराष्ट्रीय धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें देश के महान धमार्चार्य उपस्थित रहे। धर्म सम्मेलन में जीयर स्वामी ने कहा कि श्रीरामानुजार्य स्वामी की सहस्त्राब्दी स्मृति महोत्सव के उपलक्ष्य में यह धर्म सम्मेलन आयोजित किया गया है। उन्होंने कहा कि जो हमें अच्छी बात सिखाये वो सनातन धर्म है। सनातन धर्म हमें जीवन को उदात्त बनाने की हर बात सिखाता है। हम श्रेष्ठ मनुष्य बनकर आत्म कल्याण व समाज का कल्याण कर सके उसी के लिये ये धर्मायोजन है।

इससे पहले तमिलनाडु के कांची से पधारे स्वामी श्रीश्रीनिवासाचार्य श्रीगादी स्वामी ने दीप प्रज्वलन कर धर्म सम्मेलन का शुभारंभ किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि श्रीरामानुजाचार्य स्वामी भक्ति आंदोलन के श्रेष्ठ आचार्य हुये, जिन्होंने विशिष्टाद्वैत जैसा सिद्धांत मानव मात्र के कल्याण के लिये बताया। मानव मात्र ईश्वर को प्राप्त करने का अधिकारी है। मानव-मानव में कोई भेद नहीं है। सब ईश्वर की संतान हैं और हर कोई ईश्वर को पाने का अधिकारी है। ईश्वर को पाने का सबसे सरल मार्ग भक्ति मार्ग है और उसी का प्रचार प्रसार जीयर स्वामी कर रहे हैं। तमिलनाडु से ही पधारे स्वामी अनंताचार्य बालक स्वामी ने कहा कि सेवा को अपनाकर सहज ही मोक्ष का भाजन हुआ जा सकता है। स्वामी हरिप्रकाश जी महाराज ने कहा कि सनातन धर्म के बिना शांति नहीं मिलती, प्रेम और भक्ति की बात सनातन धर्म ने सिखाया है। रामानुजीय परंपरा का सिद्धांत प्रत्येक मानव के लिए अनुकरणीय है। स्वामी स्वरूपदास महाराज ने कहा कि सनातन धर्म के संपोषक रामानुज ने जो प्रपत्ति का मार्ग बताया वो ईश्वर को पाने का सबसे सरलतम मार्ग है।

'जिसे हम धारण करते हैं उसे ही धर्म कहते हैं'

वहीं इस्कॉन मंदिर कोलकाता से आये श्रीसुभग बलरामदास ने कहा कि श्रीसंप्रदाय में जो सेवा भाव है वो हर किसी को सीखना चाहिये। भक्तजन सेवा मात्र अपना कर के ईश्वर के प्रिय हो सकते हैं। अयोध्या से आये जगद्गुरु रामानुजार्य रत्नेश प्रपन्नाचार्य ने कहा कि जिसे हम धारण करते हैं वो धर्म है। जैसे- जल से शीतलता को, अग्नि से उष्णता को, कोई अलग नहीं कर सकता वैसे भारत से कोई सनातन धर्म को अलग नहीं कर सकता। काशी से आये जगद्गुरु रामानुजाचार्य डॉ पुण्डरीक शास्त्री ने कहा कि विशिष्टाद्वैत संप्रदाय के सिद्धांत को प्रत्येक मानव को आत्मसात करना चाहिये। काशी से आये जगद्गुरु मारुति किंकर महाराज ने कहा कि भारत का अर्थ है, जहां के लोग ब्रह्म विद्या में रत रहते हों। भारत से धर्म को निकाल दिया जाये तो भारत प्राण रहित हो जायेगा। सोनपुर, बिहार से पधारे जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी लक्ष्मणाचार्य ने कहा कि धर्म की रक्षा यदि हम करते हैं तो धर्म हमारी रक्षा करता है। धर्म न हो तो हम पशुतुल्य हो जायेंगे। अयोध्या से पधारे जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी श्याम नारायणाचार्य ने कहा कि मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव जैसे उपदेशों को जीवन में अपनाना आवश्यक है। धर्म हमें संस्कार सिखाता है। अयोध्या से पधारे जगद्गुरु सूर्यनारायणाचार्य महाराज ने कहा कि समाज धर्म के बिना अनियंत्रित हो जाता है। धर्म जीवन को अनुशासित करता है। इसलिये धर्म संसद का आयोजन हमेशा होते रहना चाहिये।

मध्यप्रदेश से शशिधराचार्य ने कहा की मानव धर्म ही सनातन धर्म है। हर जीव वैष्णव है क्योंकि हर कोई विष्णु का है। पूर्व डीजीपी बिहार जगद्गुरु रामानुजाचार्य गुप्तेश्वर पांडेय ने कहा कि आज दुनिया में हर जगह लड़ाई चल रही है। कहीं क्षेत्र को लेकर, कहीं धर्म को लेकर, कहीं मानव के किसी भेद को लेकर। सनातन धर्म हमें प्रेम सिखाता है। दुनिया यदि सनातन धर्म अपना लें तो दुनिया में शांति हो जायेगी। धर्म सम्मेलन में मुंबई से पधारे स्वामी नारायण संप्रदाय से भक्ति प्रकाश दास, कच्छ गुजरात से सत्य प्रकाश दास, जगतगुरु स्वामी श्रीअयोध्यानाथ, श्रीवैकुंठनाथ, श्रीचतुभुर्जाचार्य, श्रीमुक्तिनाथ, आरा से गिरिधर शास्त्री, श्रीउद्धव स्वामी, उदय नारायणाचार्य, वीरराघव महाराज, योगाचार्य, ब्रह्मदेवाचार्य, बलिया से कौशिक, वाराणसी से शिवपूजन शास्त्री, श्रीरामचंद्र बालव्यास, जगदीश तिवारी, शम्भू महाराज, भोजपुरिया बाबा ने भी धर्म सम्मेलन को संबोधित किया।

बैठक : डीसी ने विभागों के कार्यों की समीक्षा करते हुए दिए निर्देश

लैंड पोजेशन सर्टिफिकेट ससमय करें निर्गत

नवीन मेल संवाददाता। गढ़वा

उपायुक्त शेखर जमुआर ने भू अर्जन, राजस्व, आपूर्ति समेत अन्य विभाग से संबंधित कार्यों को लेकर समीक्षा बैठक किया। बैठक में उपायुक्त ने भू अर्जन की समीक्षा करते हुए एनएच 75 को लेकर अधिग्रहित सेक्शन 4 एवं 5 में हुए मुआवजा भुगतान की जानकारी लिया।

जिला भू अर्जन पदाधिकारी ने बताया कि उक्त सेक्शन में मुआवजा भुगतान का कार्य जारी है। उपायुक्त ने सभी अंचल अधिकारी को लैंड पोजेशन सर्टिफिकेट समय पर निर्गत करने का निर्देश दिया गया। उपायुक्त ने अनिवार्य रूप से अंचल के कर्मचारी एवं अमीन को स्पॉट पर जाकर एलपीसी निर्गत करने संबंधित कार्य करने का निर्देश दिया। वहीं पेंडिंग जीएम लैंड जो ठलअक को हस्तांतरित करना है, इस संबंध में गढ़वा, मेराल, रमना एवं नगर उंटारी अंचल को निर्देशित किया गया। राजस्व की समीक्षा करते हुए उपायुक्त ने दाखिल खारिज के 30 एवं 90 दिनों से अधिक के लंबित मामलों की समीक्षा किया। उपायुक्त ने रमुना, भवनाथपुर, गढ़वा, भंडरिया समेत अन्य अंचलों में 30 एवं 90 दिनों से अधिक लंबित मामलों के निष्पादन का निर्देश दिया गया। उपायुक्त ने कहा कि किसी भी परिस्थिति में आवेदन को लंबित न रखे एवं निर्धारित समयसीमा के अंदर आवेदनों का निष्पादन करें। उपायुक्त ने जन्म एवं मृत्यु प्रमाणपत्र निर्गत करने को लेकर पंचायत स्तर पर व्यवस्था करने का निर्देश दिया। लैंड डेमोक्रेशन, वन पट्टा से जुड़े मामलों पर भी समीक्षा करते हुए उपायुक्त ने आवश्यक निर्देश दिए। जला आपूर्ति पदाधिकारी द्वारा जिले में राशन उठाव की वर्तमान स्थिति पूछी गई। शिकायतों पर कार्रवाई एवं निष्पादन से संबंधित प्रतिवेदन की जानकारी ली गई। शिकायतों के त्वरित निष्पादन हेतु संबंधित प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी को जन वितरण प्रणाली दुकानदारों के साथ बैठक करने का निर्देश दिया गया।

सीआईएसएफ में कार्यरत रुस्तम हवारी का निधन

रमना। पत्रकार सोहराब हवारी के पिता व सीआईएसएफ बीजापुर (सोनभद्र) में सीटीडब्ल्यूएम के पद पर कार्यरत रुस्तम हवारी (बैठा) का शुक्रवार को देर शाम बीजपुर औद्यौगिक परिसर स्थित बैरक में हृदयघात से निधन हो गया। शनिवार को उनका अंतिम संस्कार किया गया। रुस्तम शुक्रवार की रात्रि अपने बैरक में आराम कर रहे थे कि अचानक सीने में दर्द की शिकायत पर साथी जवानों द्वारा इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। रुस्तम के निधन पर झामुमो नेता ताहिर अंसारी, मुखिया दुलारी देवी, भाजपा मंडल अध्यक्ष बलजीत सोनी, सांसद प्रतिनिधि प्रभात आदि ने संवेदना व्यक्त की।

चिनिया : वोटर लिस्ट का हुआ प्रकाशन

नवीन मेल संवाददाता। चिनिया

प्रखंड कार्यालय परिसर में स्विप कार्यक्रम के तहत मतदाता सूची का प्रकाशन किया गया। मौके पर उपस्थित प्रखंड विकास पदाधिकारी कालिदास मुंडा ने बताया कि प्रखंड के सभी मतदान केदों पर नए मतदाता सूची का प्रकाशन किया जा रहा है। अगर इस मतदाता सूची में किसी मतदाता का नाम, पता, फोटोग्राफ गलत है, या किसी अन्य तरह की गड़बड़ियां हैं तो वह इसकी सूचना अविलंब अपने मतदान केंद्र के बीएलओ को देकर इसे सुधरवा ले।

इसके साथ ही मतदाता वोटर हेल्पलाइन और एनवी एसपी पोर्टल पर जाकर ऑनलाइन अपने त्रुटियों में सुधार कर सकते हैं। इस दौरान सुपरवाइजर व क्षेत्र के सभी बीएलओ का हौसला बढ़ाते हुए प्रखंड विकास पदाधिकारी ने कहा कि मतदाता पुनरीक्षण कार्यक्रम की सफलता का सारा श्रेय बीएलओ एवं सुपरवाइजर को जाता है। इन्होंने डोर टू जाकर मतदाता पुनरीक्षण कार्य किया। साथ ही उन्होंने क्षेत्र के लोगों से अपील करते हुए कहा कि मतदाता सूची में नाम जोड़ने, नाम हटाने एवं शुद्धिकरण के लिए यह कार्यक्रम दिसंबर महीने की 9 तारीख तक चलेंगे, जिनका नाम मतदाता सूची से छूट गया है वह अपने नजदीक के बीएलओ के पास जाकर अपना नाम जुड़वा सकते हैं।

मौके पर ईएलसी मास्टर ट्रेनर कमलेश कोरवा, बीएलओ सुपरवाइजर अनिकेश कुमार, प्रमुख सुनैना देवी, प्रखंड अंचल कर्मी ब्लॉक कर्मी मौजूद थे।

गागर में सागर

मतदाता सूची का पुनरीक्षण अभियान शुरू

महुआडांड़। प्रखंड में शनिवार को मतदाता सूची का पुनरीक्षण अभियान शुरू हो गया। यह कार्यक्रम 9 दिसंबर तक चलाया जाएगा। निबंधन निर्वाचन पदाधिकारी सह अनुमंडल पदाधिकारी विपिन कुमार दुबे ने मतदाता सूची विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम का व्यापक प्रचार-प्रसार एवं बीएलओ का उत्साहवर्धन करने के लिए मनिका विधानसभा क्षेत्र के अनेक मतदान केंद्रों का विजिट कर बीएलओ संग सेल्फी ली तथा उनका उत्साहवर्धन किया। अनुमंडल पदाधिकारी ने बीएलओ के कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें बधाई दी।

मनोहर गंझु के घर पर चिपकाया इश्तेहार

बालूमाथ। थाना क्षेत्र के टेमराबर निवासी मनोहर गंझू उर्फ किसमिश उर्फ दिनेश गंझू, पिता वृहस्पत गंझू के घर न्यायालय का इश्तेहार तमिला किया गया है। बालूमाथ थाना प्रभारी धर्मेंद्र कुमार महतो से मिली जानकारी के अनुसार मनोहर गंझु, जो कुंदा थाना कांड संख्या 30/2021 में प्राथमिकी अभियुक्त है, सके बालूमाथ टेमराबर स्थित घर पर आसपास के ग्रामीण एवं परिजनों को जानकारी देते हुए विधिवत इश्तेहार चिपकाया गया है। इस दौरान कुंदा थाना एसआई मोतीराम देवगन के अलावे बालूमाथ थाना से सअनी जेम्स कुजूर मौजूद रहे।

आमसभा में हुआ बाल संसद का गठन

बारियातु। प्रखंड मुख्यालय स्थित राजकीय प्लस टू उच्च विद्यालय में शुक्रवार को प्राचार्य श्रवण मिश्रा की अध्यक्षता में बच्चों एवं शिक्षकों की आमसभा का आयोजन कर विद्यालय स्तर पर बाल संसद का गठन किया गया। मौके पर मिश्रा ने बाल सांसद के कार्यों एवं गठन की प्रक्रिया की जानकारी दी। इसके पश्चात छात्र-छात्राओं को लोकतंत्र के महत्व को समझाने और विद्यालय प्रबंधन में अपनी भागीदारी निभाने के लिए बाल सांसद का गठन कराया, जिसमें प्रधानमंत्री देवराज सोनी, सुरक्षा एवं न्याय मंत्री देवकनक सोनी, शिक्षा मंत्री अभिषेक उरांव, स्वच्छता मंत्री सुमन कुमारी, खेल मंत्री आजाद उरांव, पर्यावरण मंत्री अनामिका कुमारी, कौशल विकास मंत्री नेहा सहित कई विभाग के मंत्री चुने गए।

दिलीप साहू ने कुंदा में चलाया स्थानीयता को लेकर जनजागरूकता अभियान

कुंदा(चतरा)। आगामी लोकसभा चुनाव में अभी देर है, इसके बावजूद चुनाव तैयारी व दावेदारी अभी से ही शुरू हो गई है। चतरा लोकसभा सीट जीतने के लिए राजनीतिक पार्टियों समेत नेतागण सक्रिय हो गए हैं। वहीं चतरा लोकसभा सीट स्थानीय उम्मीदवारों के प्रतिनिधित्व मामले में काफी चर्चा में रहा है। इस सीट से किसी भी स्थानीय उम्मीदवार को जनता का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिल पाया है। यही कारण है कि चतरा लोकसभा क्षेत्र में बुनियादी संसाधनों का घोर अभाव है। इसी सिलसिले में चतरा के मूल निवासी दिल्ली में कार्यरत अपर सचिव दिलीप साहू ने शनिवार को कुंदा प्रखंड क्षेत्र में स्थानीयता को लेकर जन जागरूकता अभियान चलाते हुए कहा की यदि आजादी से लेकर अब तक चतरा को स्थानीय सांसद नहीं मिला है तो इसमें राजनीतिक पार्टियों के साथ यहां की जनता भी जिम्मेदार है। क्योंकि जब तक जनता गैर स्थानीय लोगों को पूरी तरह बहिष्कार नहीं करती है, तब तक राजनीतिक पार्टियां बाहरी लोगों को प्रतिनिधित्व करने का अवसर देती रहेंगी, जिसका परिणाम यह होगा कि चारागाह की तरह बाहरी प्रतिनिधित्व करते रहेंगे और यहां की जनता मूलभूत बुनियादी सुविधाओं से वंचित होते रहेगी। उन्होंने सभी राजनीतिक पार्टियों से भी निवेदन करते हुए कहा है कि पार्टियां चतरा के मूल निवासी को ही प्रतिनिधित्व करने का अवसर दे। अन्यथा यहां की जनता इस बार बाहरी को खदेड़ने के लिए तैयार खड़ी है। दौरे में अनुज गुप्ता, लवकुश गुप्ता, जगमोहन महतो, इंद्रदेव भारती, अजीत भारती, संजय भारती, कृष्णा यादव, अमलेश यादव, दिलीप साहू, ज्योतिष गुप्ता, चंचल यादव, नवीन यादव, वीरेंद्र यादव, रूपेश यादव, ओम प्रकाश यादव, ओम प्रकाश गुप्ता समेत विभिन्न राजनीतिक दलों के लोग शामिल थे।

आपसी विवाद में टांगी से पीटकर की थी पत्नी की हत्या

पुलिस का खुलासा : पति निकला महिला का हत्यारा

घटना को आत्महत्या का रूप देकर अज्ञात पर कराई थी प्राथमिकी

नवीन मेल संवाददाता। बरवाडीह

लातेहार पुलिस कप्तान के निर्देश पर एसडीपीओ दिलु लोहार के नेतृत्व में गठित टीम ने अपनी पत्नी का हत्यारा गोला सिंह को गिरफ्तार करने में छिपादोहर पुलिस ने कामयाबी हासिल की है। इस संबंध में छिपादोर थाना परिसर में आयोजित प्रेस वार्ता में एसडीपीओ एवं थाना प्रभारी अभिषेक कुमार ने बताया कि थाना क्षेत्र की लात पंचायत के टोंगारी जंगल से बीती 13 मई को मलोती देवी का शव पेड़ से लटका मिला था। थाने में महिला के पति गोला सिंह ने अपनी पत्नी की हत्या होने की शिकायत दर्ज कराई थी।

मामले की गंभीरता को देखते हुए एक टीम गठित कर अभियुक्त की गिरफ्तारी के लिए अनुसंधान किया गया, जिसमें पाया गया कि महिला मलोती देवी की दिमागी हालत ठीक नहीं थी और वह हमेशा दारू पीकर किसी न किसी बात को लेकर अपने पति से लड़ाई झगड़ा करती रहती थी। घटना के दिन 10 मई गोला सिंह जंगल में मवेशियों को चराने के लिए गया था। इसी बीच उसकी पत्नी भी जंगल चली गई और अपने पति से लड़ाई झगड़ा करने लगी। दोनों के बीच वाद विवाद बढ़ने पर गुस्से में आकर पति गोला सिंह ने अपने हाथ में रखे हुए टांगी के बट से पत्नी की पीट-पीट कर हत्या कर दी और वहीं पर उसे उसकी साड़ी से लटका कर घटना को आत्महत्या का रूप दे दिया। 13 मई को महिला का शव मिलने पर गोला सिंह ने अज्ञात लोगों द्वारा अपनी पत्नी की हत्या करने की एफआईआर दर्ज कराई थी। मामले में गहनता से जांच के बाद पति ही उक्त महिला का हत्यारा निकला। मामले में हत्या में प्रयुक्त टांगी भी बरामद किया गया है। मामले के उद्वेदन में छिपादोर थाना प्रभारी अभिषेक कुमार एवं छिपा द्वारा पुलिस की टीम शामिल थी।

विद्यालय से सोलर प्लेट की हुई चोरी जलापूर्ति बाधित

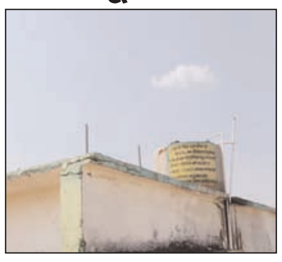

बरवाडीह। प्रखंड के छिपादोहर थाना क्षेत्र अंतर्गत चिरईगिदवा प्राथमिक विद्यालय (छिपादोहर) में शुक्रवार रात्रि अज्ञात चोरों ने विद्यालय में लगाई गई सोलर प्लेट की चोरी कर ली। इस संबंध में विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक हरिशंकर यादव ने छिपादोहर थाना प्रभारी अभिषेक कुमार को आवेदन देकर उचित कार्रवाई की मांग की है। इस संबंध में मिली जानकारी के अनुसार शुक्रवार 27 अक्टूबर को अन्य दिनों की तरह प्रभारी प्रधानध्यापक विद्यालय बंद कर अपने घर चले गए थे। शनिवार सुबह जब विद्यालय पहुंचे तो उक्त घटना के बारे में पता चला। यादव ने बताया कि सोलर प्लेट की चोरी होने से जलापूर्ति सिस्टम बंद हो गया है, जिससे विद्यालय में पठान-पठन करने वाले बच्चों के समक्ष पेयजल की समस्या हो गई है।

उपायुक्त ने दी मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी

नवीन मेल संवाददाता। लातेहार

जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त हिमांशु मोहन की अध्यक्षता में मतदाता सूची विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम को लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। इस दौरान उपायुक्त ने कहा कि उक्त कार्यक्रम के तहत नए मतदाताओं का नाम जोड़ने, मृत मतदाताओं का नाम हटाने एवं त्रुटि के सुधार का कार्य किया जाएगा। मतदाता सूची के प्रारूप का प्रकाशन शुक्रवार को कर दिया गया है। उन्होंने दावा एवं आपत्ति प्राप्त करने एवं उसका निष्पादन तथा मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन हेतु आयोग द्वारा निर्धारित तिथियों के संदर्भ में विस्तार से जानकारी दी। 27 अक्टूबर 9 दिसंबर तक मतदाता सूची में नाम शामिल करने, नाम विलोपन एवं त्रुटि में सुधार किया जा सकता है। प्राप्त दावा एवं आपत्ति के निष्पादन हेतु 26 दिसंबर की अंतिम तिथि निर्धारित है। 5 जनवरी 2024 को मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन किया जाएगा। 1 जनवरी 2024 तक जो युवा 18 साल पूरा करने वाले हैं, उन्हें भी मतदाता सूची में शामिल करने की पहल की जा रही है। इस बीच 18 साल पूरा कर चुके युवा वोटरों का भी नाम मतदाता सूची में जोड़ा जाएगा। 28, 29 अक्टूबर और 4, 5 नवंबर को सभी मतदान बूथ पर विशेष अभियान चलाया जाएगा। इसमें छूटे हुए मतदाताओं को विशेषकर आदिम जनजातियों, बेघर, 80 साल से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों, थर्ड जेंडर और ट्रांसजेंडर, दिव्यांगजनों के लिए विशेष अभियान चलाया जाएगा। उपायुक्त ने कहा इस अभियान को सफल बनाने के लिए जिलेवासियों का सहयोग अपेक्षित है। बैठक में उप विकास आयुक्त आलोक शिकारी कच्छप, अनुमंडल पदाधिक मो. परवेज उपस्थित थे।

गारू पूर्वी वनक्षेत्र के गांव में जंगली हाथी ने वृद्ध को पटककर मार डाला

नवीन मेल संवाददाता। लातेहार

पलामू टाइगर रिजर्व के गारू पूर्वी वनक्षेत्र के ग्राम महुआडाबर में जंगली हाथियों का आतंक पिछले दो दिनों से जारी है। हाथियों के झुंड से बिछड़ कर दो हाथी उक्त ग्राम पहुंचकर शुक्रवार को तकरीबन एक बजे जमकर उत्पात मचाया और फसलों को रौंदकर और खाकर बर्बाद कर दिया। इसके बाद ग्रामीणों ने देहाती जुगाड़ एवं वन कर्मियों की मदद से हाथी को खदेड़ दिया, परंतु करीब शाम पांच बजे हाथी वापस आ धमके और दो घरों को ध्वस्त कर दिया। इसके बाद ग्रामीणों की सूचना पर फॉरेस्ट विभाग के अधिकारी और वन कर्मी वहां पर पहुंचे और गांव से हाथी को भगाने का प्रयास करने लगे। इसी दौरान तकरीबन देर शाम 6 बजे सरयू बाजार से सब्जी लेकर लौट रहे दाढीछापर ग्राम निवासी सुखलाल सिंह जैसे ही हुंडरी मैदान के पास पहुंचे जंगली हाथी ने उस पर हमला कर दिया और पटक कर घायल कर दिया। सिंह के घायल होने कि सूचना मिलने पर ग्रामीणों ने उसे गारू रेफरल अस्पताल में भर्ती करवाया, लेकिन स्थिति चिंताजनक होने के कारण उसे लातेहार सदर हॉस्पिटल रेफर कर दिया गया, जहां डॉक्टर ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। घटना की जानकारी देते हुए मृतक के भाई ने बताया की सुखपाल सिंह को जंगली हाथियों ने पटक कर मार डाला और गांव के दो घरों को भी ध्वस्त कर दिया।

मृतक के परिजनों को सहायता राशि के रूप में मिले 25000 रुपये

क्षेत्र में दो जंगली हाथी हैं भ्रमणशील, वन क्षेत्र के ग्रामीणों में दहशत

परिजनों को दी गई सहायता राशि

शनिवार को मृतक सुखलाल सिंह के पोस्टमार्टम के बाद लातेहार सदर अस्पताल पहुंचकर गारू पूर्वी वन क्षेत्र के रेंजर उमेश कुमार दुबे और लातेहार रेंजर नंद कुमार मेहता ने मृतक के परिजनों को तत्काल सहायता राशि के रूप में 25000 दिए। मौके पर जिला परिषद सदस्य गारू जीरा देवी, बरवाडीह कन्हाई सिह, लातेहार विनोद उरांव, सरजु बुद्धेश्वर भगत, विधायक प्रतिनिधि हरिशंकर यादव, पंकज तिवारी समेत कई लोग मौजूद थे। वहीं गारू पूर्वी वन क्षेत्र के रेंजर दुबे ने कहा कि सुखपाल के परिजनों को सरकारी प्रावधान के अनुसार 400000 मुआवजा राशि दी जाएगी। वहीं संवीदा के आधार पर नौकरी भी दी जाएगी। उन्होंने कहा कि फिलहाल उक्त गांव में ग्रामीणों के बीच पटाखे और जरूरी सामानों का वितरण किया गया है। वहीं वन विभाग के कर्मी हाथियों को दूर भगाने के लिए प्रयासरत है। कहा कि हाथियों के झुंड से बिछड़ कर दो हाथी उक्त गांव पहुंचे थे, जिन्हें वनकर्मियों द्वारा दोबारा झुंड में पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है।

मां की मौत का सदमा बर्दाश्त नहीं कर सका कलियुग का 'श्रवण कुमार' नंदू

मां के दशकर्म से एक दिन पहले बेहोश होकर गिर पड़ा, इलाज के दौरान तोड़ा दम

नवीन मेल संवाददाता। प्रतापपुर (चतरा)

कलियुग का 'श्रवण कुमार' नंदू दास दिन-रात अपनी बीमार मां की सेवा में लगा रहता था। उसकी मां की लंबी बीमारी की वजह से दस दिन पूर्व मृत्यु हो गई, तो इस सदमे को वह बर्दाश्त नहीं कर कर सका और अंततः वह भी मौत की आगोश में चला गया। प्रखंड मुख्यालय से सटे बभने गांव के ग्रामीण बताते हैं कि नंदू अपनी मां को अपनी जान से भी ज्यादा प्यार करता था। दिन-रात मां की सेवा में लगा रहता था। अचानक मां की मौत हो गई।

मां की मौत से आहत नंदू दास एकदम गुमसुम रहने लगा था। गुरुवार को मां के दशकर्म से एक दिन पहले वह सदमे के कारण बेहोश होकर गिर पड़ा। आनन-फानन प्रतापपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लाया गया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे चतरा रेफर कर दिया गया था। सदर अस्पताल में भी स्थिति में सुधार नहीं देख चिकित्सकों ने उसे रिम्स रांची रेफर कर दिया था, जहां इलाज के क्रम में शुक्रवार को नंदू ने दम तोड़ दिया। आर्थिक रूप से कमजोर नंदू के परिजनों को मंत्री प्रतिनिधि भोला प्रसाद ने मदद की और उन्होंने नंदू के पार्थिव शरीर को रांची से प्रतापपुर लाने के लिए मंत्री सत्यानंद भोक्ता के स्तर से शनिवार को एंबुलेंस द्वारा उसके घर तक सुरक्षित पहुंचाया गया। नंदू का पार्थिव शरीर जब उसके घर पहुंचा तो उसकी पत्नी दहाड़ मारकर रोने लगी। बच्चे गुमसुम अपने मृतक पिता को देख रहे थे।

नए भूमि सुधार उपसमाहर्ता ने किया पदभार ग्रहण

महुआडांड़। अनुमंडल के नए भूमि सुधार उपसमाहर्ता के रूप में प्रभात रंजन चौधरी ने शुक्रवार को अनुमंडल कार्यालय पहुंचकर पदभार ग्रहण किया। इस मौके पर रंजन ने बताया कि विभिन्न सरकारी योजनाओं के लिए भूमि से संबंधित समस्याएं होती हैं, जिनका अंचल कार्यालय के माध्यम से हल करना और उचित व्यक्ति तक सही लाभ पहुंचाना हमारी प्राथमिकता होगी। भूमि संबंधित विवादों का निपटारा करते हुए, लोगों को उचित न्याय देने का कार्य करेंगे, जिससे अनुमंडल क्षेत्र में भूमि संबंधित मामलों के कारण कोई भी आपसे रंजीश ना हो और समाज में शांति व्यवस्था कायम रहे। सभी दिशा निर्देशों और दायित्वों का सही से पालन करेंगे।

मगध कोल माइंस में भ्रष्टाचार के विरोध में बनाई गई मानव श्रृंखला

नवीन मेल संवाददाता। बालूमाथ

एशिया की सबसे बड़ी कोल परियोजना मगध में शनिवार को मगध-संघमित्रा क्षेत्र में सतर्कता जागरूकता अभियान 2023 के अंतर्गत मगध महाप्रबंधक नृपेंद्र नाथ की अगुवाई में भ्रष्टाचार के विरोध में जागरूकता अभियान चलाया गया। इस दौरान राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें, विषय के तहत एक बड़ी मानव श्रृंखला कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस मौके पर विशेष रूप से बड़ी संख्या में अधिकारियों व कर्मचारियों संगठन के प्रतिनिधियों, हितधारकों और आस-पास के ग्रामीणों और मगध परियोजना के आस-पास के स्कूलों के बच्चों ने भ्रष्टाचार के दुष्प्रभावों के बारे में जनता में जागरूकता पैदा करने का प्रयास किया। मौके पर मगध महाप्रबंधक नृपेंद्र नाथ ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि भ्रष्टाचार देश के उन्नति में बाधक है। यह भारत को दीमक की तरह खोखला कर रहा है। इसे जड़ से उखाड़ फेंकना है, जिसके लिए जन-जन को जागरूक होने की आवश्यकता है। मौके पर मगध महाप्रबंधक के अलावे परियोजना पदाधिकारी सडाला सत्यनारायण एवं आदि उपस्थित रहे।

मेरी माटी, मेरा देश के तहत निकाली गई कलश यात्रा

नवीन मेल संवाददाता। चतरा

मेरी माटी, मेरा देश कार्यक्रम के तहत शनिवार को जिला मुख्यालय में राष्ट्र स्तरीय कलश यात्रा निकली गई, जिसको जिला परिषद उपाध्यक्ष ब्रजकिशोर किशोर तिवारी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कलश यात्रा नेहरू युवा केंद्र के तत्वाधान में निकाली गई, जो दिल्ली तक जाएगी। इस अवसर पर जिप उपाध्यक्ष ने कहा कि आज हमारे देश के लिए बहुत ही गौरव का पाल है कि मेरा माटी मेरा देश कार्यक्रम दिल्ली में आयोजित है। जहां झारखंड के भी लोग शामिल हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि मेरी माटी, मेरा देश के माध्यम से हमारे जो सैनिक हैं हमारे देश की एकता अखंडता अछुन रहे और बिना भेदभाव रहित समाज का निर्माण हो यह संदेश देता है यह कलश मिट्टी यात्रा। उन्होंने प्रधानमंत्री के इस सराहनीय कार्य की प्रशंसा की।

बैठक | समन्वय समिति व मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्यक्रम की बैठक में दिए गए निर्देश

उप विकास आयुक्त ने की योजनाओं की समीक्षा

नवीन मेल संवाददाता। चतरा

समाहरणालय स्थित सभा कक्ष में उपायुक्त अबु इमरान के निर्देशानुसार उप विकास आयुक्त उत्कर्ष गुप्ता की अध्यक्षता में जिला समन्वय समिति, मनरेगा, पीएम आवास योजना ग्रामीण व शहरी एवं मतदाता सूची पुनरीक्षण कार्यक्रम 2024 समेत अन्य विकास तथा कल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा हुई। इसमें मुख्य रूप से पीएम आवास योजना (ग्रामीण), वीर शहीद पोटो हो खेल विकास योजना, बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर आवास योजना, अमृत सरोवर, मजदूरी भुगतान, नेशनल मोबाईल मॉनिटरिंग सिस्टम, मानव दिवस सृजन, 15वें वित्त द्वारा संचालित योजना की समीक्षा कर कई दिशा निर्देश पदाधिकारियों को दिए गए।

पीएम आवास योजना ग्रामीण एवं शहरी में जिन लाभुकों को किस्त की राशि दी जा चुकी है और उनके द्वारा आवास अभी तक पूर्ण नहीं कराया गया है। वैसे लाभुकों को चिन्हित कर स्थल निरीक्षण करते हुए आवास को पूर्ण कराएं। अगर इसके बाद भी लाभुकों के द्वारा आवास पूर्ण नहीं किया जाता है तो नियमानुसार कार्रवाई करें। किसी भी परिस्थिति में शत प्रतिशत आवास को पूर्ण कराएं। आगे उन्होने कहा कि 31 अक्टूबर से 10 नवंबर तक चलो करे आवास पूरा का दूसरा फेज प्राप्त निर्देश के आलोक में चलाया जाना निर्धारित है। कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु सभी संबंधित पदाधिकारी आपस में समन्वय स्थापित करते हुए पुरी तैयारी कर ले जिससे कि अभियान के क्रम में शत प्रतिशत आवास को पूर्ण कराया जा सके। 15वें वित्त आयोग से प्राप्त आवंटन के विरूद्ध किए गए खर्च की समीक्षा प्रखंडवार कर प्रखण्ड विकास पदाधिकारी को निर्देशित किया कि 15वें वित्त आयोग से प्राप्त आवंटन का शत प्रतिशत राशि का सदुपयोग किया जाय। 27 को हुए मतदाता सूची का प्रकाशन एवं स्पेशल कैम्पेन अभियान के तहत दिनांक 28, 29 अक्टूबर, 04 एवं 05 नवंबर 2023 तक चलने वाले अभियान की बिन्दुवार समीक्षा करते हुए निर्देशित किया गया कि उक्त तिथि को चलने वाले अभियान के तहत सभी बीएलओ अपने मतदान केन्द्रों पर उपस्थित रहकर नाम पंजीकरण, सुधार, विलोपन, ब्लैक एण्ड वाईट फोटो, खराब गुणवत्ता वाला फोटो प्रतिस्थापन का कार्य करेंगे और आगे बैठक में उपस्थित बीडीओ को निर्देशित किया गया कि फार्म 6, 7 एवं 8 की मॉनिटरिंग करेंगे और प्राप्त फार्म का रिपोर्ट प्रतिदिन जिला निर्वाचन कार्यालय को उपलब्ध करायेंगे। बैठक में उप निर्वाचन पदाधिकारी सह डीआरडीए निदेशक अरूण एक्का, एसडीओ चतरा सुरेंद्र उरांव, एसडीओ सिमरिया सुधीर दास, जिला भू-अर्जन पदाधिकारी वैभव सिंह जिला परिवहन पदाधिकारी इंद्र कुमार, सभी बीडीओ आदि पदाधिकारी, कर्मी उपस्थित थे।

विवेकानंद प्लस 2 हाई स्कूल में शौचालय नहीं छात्राएं बगल के घरों का खटखटाती हैं दरवाजा

सरकार व शिक्षा विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल

नवीन मेल संवाददाता। मयूरहंड(चतरा)

सरकार के इरादे और विधायक व सांसद के किये वादों को मुंह चिढ़ा रहा है। प्रखंड मुख्यालय में शौचालय विहीन स्वामी विवेकानंद प्लस टू उच्च विद्यालय। प्रखंड कार्यालय से महज एक किलोमीटर की दूरी पर स्थित विद्यालय में अध्ययनरत छात्राओं की स्थिति ऐसी है कि शौच के लिए स्कूल के बगल के घरों में जाना पड़ता है। वजह स्कूल में संवेदक द्वारा बिना शौचालय बनाए गए पूर्व के शौचालय तोड़कर बनाना है।

लगभग छह माह से अधिक समय बीत जाने के बावजूद विद्यालय में संवेदक द्वारा शौचालय का निर्माण नहीं किया गया और न ही कोई वैकल्पिक व्यवस्था की गई। ऐसे में विद्यालय में शौचालय नहीं होना सरकार और शिक्षा विभाग की कार्यप्रणाली पर ही सवाल खड़ा करता है। विद्यालय प्रबंधन से लेकर ग्रामीणों ने शौचालय निर्माण के लिए प्रयास जरूर किया, लेकिन सफलता हाथ नहीं लगी। विद्यालय में कक्षा एक से बारहवीं तक कुल 1090 छात्र-छात्राओं का नामंकन है। विद्यालय में प्रत्येक दिन लगभग छात्र-छात्राओं की उपस्थिति रहती है। इस विषय पर जिला शिक्षा पदाधिकारी दिनेश कुमार मिश्रा ने बताया की नया भवन में शौचालय का निर्माण किया जा रहा है। मंगलवार को विद्यालय के प्रधानाध्यापक के साथ बैठक कर जल्द ही शौचालय की व्यवस्था करा दी जाएगी।

गागर में सागर

सेवा भारती का स्वास्थ्य शिविर कल

लोहरदगा। सेवा भारती द्वारा 72वां स्वास्थ्य शिविर का आयोजन 29 अक्टूबर को किया जा रहा है। अपर बाजार के चुन्नीलाल प्लस टू विद्यालय परिसर में गत 1 जून 2022 से सेवा भारती द्वारा प्रत्येक सप्ताह निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन निरंतर किया जा रहा है। प्रत्येक सप्ताह रविवार को प्रातः 7:30 से 8:30 बजे तक एक घंटे का शिविर आयोजित करते हुए मरीजों की निशुल्क सेवा सदस्यों द्वारा की जाती है। इसकी जानकारी देते हुए सेवा भारती के जिलाध्यक्ष दीपक सराफ ने बताया कि स्वास्थ्य जांच एवं चिकित्सा शिविर में विशेष रूप से सेवा भारती से जुड़े इ.अ.ट.र (इ.व) डॉ कुमुद अग्रवाल शिविर में मरीजों की स्वास्थ्य जांच करते हुए इलाज करेंगे। उन्होंने कहा है कि स्वस्थ जीवन के लिए समय-समय पर अपना एवं अपने परिवार के स्वास्थ्य की जांच अवश्य कराएं। आपका तन ठीक रहेगा तभी आप अपना सभी कार्य अच्छे से कर सकेंगे। स्वस्थ रहने के लिए नियमित रूप से अपने शरीर के स्वास्थ्य का ध्यान रखिए। उन्होंने जिलेवासिओं से अपील करते हुए कहा है कि इस निशुल्क शिविर में समय पर आकर अपने स्वास्थ्य संबंधित जांच करवा कर स्वास्थ्य की जानकारी प्राप्त करें।

अज्ञात शव की हुई शिनाख्त, परिजनों ने पुलिस प्रशासन से मांगा शव

सेन्हा। थाना क्षेत्र के नीचे तुरियाडीह में सड़क दुर्घटना में मारे गए साइकल सवार अज्ञात अधेड़ व्यक्ति दो दिन बाद समाचार पत्र के माध्यम से शिनाख्त हुई। पुलिस पदाधिकारी से संपर्क कर भंडरा थाना अंतर्गत बेदाल बुडका टाइन टोली निवासी धुरन महली के पुत्र हरि महली ने मृतक की पहचान अपने बड़े भाई हीरू महली के रूप में की। बताया कि हीरू 23 अक्टूबर को बुडका टाइन टोली स्थित अपने घर से बहनोई राजेश महली के घर गढ़कसमार नवाडीह गया था। वहां नवमी को संधिबली कार्यक्रम के पश्चात दूसरे दिन घर आने के लिए निकला था, परंतु वह घर नहीं पहुंचा। 26 अक्टूबर की शाम 7 बजे समाचार पत्र के माध्यम से अज्ञात अधेड़ व्यक्ति की मौत की खबर की जानकारी मिली। इस संदर्भ में थाना प्रभारी अभिनव कुमार ने कहा कि शव की शिनाख्त के उपरांत जांचोपरांत पहचानी पुष्टि करवाते हुए परिजनों को शव सौंपने की अग्रतर कारवाई की जा रही है।

विशाल सूंगारी पहाड़ में जतरा 30 को

कैरो। जिले के कैरो प्रखंड में स्थित विशाल सूंगारी पहाड़ में सोमवार को आयोजित होने वाली जतरा को लेकर ग्राम प्रधान सानिया पहान की अध्यक्षता में बैठक हुई। बैठक में जतरा को सुचारू ढंग से संम्पन्न कराने के लिए जतरा कमेटी का गठन किया गया। सर्वसम्मति से अध्यक्ष फूलकुमार भगत, उपाध्यक्ष जगबंधन भगत, जगरनाथ उरांव, विनोद साहू, मनोज यादव, कयूम अंसारी, कोषाध्यक्ष नगवा उरांव, शशि उरांव, सह कोषाध्यक्ष जिता उरांव, प्रदीप महली, सचिव शंकर उरांव, जयशिंग उरांव को बनाया गया एवं सभी ग्रामीणों से सहयोग करने की अपील की गई। यह जतरा इसलिए भी मशहूर है क्योंकि यह पहाड़ की चोटी पर आयोजित किया जाता है, जहां हजारों लोग दूर-दूर से पहाड़ में जतरा देखने के लिए आते हैं। कैरो प्रखंड के साढाबे गांव में यह पहाड़ है, जिसे सुंगारी पहाड़ के नाम से जाना जाता है। बैठक में लखन उरांव, विजय कुमार एक्का, धना साहु, चंद्रदेव भगत, चरकु उरांव, धुचु उरांव, गनेश उरांव, होसने उरांव, राजेश्वर भगत सहित ग्रामीण उपस्थित थे।

भंडरा में सीओ व बीडीओ ने किया मतदाता सूची प्रकाशन का निरीक्षण

भंडरा। मतदाता सूची का प्रकाशन लोहरदगा एवं बिशनपुर विधानसभा क्षेत्र के भंडरा प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत पड़ने वाले सभी बुथो का निरीक्षण सीओ दिनेश कुमार गुप्ता एवं बीडीओ रंजीत कुमार सिन्हा के द्वारा किया गया। इस क्रम में सभी मतदान केदो में बीएलओ के द्वारा मतदाता सूची का प्रकाशन किया गया, जिसमें मतदाताओं के द्वारा अपने नाम का सूची में वेरिफिकेशन किया गया। इस मौके पर मतदाताओं के द्वारा सूची के निरीक्षण करने के बाद नाम दर्ज करवाने, त्रुटि निराकरण करने, फोटो में सुधार करने सहित अन्य बिंदुओं पर बीएलओ को जानकारी दी।

कुडू पुलिस को मिली बड़ी सफलता, बाइक चोरी पर लगाम लगने की उम्मीद

बाइक के साथ चोर गिरफ्तार

नवीन मेल संवाददाता। कुडू

बीते गुरुवार को कुडू बाजार टांड से चोरी हुई बाइक का कुडू पुलिस ने उद्भेदन करते हुए थाना क्षेत्र के लावागाई निवासी नईम खान का पुत्र अदनान अल्तमश (22) को गिरफ्तार करने में सफलता पाई है। साथ ही उसके पास से चोरी की गई बाईक भी बरामद कर ली है। ज्ञात हो कि गुरुवार 21 अक्टूबर को कुडू निवासी विनय कुमार की बाइक घर के बाहर से चोरी कर ली गयी थी। इसके बाद विनय कुमार ने कुडू थाने में लिखित शिकायत की थी। शिकायत पर पुलिस आज्ञात चोर के खिलाफ कांड संख्या 118/23 दर्ज कर अनुसंधान में जुटी थी। मिली जानकारी के अनुसार 26 अक्टूबर को कुडू थाना प्रभारी बिश्वजीत कुमार सिंह को सूचना मिली कि उक्त बाइक को एक व्यक्ति टाटी के पास लेकर खड़ा है। इसपर तत्काल केस के अनुसंधानकर्ता सअनि सुकु सोरेन को दल बल के साथ टाटी के लिए रवाना किया। वहां पहुंचने पर युवक बाइक को लेकर जल्दबाजी में टाटी कैरो रोड में भागने लगा, लेकिन पुलिस ने पीछा कर दबोच लिया। पुलिस को मिली इस सफलता से उम्मीद जताई जा रही है कि लंबे समय से कुडू में हो रही बाइक चोरी पर लगाम लगेगी।

सेन्हा में मारपीट के आरोप में तीन व्यक्ति गए जेल

नवीन मेल संवाददाता। सेन्हा

रानीगंज साप्ताहिक बाजार से लौटने के दौरान वाहन से साइड मांगने पर हुआ विवाद में तीन नामजद के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की गई है। वाहन चालक स्व. सगीर खान के पूत्र इम्तियाज खान न्यू रोड लोहरदगा निवासी से मारपीट के दौरान घायल हो गया था। वहीं इम्तियाज खान ने लोहरदगा सदर अस्पताल में इलाज के दौरान पुलिस को आवेदन देकर कहा कि साप्ताहिक बाजार रानीगंज से बुधवार को देर शाम लोहरदगा सवारी लेकर आ रहे थे। तभी बदला मेला मैदान के पास साइड लेने को लेकर कुछ लोगों से विवाद हुआ। इस पर निगनी गांव निवासी जय गोविंद साहू के पूत्र जितेंद्र कुमार साहू, बालकेश्वर साहू के पूत्र केशरी कुमार साहू तथा सुरेश साहू के पूत्र संतोष कुमार साहू ने मारपीट कर जख्मी कर दिया। घायल इम्तियाज खान के आवेदन पर संज्ञान लेते हुए थाना प्रभारी अभिनव कुमार ने थाना कांड संख्या 136/23 दर्ज कर नामजद तीनों आरोपी को गिरिफ्तार कर लोहरदगा जेल भेज दिया। थाना प्रभारी अभिनव कुमार ने कहा की मारपीट मामला की पुष्टि के उपरांत तीनों आरोपी को गिरिफ्तारी कर जेल भेजा गया।

12 फीट लंबे अजगर को वन विभाग ने किया रेस्क्यू जंगल में ले जाकर छोड़ा

नवीन मेल संवाददाता। गुमला

गुमला जिला अंतर्गत भरनो थाना स्थित नेशनल हाईवे एनएच-23 मुख्य पथ पर 12 फीट लंबे एक अजगर सांप को लोगों ने देखा और इसकी सूचना वन विभाग को दी। इस पर वन विभाग ने त्वरित कार्रवाई करते हुए टीम को घटनास्थल पर भेजा। टीम ने उक्त अजगर को रेस्क्यू कर जंगल में ले जाकर छोड़ दिया। बताया जाता है कि गुमला जिला सहित पूरे झारखंड राज्य में उक्त अजगर के कई विभिन्न आकार प्रकार के प्रजातियां पाई जाती हैं और कई अजगर सांप की प्रजातियां लुप्त हो चुकी है। अतः उन्हें संरक्षित करना अति आवश्यक हो गया है। अजगर से लोग भयभीत जरूर होते हैं, लेकिन बताया जाता है कि छोटे अजगर सांप जानलेवा विषैला और जहरीला नहीं होता है तभी तो अधिकांश लोग उक्त अजगर सांप को पड़कर, विशेष कर छोटे अजगर सांपों को सपेरा - साधु - संतों द्वारा और अन्य लोग द्वारा भी अपने शरीर में लपेटकर घूमते और तरह-तरह के कर्तव्य दिखाते नजर आ जाते हैं।

योजनाओं की समीक्षा की

गुमला। उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी की अध्यक्षता में जिला समाज कल्याण विभाग अंतर्गत संचालित योजनाओं की समीक्षा की गई। इस दौरान विभाग अंतर्गत महत्वपूर्ण योजना जैसे कन्यादान योजना, सावित्री बाई फुले किशोरी योजना, मातृ वंदना योजनाओं आदि की समीक्षा की गई। आंगनवाड़ी केंद्रों में बच्चों के समग्र विकास को लेकर किए जा रहे कार्यों की भी जानकारी ली। उपायुक्त ने पोषण ट्रैकर एप के अपडेटेड डाटा का विश्लेषण किया, प्राप्त डाटा के अनुसार वजन मापी के तहत एप में 95.41 प्रतिशत एवं गृह भ्रमण के क्रम में 85.91 प्रतिशत की उपलब्धि देखने को मिली।वहीं पोषण ट्रैकर एप में पंजीकृत लाभुकों एवं आधार सत्यापन के कार्य में 95.07 प्रतिशत की उपलब्धि प्राप्त हुई।

डीसी ने मतदान केंद्रों का निरीक्षण कर बीएलओ के साथ ली सेल्फी

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

मतदाता सूची विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम अंतर्गत उपायुक्त-सह-जिला निर्वाचन पदाधिकारी डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण द्वारा जिले के विभिन्न मतदान केंद्रों का निरीक्षण किया गया और संबंधित बीएलओ के साथ सेल्फी ली गई। इन मतदान केंद्रों में राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय मन्हो का मतदान केंद्र संख्या 214, राजकीय बुनियादी विद्यालय हिरही का मतदान केंद्र संख्या 207, 208, नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत राजकीयकृत बालिका मध्य विद्यालय लोहरदगा का मतदान केंद्र संख्या 281, राजकीयकृत बालिका उच्च विद्यालय का मतदान केंद्र संख्या 279 एवं 280 शामिल हैं। उपायुक्त द्वारा उप निर्वाचन पदाधिकारी लोहरदगा को नये बीएलओ का प्रशिक्षण कराये जाने का निर्देश दिया गया। निरीक्षण के दौरान बीएलओ को मतदाता सूची विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत आवश्यक प्रपत्रों को भरे जाने, मतदाता की अर्हता तिथि आदि से अवगत कराया गया। निरीक्षण में उप निर्वाचन पदाधिकारी नारायण राम, जिला जनसम्पर्क पदाधिकारी पलटू महतो, नगर परिषद प्रशासक जयपाल सिंह समेत अन्य उपस्थित थे।

समिति अध्यक्ष ने आमजनों का आभार व्यक्त किया

लोहरदगा। केंद्रीय दुर्गा पूजा समिति के अध्यक्ष इंद्रजीत लकड़ा ने शारदीय नवरात्र भक्तिमय वातावरण में धूमधाम से संपन्न होने पर लोगों को बधाई दी। उन्होंने शारदीय नवरात्र को शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण ढंग से संपन्न कराने में लगे केंद्रीय दुर्गा पूजा समिति के सभी संरक्षक, पदाधिकारी, सदस्य, जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन, दंडाधिकारी, मीडिया, सुरक्षा बल, मेडिकल की टीम, अग्नि शमन की टीम, सभी पूजा पंडाल के पदाधिकारी व माता रानी के भक्तों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि सभी ने अपने अपने स्तर से पूजा के सफल आयोजन में अपनी भागीदारी निभाई। वहीं पदाधिकारियों से कहा कि उन्होंने पूजा में एक से बढ़कर एक आकर्षक पंडाल, प्रतिमा, विद्युत सज्जा, विधि व्यवस्था बनाने में अहम योगदान दिया है। साथ ही अनुशासन पूर्ण व्यवस्था बनाते हुए भक्तों को सुविधा उपलब्ध कराई।

आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस पार्टी में सरगर्मी हुई तेज

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

जिला परिसदन में कांग्रेस पार्टी के लोहरदगा लोकसभा स्तरीय बैठक लेने कांग्रेस पार्टी के एसटी एससी ओबीसी के कोऑर्डिनेटर के राजू लोहरदगा पहुंचे। राज्य सभा सांसद धीरज प्रसाद साहू, लोहरदगा लोकसभा प्रभारी सुखदेव भगत, प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की, संयोजक प्रदीप तुलसियान, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष प्रदीप बालमुचू सहित लोहरदगा गुमला और मांडर क्षेत्र के कांग्रेस पार्टी के ब्लॉक स्तर के नेता और कोऑर्डिनेटर समिति के सदस्य शामिल हुए।

लोहरदगा लोकसभा प्रभारी सुखदेव भगत ने पिछली बार की बैठक में दिए गए टास्क की समीक्षा की। कांग्रेस पार्टी के कोऑर्डिनेटर के राजू ने झारखंड प्रदेश में कांग्रेस के सभी 14 लोकसभा सीटों को लेकर अल्पसंख्यक मॉनेटरी ओबीसी एसटी एससी को लेकर जमीनी स्तर पर कार्य और टास्क देने का काम किया है ताकि पिछला वर्ग से नए नेतृत्व को आगे लाया जा सके। और आगामी लोकसभा चुनाव में कांग्रेस के सभी प्रत्याशियों की जीत सुनिश्चित किया जा सके। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राज्यसभा सांसद धीरज प्रसाद साहू ने भी आगामी लोकसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशियों की जीत का दावा किया है तो वही लोहरदगा लोकसभा के प्रभारी सुखदेव भगत ने कहा कि झारखंड प्रदेश के जन मुद्दों को लेकर कांग्रेस पार्टी चुनाव मैदान में आएगी और इस बार भाजपा को शिकस्त देगी। हम गांधी को मानने वाले हैं गोडसे के पथ पर चलने वालों को जनता सबक सिखाएगी।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने भंडरा विधानसभा क्षेत्र का किया निरीक्षण

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार ने शुक्रवार को जिले के भंडरा प्रखंड में ड्रॉप पब्लिकेशन के क्रम में वाचन निरीक्षण में विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र 69-बिशनपुर के मतदान केंद्र 80 एवं 81 का निरीक्षण किया। बीएलओ से प्राप्त जानकारी के बाद मतदाताओं का एपिक कार्ड, जिसका स्पीड पोस्ट के माध्यम से पोस्ट ऑफिस के द्वारा वितरण किया जाता है, की समीक्षा के क्रम में बीएलओ द्वारा मतदाता अंजली कुमारी के मतदाता पहचान पत्र के संबंध में डिलीवरी की जानकारी हेतु मसमानो पोस्ट ऑफिस का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में पोस्ट ऑफिस में 19 मतदाता पहचान पत्र अन-डिलीवर्ड पाया गया।

इसके विषय में बीपीएम और पोस्टमैन से पूछताछ की गई, जिनके द्वारा संतोषजनक जवाब नहीं दिया गया। सभी मतदाता कार्ड का आर्टिकल नंबर और एपिक नंबर का डिलीवरी का जांच करने हेतु अपने साथ संख्या के साथ सूची बनाकर सूची से वेरीफाई करने के लिए साथ ले गए। पोस्ट ऑफिस के द्वारा एपिक कार्ड वितरण में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा असंतोष व्यक्त किया गया। मौके पर उप निर्वाचन पदाधिकारी नारायण राम, प्रखंड विकास पदाधिकारी रंजीत सिन्हा, अंचल अधिकारी दिनेश गुप्ता, संबंधित बीएलओ सुपरवाइजर, बीएलओ आदि उपस्थित थे।

उपायुक्त -सह-जिला दण्डाधिकारी का कार्यालय, लोहरदगा
(खनन शाखा)

रदद संबंधी सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि लोहरदगा जिला अन्तर्गत Category-II के श्रेणी A एवं श्रेणी B के कुल 17 बालू घाटों का MDO चयन हेतु अति अल्पकालीन वित्तीय– निविदा आमंत्रण हेतु सूचना का प्रकाशन दैनिक समाचार पत्रों के माध्यम से दिनांक 21.04.2023 को प्रकाशित की गई थी, जिसका PR 295588 Lohardaga (23-24) D dt. 21.04.2023 था, में भाग लिये प्रतिभागियों द्वारा Quote किये गए Sand mining Fee का दर अव्यवहारिक पाये जाने एवं Model tender Document के भाग 8.5(J) में उल्लेखित Sand Mining Fee Abnormally Lower or Higher स्पष्ट नहीं होने के कारण प्रबंधक निदेशक, झारखण्ड राज्य खनिज विकास निगम लि0 रांची से मार्गदर्शन की मांग की गई थी। जिसके आलोक में प्रबंधक निदेशक द्वारा संशोधित Model tender Document उपलब्ध कराई गई है, जिसके अनुसार MDO चयन हेतु वित्तीय– निविदा आमंत्रित किया जाना है।

अतएव लोहरदगा जिला अन्तर्गत Category- II के कुल 17 बालू घाटों का MDO चयन हेतु आमंत्रित वित्तीय– निविदा PR 295588 Lohardaga (23-24) D dt. 21.04.2023 को तत्काल प्रभाव से रद्द किया जाता है।

उपायुक्त,
लोहरदगा

PR 309996 Lohardaga(23-24).D

समादेष्टा का कार्यालय आई0आर0बी0-04, लातेहार।

-:अल्पकालीन निविदा सूचना:-

सर्वधारण को सूचित किया जाता है कि, आई0आर0बी0–04, लातेहार में सरकारी पुलिस वाहन का टायर एवं ट्यूब क्रय करना आवश्यक है, जिसकी निविदा सूचना पटट् के माध्यम से आमंत्रित किया जाना है, जिसका अल्पकालीन निविदा सूचना पटट् के माध्यम से आमंत्रित किया जाता है।

क्र0सं0	वाहन का प्रकार	टायर का साईज	अभियुक्ति
1	मिनी बस	7.50-16-16PR	
2	टाटा 709 ट्रक	7.50-16-16PR	
3	टाटा 407 ट्रक	7.50-16-16PR	
4	जिप्सी किंग	F78-15	
5	थार जीप	185/85 R16	
6	टाटा सुमो गोल्ड	215/75R15	
7	टाटा सुमो एम्बुलेंश	195R-15	

अतः इच्छुक आपूर्तिकर्ता दिनांक–13/11/2023 तक अपना निविदा परिवहन शाखा आई0आर0बी0–04, लातेहार न्यू पुलिस केन्द्र, लातेहार में समय–11:00 बजे पूर्वा0 तक सील बन्द लिफाफा में समर्पित कर सकते है। निविदा दिनांक–14/11/2023 को समय–11:00 बजे निविदादाता के समक्ष परिवहन शाखा, आई0आर0बी0–04, लातेहार में खोली जायगी। अनुमोदन के पश्चयात् किसी प्रकार का दावा मान्य नही होंगे।

निविदा की शर्तः–
1.निविदाझारखण्ड मूल्य वार्धित कर अधिनियम–2005 के अन्तर्गत निंबधित हो।
2. प्रतिष्ठान का GSTहोना अनिवार्य है।
3. किसी भी परिस्थिति में अग्रिम राशि भुगतान नही किया जाएगा।
4. निविदा को संशोधित करने एवं बिना कोई कारण बताये निविदा को रद्द करने का अधिकार अद्योहस्ताक्षरी के पास सुरक्षित होगा।
5. निविदा 01(एक) वर्ष के लिए होगा तथा अनुमोदन किये गये प्रतिष्ठान का कार्य संतोषजनक पाये जाने पर कार्य अवधि का विस्तारण किया जा सकता है।
6. निविदादाता क्रय की जाने वाली वस्तुओं का दर सील बन्द लिफाफा में उपलब्ध करायेंगे। प्रतिष्ठान का नाम पता, मोबाईल नं0 के साथ अंकित होगा।

नोटः– इन सभी शर्तो को पूरा नही करने वाले निविदादाता का निविदा मान्य नही होगा।

समादेष्टा
आई0आर0बी0–04, लातेहार।

PR 309974 (Police) 23-24 (D)

खगोलीय घटना | मेष, वृषभ, मिथुन, कन्या, धनु मकर वालों के लिए बहुत शुभ होगा

भारत में आंशिक चंद्र ग्रहण का सूतक होगा मान्य

नवीन मेल संवाददाता। लोहरदगा

इस साल का दूसरा और अंतिम चंद्र ग्रहण शरद पूर्णिमा को लग रहा है। यह ग्रहण शनिवार की रात 1 बजकर 5 मिनट से शुरू होकर 2 बजकर 23 मिनट तक रहेगा। चंद्र ग्रहण के ठीक 9 घंटे पहले सूतक काल शुरू होगा। इस दौरान सभी मंदिरों के पट बंद कर दिए जाएंगे। सूतक के दौरान किसी भी तरह की पूजा और अनुष्ठान नहीं किए जाते हैं। चंद्रग्रहण का सूतक काल दोपहर 4:05 मिनट से शुरू हो जाएगा। ज्योतिषाचार्य रामाधार पाठक ने बताया कि यह आंशिक चंद्र ग्रहण होगा। यह भारत में भी दिखाई देगा और इसलिए इसको सूतक काल भी माना जाएगा। यह चंद्र ग्रहण भारत समेत एशिया, ऑस्ट्रेलिया, यूरोप, नॉर्थ अमेरिका, साउथ अमेरिका के अधिकतर हिस्सों में और हिंद महासागर, पेसिफिक, अटलांटिक, आर्कटिक और अंटार्कटिका में भी दिखाई देगा। इस दौरान विशेष सावधानी बरते की जरूरत होगी।

इस राशि में लगेगा ग्रहण

29 अक्टूबर को लगने वाला यह चंद्र ग्रहण मेष राशि में लगेगा। ग्रहण के दौरान चंद्रमा मेष राशि में रहेंगे। चंद्रमा के मेष राशि में रहने के साथ इस राशि में पहले से ही गुरु और राहु ग्रह उपस्थिति होंगे। वैदिक ज्योतिषाचार्य पाठक के अनुसार ग्रहण के शुभ-अशुभ प्रभाव सभी राशि के जातकों पर पड़ेंगे। साल का आखिरी चंद्र ग्रहण मेष, वृषभ, मिथुन, कन्या, धनु और मकर वालों के लिए बहुत शुभ रहने वाला है। यह ग्रहण इन राशि के जातकों को बहुत लाभ पहुंचाने वाला है। इन राशि के लोगों के सारे रुके हुए काम जल्द ही पूरे हो

जाएंगे। आपके मान-सम्मान में बढ़ोतरी होगी। अचानक से धन लाभ हो सकता है। कार्यक्षेत्र में कई उपलब्धियां प्राप्त होगी। नौकरी में प्रमोशन और वेतन वृद्धि के योग बनेंगे। शरद पूर्णिमा पर ग्रहण होने से इसका सूतक दोपहर 4.05 से ही शुरू हो जाएगा। शास्त्रों में सूतक के समय पूजा-पाठ करना, मंदिर में दर्शन करना, खाना बनाना और खाना मना किया गया है। इस वजह शरद पूर्णिमा से जुड़े शुभ काम 28 की दोपहर के बाद करना संभव नहीं है। इसलिए शरद पूर्णिमा से जुड़ी परंपराएं एक रात पहले यानी आश्विन शुक्ल चतुर्दशी (27 अक्टूबर) की रात निभा सकते हैं। बद्रीनाथ धाम में भी शरद पूर्णिमा से जुड़ी पूजा-पाठ 27 तारीख को ही की जाएगी। पूर्णिमा पर ग्रहण होने से रात में इस पर्व से जुड़ी पूजा-पाठ नहीं हो सकेंगे, न ही खीर नहीं बनाई जा सकेगी। 27 अक्टूबर को चतुर्दशी तिथि पर चंद्रमा की पूर्णिमा से सिर्फ एक कला कम रहेगी, इसलिए पूर्णिमा से एक रात पहले खीर बनानी चाहिए और भगवान को भोग लगाना चाहिए। उज्जैन के बड़ा गणपति मंदिर में भी 27 अक्टूबर की रात शरद पूर्णिमा के आयोजन होंगे। वहीं वृंदावन के चंद्रोदय मंदिर, इस्कॉन में शरद पूर्णिमा पर ग्रहण होने से एक दिन बाद यानी 29 अक्टूबर को इस पर्व से जुड़ी पूजा-पाठ की जाएगी।

चंद्र ग्रहण के सूतक के समय क्या करें क्या न करें

चंद्र ग्रहण का सूतक ग्रहण शुरू होने से ठीक 9 घंटे पहले शुरू हो जाता है और ग्रहण खत्म होने तक रहता है। इस समय में पूजा-पाठ, मंदिर दर्शन, विवाह, गृह प्रवेश, मुंडन, व्यापार प्रारंभ जैसे शुभ काम नहीं किए जाते हैं। इसी वजह से सूतक शुरू होते ही सभी मंदिर बंद कर दिए जाते हैं। ग्रहण खत्म होने के बाद मंदिर की शुद्धि होती है, इसके बाद भक्तों के लिए मंदिर खोले जाते हैं। सूतक काल में देवी देवताओं के मंत्रों का जप करना चाहिए। दान-पुण्य कर सकते हैं।

गागर में सागर

यूबीआई का दूसरी तिमाही का मुनाफा लगभग दोगुना होकर 3,511 करोड़ रुपए

नई दिल्ली। यूनियन बैंक ऑफ इंडिया (यूबीआई) ने शुक्रवार को बताया कि ब्याज आय में सुधार के कारण सितंबर तिमाही में उसका शुद्ध लाभ लगभग दोगुना होकर 3,511 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। बैंक ने एक साल पहले इसी तिमाही में 1,848 करोड़ रुपए का शुद्ध लाभ दर्ज किया था। यूबीआई ने शेयर बाजार को बताया कि चालू वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में उसकी कुल आय बढ़कर 28,282 करोड़ रुपए हो गई, जो एक साल पहले इसी अवधि में 22,958 करोड़ रुपए थी। बैंक का परिचालन लाभ बढ़कर 7,221 करोड़ रुपए हो गया, जो एक साल पहले इसी तिमाही में 6,577 करोड़ रुपए था। समीक्षाधीन तिमाही के अंत में सकल गैर-निष्पादित संपत्ति (एनपीए) एक साल पहले के 8.45 प्रतिशत से घटकर 6.38 प्रतिशत रहा। इसी तरह, शुद्ध एनपीए या खराब ऋण घटकर 1.30 प्रतिशत रह गया, जो एक साल पहले इसी अवधि में 2.64 प्रतिशत था।

आरबीआई का सेविंगबॉन्ड दे रहा तगड़ा रिटर्न सुरक्षित रहेगा पैसा, इस का ब्याज 8.05 फीसदी है

नई दिल्ली। अगर आप भी अपने सेविंग को निवेश करना चाहते हैं और किसी ऐसी प्लेटफॉर्म की तलाश कर रहे हैं, जहां आपका पैसा भी सिक्योर रहे और आप ज्यादा रिटर्न भी मिले तो आरबीआई का फ्लोटिंग रेट सेविंग बॉन्ड में निवेश कर सकते हैं। यहां कई बैंकों के फिक्स्ड डिपॉजिट से भी ज्यादा रिटर्न मिल रहा है। आरबीआई का फ्लोटिंग रेट सेविंग बॉन्ड का ब्याज 8.05 फीसदी है। निवेश करने से पहले इसके कुछ फीचर के बारे में जान लेना चाहिए। भारत सरकार की ओर से आरबीआई फ्लोटिंग रेट सेविंग बॉन्ड को जारी किया गया है। यह सात साल की मैच्योरिटी टाइम के साथ आता है। यह नॉन ट्रेडेड बॉन्ड है, जिसके तहत गारंटीड ब्याज मिलता है। इसके तहत ब्याज निश्चित नहीं होता है। यह केंद्र सरकार द्वारा दी जाने वाली एक छोटी बचत योजना, राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र (एनएससी) की ब्याज दर से जुड़ा हुआ है। भारतीय रिजर्व बैंक के इस बॉन्ड के तहत ब्याज बदलता रहता है। हालांकि यह एक सिक्योर निवेश बॉन्ड है। इस बॉन्ड का ब्याज छोटी बचत योजना के ब्याज की तिमाही समीक्षा के आधार बॉन्ड का ब्याज तय किया जाता है। वहीं एनएससी से 0.35 फीसदी ज्यादा ब्याज इस बॉन्ड के तहत दिया जाता है।

विदेशों में जमकर हो रही आम की मांग 19%बढ़ गया भारत से निर्यात

नई दिल्ली। भारत के आम की मिठास दुनियाभर में बढ़ती जा रही है। वित्त वर्ष 2023-24 के अप्रैल से अगस्त महीने के दौरान भारत से विदेशों में निर्यात किए जाने वाले आम में 19 फीसदी का उछाल देखने को मिला है। इस अवधि के दौरान भारत ने कुल 47.98 मिलियन डॉलर का आम निर्यात किया है। जबकि 2022-23 के इसी अवधि के दौरान भारत ने कुल 40.33 मिलियन डॉलर का आम निर्यात किया था। वाणिज्य मंत्रालय ने भारत से आम के निर्यात किए जाने वाले आम को लेकर डेटा जारी किया है। मंत्रालय ने बताया कि कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के साथ मिलकर एपीईडीए ने अप्रैल से अगस्त 2023 के दौरान कुल 27,330 टन आम का एक्सपोर्ट किया है, जो एक साल पहले की अवधि में 22,963.78 टन था। इन पांच महीनों में सबसे ज्यादा आम का निर्यात अमेरिका को किया गया है। अमेरिका को कुल 2043.60 टन आम का निर्यात किया गया है, जो पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 19 प्रतिशत अधिक है। इसके अलावा जापान को 43 टन, दक्षिण अफ्रीका को 4.44 टन, ऑस्ट्रेलिया को 58.42 टन, न्यूजीलैंड को 111 टन आम का निर्यात किया गया। इसके अलावा ईरान, नाइजीरिया, चेक रिपब्लिक, मारीशस को निर्यात किया गया है। कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय और एपीडा ने संयुक्त रूप से दक्षिण कोरिया के निरीक्षकों को वहां निर्यात के लिए आम के क्लीरेंस के लिए आमंत्रित किया। इसके चलते भारत को 18.43 मीट्रिक टन दक्षिण कोरिया को आम निर्यात करने की इजाजत मिली।

भारत-सऊदी रणनीतिक संबंधों में अभूतपूर्व हुई वृद्धि

दुबई। सऊदी अरब और भारत गणराज्य ने ऊर्जा, व्यापार, बुनियादी ढांचे के विकास, चिकित्सा अनुसंधान, लोगों के आदान-प्रदान, रक्षा सहयोग और सुरक्षा सहित विविध क्षेत्रों में द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाने की दिशा में एक अच्छी तरह से योजनाबद्ध यात्रा शुरू की है। भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के गतिशील नेतृत्व द्वारा पिछले कुछ वर्षों में भारत-सऊदी अरब द्विपक्षीय संबंधों में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई है। नरेंद्र मोदी और क्राउन प्रिंस और सऊदी अरब के प्रधान मंत्री मोहम्मद बिन सलमान के अलावा, दोनों देश जीसीसी और जी20 सहित अंतर-क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्लेटफार्मों पर मिलकर काम कर रहे हैं। भारत की व्यापार पहुंच तेजी से मध्य पूर्व के साथ उसके गहरे होते संबंधों का केंद्रबिंदु बन रही है। एक ऐसा रिश्ता जो दो क्षेत्रों की आबादी के लिए विश्वास, आपसी सम्मान और विकास पर आधारित है। सऊदी अरब के साथ भारत के संबंधों में भी हाल के वर्षों में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई है, जो व्यापार और अन्य निवेशों में उल्लेखनीय वृद्धि से चिह्नित है। सऊदी अरब के प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभाव, मध्य पूर्व में इसका महत्वपूर्ण स्थान और कनेक्टिविटी लागत प्रभावी नवीन प्रौद्योगिकियां प्रदान करने की भारत की अद्वितीय क्षमता से पूरित हैं। इसके अलावा, पर्याप्त मानव संसाधन, पूंजी और विपणन अवसर उनके सहजीवी द्विपक्षीय संबंधों में योगदान करते हैं।

केन्द्र सरकार अगले सप्ताह तक जारी करेगी पीएम ई-बस सेवा

एजेंसी। नई दिल्ली

पीएम-ई बस सेवा के तहत 3000 इलेक्ट्रिक बसों की निविदा अगले सप्ताह जारी की जाएगी। यह जानकारी केंद्रीय आवास व शहरी मामलों के मंत्री हरदीप सिंह पुरी और आवास व शहरी मामलों के मंत्रालय के सचिव मनोज जोशी ने शुक्रवार को दी। पुरी ने अर्बन मोबिल्टी इंडिया कॉन्फ्रेंस ऐंड एक्सपो 2023 के संवाददाता सम्मेलन में कहा कि ये निविदाएं शीघ्र ही जारी की जाएंगी। जोशी ने कहा, हमने आरएफपी (प्रस्ताव का अनुरोध) को अंतिम रूप दे दिया है। हम आंतरिक मंजूरी ले रहे हैं। लिहाजा हम अगले सप्ताह के अंत तक 3000 बसों की निविदा जारी कर सकेंगे। उन्होंने यह जानकारी भी दी कि उत्तर प्रदेश सरकार की 2000 बसों के प्रस्ताव पर कार्य जारी है। पीएम ई बस सेवा के तहत सार्वजनिक व निजी भागीदारी (पीपीपी) के तहत 169 शहरों में 10,000 इलेक्ट्रिक बसें मुहैया करवाई जाएंगी।

पुलिस अधीक्षक का कार्यालय गढ़वा

आवश्यक सूचना

(लापता पवन टोप्पो, उम्र करीब–15 वर्ष)

भण्डरिया थाना कांड सं0–61/023 दिनांक–11.09.023, धारा–363/370/374/ 371/ भा0द0वि0 एवं धारा–79 जुवेनाईल जस्टिस(केयर एंड प्रोटेक्शन ऑफ चिल्ड्रन एक्ट)–2015 के कांड के लापता पवन टोप्पो, उम्र करीब–15 वर्ष, पिता–बृजमोहन टोप्पो, ग्राम–कंजिया, थाना–भण्डरिया, जिला–गढ़वा राज्य–झारखण्ड, के रहने वाला है। कांड के वादी/लापता लड़का के पिता द्वारा बताया गया की लापता पवन टोप्पो को काम के लिये संदीप कच्छप, पिता–फिलतुस कच्छप द्वारा तिरुपति (आन्ध्रप्रदेश) ले जाकर बेचने के संबंध कांड अंकित कराया गया है। अंतिम वार लापता पवन टोप्पो द्वारा अपने परिवारजन को विजयवाड़ा स्टेशन से मो0नं0–6300849630 से कॉल किया था उसके बाद मोबाईल नं0 आज तक बन्द है। उक्त लापता लड़का पवन टोप्पो का काफी खोजबीन किया गया परन्तु अबतक पता नहीं चल सका है। अतः आम जनता से अनुरोध है कि लापता पवन के बारे में किसी भी व्यक्ति को किसी प्रकार की सूचना प्राप्त हो, तो पुलिस उपाधीक्षक (मुख्यालय) गढ़वा के मो0नं0–9431706284 अथवा पुलिस अधीक्षक, गढ़वा के मो0नं0–9431706281 पर सूचित करने का कष्ट करेंगे।

हुलिया:–
रंग– सांवला, बाला–काला एवं बड़ा
लम्बाई–05 फीट 02 इंच।
शरीर–औसत, चेहरा–हल्की मूँछ।

निवेदक,
पुलिस अधीक्षक, गढ़वा

PR 310068Police(23-24)#D

Deputy Commissioner-cum-District Magistrate, Gumla
Zila Parishad, Gumla
Ground Floor, zila Parishad Office Gumla- 835207
Email: ddcgumla2014@gmail.com
Website: www.gumla.nic.in

Tender Reference No: ……………… Date: ………

Notice

With reference to RFP published [Letter no-466 dated 21-09-2023], Zila Parishad Gumla invites proposals from NCSM-approved/empanelled/ having a direct experience working with NCSM Science Centres/Museums/ Permanent Galleries vendors for the restoration, supplying, and installation of materials and maintenance under the BOT (Build, Operate, and Transfer Model) of District Science Centre, Gumla.

In light of the above-mentioned tender opened on 26 October 2023 in front of the participating agencies by the tender committee, it was found that the few participating agencies lacked certain documents and after thorough discussion the **tender committee decided to invite second call for the above tender.**

Date for 2nd Call:

Particular	Original Date and Time
2nd call Bid Submission closing date	06.11.2023 by 11:00 AM
Bid Opening Date	06.11.2023 by 12:00 PM
Bid presentation	06.11.2023 by 03:00 PM
Financial Bidding of selected bidders	06.11.2023 by 03:30 PM

Deputy Development Commissioner
Gumla

PR 310093 (Rural Development)23-24*D

Office of the Nagar Panchayat Chhatarpur
E-Procurement Notice
NIT No:- NPC-NIT-16/2023-24

1	Name of Work	Construction & Commissioning of Fecal Sludge Treatment Plant of Capacity 10 KLD at Chhatarpur town (Jharkhand) followed by Operation and Maintenance including desludging operations for 5 years
2	Estimated Cost (INR)	Construction Cost: ₹ 2,38,31,558.00 Operation & Maintenance Cost: ₹ 1,26,22,393.00 Total: ₹ 3,64,53,951.00
3	Bid Security (INR)	₹ 3,64,540/- (Rupees Three Lakhs Sixty-Four Thousand Five Hundred Forty Only)
4	Cost of Bid Document (INR)	₹ 10,000/- (Rupees Ten Thousand Only); non-refundable
5	Time of Completion	1 year of construction which comprises 9 months of construction and 3 months of defect liability period including one month of trial run and 5 years of O&M post DLP
6	Date of e-publication of tender	28-10-2023
7	Document downloading start Date	02-11-2023
11	Bid submission end date	22-11-2023
12	Last day for the submission of Bid Security, cost of bid document	23-11-2023
13	Bid opening date (online	29-11-2023
14	Mode of Submission of Bids	e-tendering (https://Jharkhandtenders.gov.in)
15	Name &Address of office Inviting Tender	Executive Officer, Nagar Panchayat Chhatarpur
16	Helpline Number	9608834366, 7004032340, 9471125404

Note: Only e-Tender will be accepted
Complete bid document is available on website http://jharkhandtenders.gov.in)

Executive Officer
Nagar Panchayat Chhatarpur

PR 310084 District(23-24)D

रिलायंस जियो नेट प्रॉफिट 12 प्रतिशत बढ़कर 5,058 करोड़ पहुंचा

नई दिल्ली। दूरसंचार कंपनी रिलायंस जियो इन्फोकॉम का चालू वित्त वर्ष 2023-24 की दूसरी (जुलाई-सितंबर) तिमाही में एकीकृत शुद्ध लाभ करीब 12 प्रतिशत बढ़कर 5,058 करोड़ रुपये रहा। रिलायंस जियो इन्फोकॉम ने शेयर बाजार को दी जानकारी में बताया कि कंपनी का पिछले वित्त वर्ष की दूसरी तिमाही में शुद्ध मुनाफा 4,518 करोड़ रुपये रहा था। समीक्षाधीन अवधि में कंपनी की परिचालन आय 9.8 प्रतिशत बढ़कर 24,750 करोड़ रुपये हो गई। रिलायंस जियो ने देश के दूरदराज के क्षेत्रों में हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड सेवाएं प्रदान करने वाली भारत की पहली उपग्रह-आधारित गीगा फाइबर सेवा पेश की। जियो ने इंडिया मोबाइल कांग्रेस' में शुक्रवार को नए उपग्रह आधारित ब्रॉडबैंड जियो स्पेस फाइबर' को पेश किया। ह्यजियो स्पेस फाइबर' उपग्रह आधारित गीगा फाइबर प्रौद्योगिकी है। जो उन दुर्गम इलाकों में सपंर्क स्थापित करेगी जहां फाइबर केबल से ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी पहुंचाना आसान नहीं है। रिलायंस जियो इन्फोकॉम लिमिटेड के चेयरमैन आकाश अंबानी ने जियो पवेलियन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को जियो स्पेस फाइबर सहित जियो की स्वदेशी प्रौद्योगिकी और उत्पादों के बारे में बताया।

प्रपत्र VII समाहरणालय, गढ़वा
(जिला भू–अर्जन शाखा, गढ़वा)
या समाहर्त्ता या समुचित सरकार
अधिघोषणा
(अधिनियम–30/2013 की धारा–19(1) के अधीन)

अधिघोषणा संख्या 948/भू0अ0,गढ़वा, दिनांक 17/10/2023

चूंकि झारखण्ड सरकार/समाहर्त्ता को यह प्रतीत होता है कि सार्वजनिक प्रयोजनार्थ यथा परियोजना हुर मोड (गढ़वा–शाहपुर) पथ से डालटनगंज सीमा होते हुए डुमरिया डंडा तक पथ (कुल लम्बाई 19.00 कि0मी0) हेतु ग्राम–हुर, थाना नं0–328, थाना–गढ़वा, अंचल–गढ़वा सदर, जिला–गढ़वा में कुल :– **2.55** एकड़ भूमि अपेक्षित है।

इसलिए अधिघोषणा किया जाता है कि उपर्युक्त परियोजना के लिए अर्जन के अधीन एक भू–खण्ड है, जो मानक माप से कमोवेश **2.55** एकड़ है और जो ग्राम–हुर, थाना नं0–328, थाना–गढ़वा, अंचल–गढ़वा सदर, जिला–गढ़वा में है, जिसका विवरण निम्नलिखित है :–

क्र.	खाता संख्या	सर्वे प्लॉट संख्या	स्वामित्व का प्रकार	भूमि का प्रकार	अर्जन के अधीन क्षेत्रफल (एकड़ में)	पूरा पता सहित वर्तमान रैयत का नाम	सीमा (भूखंड से) उ0	द0	पू0	प0
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	38	463	रैयती	टाड़ दो	0.0100	रविन्द नाथ चौबे पिता–रघुवीर चौबे	सड़क	463	462	सिवाना
2	50	462	रैयती	टाड़ दो	0.0360	अरूण चौबे पिता–श्रीनाथ चौबे व मालती देवी पति–महेन्द चौबे	सड़क	462	464	463
3	52	461	रैयती	धान दो	0.0170	मुरारी चौबे व बसंत चौबे व देवनाथ चौबे पिता–स्व0 ईश्वर चौबे व अंकित चौबे पिता–स्व0 विजय चौबे व गौरी शंकर चौबे पिता–स्व0 महबल चौबे व विष्णुदेव चौबे पिता–स्व0 शिव चौबे	सड़क	461	459	464
4	53	459	रैयती	दोन दो	0.0480	विक्रमा चौबे पिता–स्व0 केदार चौबे	सड़क	459	458	461
5	54	458	रैयती	दोन दो	0.0310	विक्रमा चौबे पिता–स्व0 केदार चौबे	सड़क	458	456	459
6	55	456	रैयती	दोन दो	0.0280	विक्रमा चौबे पिता–स्व0 केदार चौबे	सड़क	456	450	458
7	71	450	रैयती	दोन दो	0.0720	शैलेश कुमार तिवारी पिता–स्व0 अशोक तिवारी व विनोद कुमार तिवारी व प्रमोद कुमार तिवारी पिता–राम निहोरा तिवारी	सड़क	450	419	456
8	23	419	रैयती	दोन दो	0.0300	पंकज तिवारी पिता–स्व0 नागेश्वर तिवारी				
9	23	419	रैयती	दोन दो	0.0300	शांति देवी पति–स्व0 युगल किशोर राम				
10	23	419	रैयती	दोन दो	0.0300	विजय कुमार तिवारी व मनीष कुमार तिवारी पिता–स्व0 राजेन्द तिवारी	सड़क	419	423	450
11	23	419	रैयती	दोन दो	0.0030	सतेन्द्र तिवारी व उपेन्द्र तिवारी व प्रवीण तिवारी व शैलेन्द्र तिवारी पिता–नन्द गोपाल तिवारी				
12	23	419	रैयती	धान	0.012	विनोद तिवारी वगैरह, पिता–स्व0 निहोरा तिवारी				
13	1	423	रैयती	टाड़ दो	0.223	सतेन्द्र तिवारी व उपेन्द्र तिवारी व प्रवीण तिवारी व शैलेन्द्र तिवारी पिता–नन्द गोपाल तिवारी	सड़क	423	621	419
14	23	621	रैयती	टाड़ दो	0.0100	जय प्रकाश तिवारी पिता–स्व0 हरिहर तिवारी				
15	23	621	रैयती	टाड़ दो	0.0286	गणेश तिवारी व कृष्णा तिवारी व जितेन्द्र तिवारी व धमेन्द्र तिवारी व सत्येन्द्र तिवारी पिता–स्व0 अवधेश तिवारी				
16	23	621	रैयती	टाड़ दो	0.0160	मंजू देवी पति–विजय तिवारी	सड़क	621	627	423
17	23	621	रैयती	टाड़ दो	0.0881	निर्मला कुवर पति–स्व0 दिनानाथ तिवारी व संजय तिवारी व पंकज तिवारी पिता–स्व0 नागेश्वर तिवारी व शकुंतला देवी पति–स्व0 दिनबंधु तिवारी				
18	23	621	रैयती	टाड़ दो	0.0213	सतेन्द्र तिवारी व उपेन्द्र तिवारी व प्रवीण तिवारी व शैलेन्द्र तिवारी पिता–नन्द गोपाल तिवारी				
19	20	627	रैयती	दोन दो	0.0600	जनार्दन तिवारी व नरेश तिवारी व कृष्णा तिवारी पिता–स्व0 अत्मादेव तिवारी व नीलू कुंवर पति–स्व0 राम निवास तिवारी व राम इजोर तिवारी व जय प्रकाश तिवारी पिता–स्व0 हरिहर तिवारी व गणेश तिवारी व हरे कृष्ण तिवारी व जितेन्द्र तिवारी व धमेन्द्र तिवारी व सत्येन्द्र तिवारी पिता–स्व0 अवधेश तिवारी	सड़क	627	629	621
20	20	627	रैयती	दोन दो	0.0120	शिवनाथ तिवारी व रघुनाथ तिवारी पिता–स्व0 भगवान तिवारी				
21	63	629	रैयती	दोन दो	0.0170	देवराज चौबे व लक्ष्मी नारायण चौबे पिता–स्व0 सुदामा चौबे व प्रभाकर चौबे पिता–मनमोहन चौबे व जय प्रकाश तिवारी पिता–हरिहर तिवारी	सड़क	629	630	627
22	63	630	रैयती	दोन दो	0.1030	देवराज चौबे व लक्ष्मी नारायण चौबे पिता–स्व0 सुदामा चौबे व प्रभाकर चौबे पिता–मनमोहन चौबे व जय प्रकाश तिवारी पिता–हरिहर तिवारी	सड़क	630	632	629
23	63	632	रैयती	दोन दो	0.0400	देवराज चौबे व लक्ष्मी नारायण चौबे पिता–स्व0 सुदामा चौबे व प्रभाकर चौबे पिता–मनमोहन चौबे व जय प्रकाश तिवारी पिता–हरिहर तिवारी	सड़क	632	722	631
24	63	722	रैयती	दोन दो	0.0080	देवराज चौबे व लक्ष्मी नारायण चौबे पिता–स्व0 सुदामा चौबे व प्रभाकर चौबे पिता–मनमोहन चौबे व जय प्रकाश तिवारी पिता–हरिहर तिवारी	सड़क	722	633	632
25	19	648	रैयती	टाड़ दो	0.1250	रामकृष्ण तिवारी व कमेश कुमार तिवारी व अरविन्द तिवारी पिता–स्व0 गुप्तेश्वर तिवारी व सत्येन्द्र तिवारी पिता–नन्द गोपाल तिवारी व पुनम देवी पति–स्व0 श्याम बिहारी तिवारी	सड़क	648	649	633
26	56	649	रैयती	टाड़ दो	0.1270	मुरारी चौबे व बसंत चौबे व देवनाथ चौबे पिता–स्व0 ईश्वर चौबे व विशुनदेव चौबे वगैं0 पिता–शिवदत्त चौबे व बबिता देवी पति–स्व0 विजय चौबे व गौरी चौबे पिता–स्व0 महाबली चौबे व देवदत्त चौबे वगैं0 पिता–स्व0 जित नारायण चौबे व सत्येन्द्र तिवारी व उपेन्द्र तिवारी व प्रवीण तिवारी व शैलेन्द्र तिवारी पिता–नन्द गोपाल तिवारी	सड़क	649	पतरीया	648
27	117	388	रैयती	दोन दो	0.0070	व्रजेश चौबे व संतोष चौबे व शिशिर चौबे व हेमंत चौबे पिता–लखपति चौबे	388	सड़क	389	सिवाना
28	71	389	रैयती	दोन दो	0.0110	विनोद तिवारी व प्रमोद तिवारी पिता–स्व0 राम निरोहा तिवारी व शैलेष कुमार तिवारी पिता–अशोक तिवारी	389	सड़क	390	388
29	50	390	रैयती	दोन दो	0.0450	कृष्ण कुमार तिवारी व विजय तिवारी पिता–स्व0 राजेन्द तिवारी व मनिष तिवारी वगैं0 पिता–स्व0 अरूण तिवारी	390	सड़क	391	389
30	54	391	रैयती	दोन दो	0.0190	संतोष चौबे पिता–सच्चिदानन्द चौबे	391	सड़क	392	390
31	55	392	रैयती	दोन दो	0.0090	संतोष चौबे पिता–सच्चिदानन्द चौबे	392	सड़क	394	391
32	53	394	रैयती	दोन दो	0.0360	अयोध्या चौबे पिता–जिवोधन चौबे	394	सड़क	395	392
33	52	395	रैयती	दोन दो	0.0610	संतोष चौबे पिता–सच्चिदानन्द चौबे	395	सड़क	691	394
34	71	417	रैयती	टाड़ दो	0.0035	शांति देवी पति–स्व0 युगल किशोर राम				
35	71	417	रैयती	टाड़ दो	0.0100	विन्दा देवी पति–रामानन्द तिवारी	417	सड़क	418	691
36	71	417	रैयती	टाड़ दो	0.1325	विनोद तिवारी व प्रमोद तिवारी पिता–स्व0 राम निरोहा तिवारी व शैलेश कुमार तिवारी पिता–अशोक तिवारी				
37	73	418	रैयती	टाड़ दो	0.0130	शांति देवी पति–युगल किशोर राम	418	सड़क	699	417
38	3	413	रैयती	दोन दो	0.1230	जनार्दन तिवारी व नरेश तिवारी व कृष्णा तिवारी पिता–स्व0 अत्मादेव तिवारी व नीलू कुंवर पति–स्व0 राम निवास तिवारी व राम इजोर तिवारी व जय प्रकाश तिवारी पिता–स्व0 हरिहर तिवारी व गणेश	413	सड़क	347	499
						तिवारी व हरे कृष्ण तिवारी व जितेन्द्र तिवारी व धमेन्द्र तिवारी व सत्येन्द्र तिवारी पिता–स्व0 अवधेश तिवारी				
39	3	413	रैयती	दोन दो	0.0150	कृष्ण कुमार तिवारी व विजय कुमार तिवारी पिता–स्व0 राजेन्द्र तिवारी व मनीष तिवारी वगैं0 पिता–स्व0 अरूण तिवारी व निर्मला कुंवर पति–स्व0 दिनानाथ तिवारी व सकुंतला देवी पति–स्व0 दीनबंधु तिवारी व संजय तिवारी व पंकज तिवारी पिता–स्व0 नागेश्वर तिवारी				
40	3	413	रैयती	दोन दो	0.0150	कृष्ण कुमार तिवारी व विजय कुमार तिवारी पिता–स्व0 राजेन्द्र तिवारी व मनीष तिवारी वगैं0 पिता–स्व0 अरूण तिवारी व निर्मला कुवर पति–स्व0 दिनानाथ तिवारी व सकुंतला देवी पति–स्व0 दीनबंधु तिवारी व संजय तिवारी व पंकज तिवारी पिता–स्व0 नागेश्वर तिवारी				
41	109	347	रैयती	दोन दो	0.0250	जनार्दन तिवारी व नरेश तिवारी व कृष्णा तिवारी पिता–स्व0 अत्मादेव तिवारी व नीलू कुंवर पति–स्व0 राम निवास तिवारी व राम इजोर तिवारी व जय प्रकाश तिवारी पिता–स्व0 हरिहर तिवारी व गणेश तिवारी व हरे कृष्ण तिवारी व जितेन्द्र तिवारी व धमेन्द्र तिवारी व सत्येन्द्र तिवारी पिता–स्व0 अवधेश तिवारी	347	सड़क	343	413
42	109	347	रैयती	दोन दो	0.031	शिवनाथ तिवारी वो रघुनाथ तिवारी, पिता–स्व0 भगवान तिवारी				
43	111	343	रैयती	टाड़ दो	0.0760	सुरेश तिवारी व ओंकार तिवारी पिता–स्व0 रामदेव तिवारी व सकुंतला देवी पति–स्व0 उमेश तिवारी	343	सड़क	334	347
44	26	334	रैयती	टाड़ दो	0.0880	प्रहलाद चौबे व प्रेम नारायण चौबे व त्रिपुरेश्वर चौबे व प्रदीप कुमार चौबे व संजय कुमार चौबे पिता–स्व0 रामचन्द्र चौबे अरविन्द कुमार चौबे व दशिक्षा चौबे पिता–स्व0 शालीग्राम चौबे	334	सड़क	333	343
45	30	333	रैयती	टाड़ दो	0.0340		333	सड़क	331	334
46	63	331	रैयती	टाड़ दो	0.0340	देवराज चौबे व लक्ष्मीनाथ चौबे व प्रभाकर चौबे व जय प्रकाश पिता–स्व0 हरिहर तिवारी	331	सड़क	332	333
47	30	332	रैयती	टाड़ दो	0.0170		332	सड़क	330	331
48	56	330	रैयती	टाड़ दो	0.0400	राम नरेश चौबे व रामाकान्त चौबे पिता–स्व0 बलीराम चौबे				
49	56	330	रैयती	टाड़ दो	0.0160	सुर्यमणि तिवारी पिता–स्व0 चन्द्रिका तिवारी				
50	56	330	रैयती	टाड़ दो	0.0210	बिन्दा देवी पति–स्व0 रामानन्द तिवारी				
51	56	330	रैयती	टाड़ दो	0.0500	विनय तिवारी व उनय तिवारी व ओम प्रकाश तिवारी पिता–स्व0 श्याम नारायण तिवारी व विश्वास तिवारी पिता–स्व0 मुंशी तिवारी	330	सड़क	310	332
52	56	330	रैयती	टाड़ दो	0.0510	राम निवास तिवारी व शशिभूषण तिवारी पिता–स्व0 राजनाथ तिवारी				
53	56	330	रैयती	टाड़ दो	0.0460	मनोज चौबे व योगेन्द चौबे व जितेन्द कुमार चौबे पिता–स्व0 गणेश चौबे				
54	56	310	रैयती	टाड़ दो	0.0890	कृष्ण कुमार तिवारी व विजय कुमार तिवारी पिता–स्व0 राजेन्द्र तिवारी व मनीष तिवारी वगैं0 पिता–स्व0 अरूण तिवारी व निर्मला कुंवर पति–स्व0 दिनानाथ तिवारी व सकुंतला देवी पति–स्व0 दीनबंधु तिवारी व संजय तिवारी व पंकज तिवारी पिता–स्व0 नागेश्वर तिवारी	310	सड़क	303	330
55	16	416	रैयती	टाड़ दो	0.0120	राम करेश तिवारी व कमख्या तिवारी व कमेश तिवारी व अरविन्द तिवारी पिता–स्व0 गुप्तेश्वर तिवारी व पुनम कुंवर पति–स्व0 श्याम किशोर तिवारी				
56	50	303	रैयती		0.134	कृष्ण कुमार तिवारी, वगैं0, पिता– राजेन्द्र तिवारी				
57	56	307	रैयती		0.06	कृष्ण कुमार तिवारी वगैं0, पिता–राजेन्द तिवारी, वो निर्मला कुंवर, पति–स्व0 दिनानाथ तिवारी, व शकुन्तला तिवारी, पति– स्व0 दीनबंधु तिवारी वो पंकज तिवारी वगैं0, पिता–सिद्धेश्वरी तिवारी				
				कुल :–	2.5500					

यह अधिघोषणा हितबद्ध व्यक्तियों की आपत्तियों के सुनने और अधिनियम सं0–30/2013 की धारा 15 में प्रदत्त यथा उपबंधित सम्यक जांच के पश्चात् किया गया है। भूमि अर्जन के कारण पुनर्व्यवस्थापन के लिए संभावित परिवारों की संख्या :– शून्य,

जिनके लिए पुनर्व्यवस्थापन के क्षेत्र चिन्हित किए गए है, जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नवत है :– ग्राम–हुर, थाना नं0–328, थाना–गढ़वा, अंचल–गढ़वा, जिला–गढ़वा, क्षेत्रफल– 0, एकड़– 0, जिला भूमि अर्जन पदाधिकारी, गढ़वा के कार्यालय में किसी कार्य दिवस के दिन भूमि योजना का निरीक्षण किया जा सकता है।

पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन योजना के सार नीचे दिये गये है :– शून्य

PR 310062 Land Reforms(23-24)D

उपायुक्त, गढ़वा।

एक नजर इधर भी

प्याज ने दिखाया दम महंगाई का फोड़ा बम

भारत में नवरात्र के 9 दिन धूमधाम से चलने वाले इस महापर्व में ज्यादातर हिंदू परिवारों में इन दिनों में व्रत रखे जाते हैं और प्याज लहसुन आदि कुछ सब्जियों व वस्तुओं का सेवन नहीं किया जाता जिसके कारण इनके दाम कम हो जाते हैं या स्थिर रहते हैं, क्योंकि इनका इस्तेमाल नहीं होने से खपत बहुत कम हो जाती है, और प्याज की कीमतें अनेको दिनों तक कम ही रहती है, परंतु इस बार नवरात्रा समाप्त होने के दूसरे दिन ही प्याज की कीमतों में भारी बढ़ोतरी के साथ ग्राफ बढ़ता जा रहा है। जब मैं नवरातत्रा समाप्ति के दूसरे दिन सब्जी मंडी में गया तो प्याज का भाव सुनकर स्तब्ध रह गया क्योंकि नवरात्रा के एक दिन पहले ही मैं 26 रुपए प्रति किलो के रेट से प्याज खरीदे थे, इस महंगाई का कारण मेरी समझ से परे है! सब्जी वाले से बात करने पर उन्होंने बताया कि इस बार प्याज 100 रुपए प्रति किलोग्राम से अधिक तक जाने की संभावना है। हालांकि सरकार ने दिनांक 19 अगस्त 2023 को वित्त मंत्रालय राजस्व विभाग द्वारा अधिसूचना क्रमांक 47/2023 सीमाशुल्क जारी कर प्याज के निर्यात पर 40 प्रतिशत शुल्क लगा दिया है जो तत्काल प्रभाव से 31 दिसंबर 2023 तक जारी रहेगा, क्योंकि एक जानकारी के अनुसार जनवरी : मार्च 2023 में प्याज का निर्यात 8.2 लाख टन रहा जबकि यही पिछली अवधि यानें जनवरी-मार्च 2022 में 3.8 लाख टन था। भारत में टमाटर और प्याज को स्वाद याने टेस्ट की चाबी माना जाता है जो भोजन रूपी दरवाजे और उसके स्वाद को प्याज टमाटर रूपी चाबी से खोला जाता है। यानें यह दोनों नहीं रहे तो मेरा मानना है कि अमीर से गरीब व्यक्ति तक को भोजन के स्वाद में कुछ ना कुछ कमीं महसूस करने को मिल जायेगी, इसका अनुभव घर के होम मिनिस्टर यानें महिलाओं को अधिक अनुभव होना लाजमी है, क्योंकि बिना प्याज टमाटर के सब्जी बनाना कितना मुश्किल होता है इनसे अधिक कोई नहीं जान सकता। क्योंकि यदि सब्जी में प्याज किसी को वर्जित है तो उसका अल्टरनेट टमाटर है और टमाटर का अल्टरनेट प्याज है, यदि दोनों ही नहीं हो तो स्वाद की चाबी गुम समझो ! चूंकि अभी प्याज एकाएक 60 -70 रुपए प्रति किलोग्राम हो गये हैं इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी और मेरी ग्राउंड रिपोर्टिंग के आधार पर हम चर्चा करेंगे वाह प्याज ! अब आंसुओं के सरताज। साथियों बात अगर हम प्याज की महंगाई के क्रमिक रूप से बढ़ती भारी कीमतों को समझने की करें तो, टमाटर के बाद प्याज ने रुलाने की प्लानिंग शुरू कर दी है। बीते 15 दिनों में लासलगांव एपीएमसी में प्याज की थोक कीमतों में 58 फीसदी का इजाफा हो चुका है। खास बात तो ये है पिछले हफ्ते ही प्याज की कीमत में 18 फीसदी का इजाफा हुआ है। दिसंबर महीने तक प्याज के दाम में तेजी देखने को मिल सकती है। दो दिन पहले तक, लासलगांव मार्केट में में प्याज की औसत कीमत 38 रुपए प्रति किलोग्राम थी, जो दो सप्ताह पहले 24 रुपए प्रति किलोग्राम से 58 प्रतिशत अधिक है। इससे पहले जुलाई और अगस्त के महीने में टमाटर की कीमत आसमान पर पहुंच गई थी। जिसकी वजह से आम लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा था। महंगाई की वजह से सरकार के माथे पर बल पड़ने शुरू हो गये थे। अब प्याज रुलाने की तैयारी कर रहा है। देश की राजधानी दिल्ली में प्याज की खुदरा कीमतें 25-50 फीसदी तक बढ़ गई हैं। फिलहाल प्याज 60-70 रुपये किलो बिक रहा है। बुधवार को दिल्ली के साथ-साथ महाराष्ट्र के कुछ बाजारों में अच्छी क्वालिटी वाले प्याज की उच्चतम कीमत 70 रुपए प्रति किलोग्राम तक पहुंच गई। अहमदनगर में, 10 दिनों में प्याज की औसत कीमतें लगभग 35 रुपए प्रति किलो से बढ़कर 55 रुपए प्रति किलो हो गई हैं। इसी तरह, महाराष्ट्र के अधिकांश प्याज उत्पादक जिलों में प्याज की थोक कीमतें अब 45 से 48 रुपए प्रति किलोग्राम के बीच है।

■ किशन भावनानी गोंदिया

अमरत्व का संधान है देव भाषा संस्कृत

अंग्रेजी आग्रही लोगों के लिए शुभ सूचना नहीं है। लेकिन संस्कृत प्रेमी प्रसन्न हैं। लिथुआनिया यूरोप का विकसित और समृद्ध देश है। उत्तर-पूर्वी यूरोप में बाल्टिक सागर के किनारे स्थित यह देश संप्रति संस्कृत भाषा के आकर्षण में है। जर्मन विद्वान मैक्समूलर संस्कृत और ऋग्वेद पर मोहित थे ही। विलियम जोन्स भी संस्कृत प्रेमी थे। अब लिथुआनिया ने विश्वास प्रकट किया है कि इसकी भाषा और संस्कृति का जुड़ाव भारत की भाषा संस्कृत से है। लिथुआनिया में संस्कृत के विद्वान विटिस विदुनस भारत आये हैं। वे विल्नियस यूनिवर्सिटी के एशियन एवं बहुसांस्कृतिक अध्ययन विभाग में प्रतिष्ठित विद्वान हैं। उन्होंने राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में एक भाषण दिया है। उन्होंने भारत और लिथुआनिया में भाषाई समानता के तथ्य सामने रखे। लिथुआनिया आगे शोध करना चाहता है। कार्यक्रम में भारत लिथुआनिया की राजदूत डायना मिकेविसीन भी मौजूद थीं। उन्होंने कहा कि संस्कृत, लिथुआनियाई भाषा की करीबी बहन है। उन्होंने जानकारी दी कि भारत में लिथुआनिया के दूतावास ने देशभर में दोनों भाषाओं के सम्बंधों की पहचान के लिए प्रयास प्रारम्भ किये हैं। उन्होंने बताया कि दोनों भाषाओं की समानताएं शब्दावली तक ही सीमित नहीं है। व्याकरण की संरचना में भी समानताएं हैं। भारत में ज्ञान, विज्ञान, अर्थशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, नाटक, संगीत, कला, योगदर्शन और अनुभूति की भाषा संस्कृत है। पाली प्राकृत और अपभ्रंश होते हुए हिन्दी का विकास हुआ। अनेक भाषा विज्ञानी विकास क्रम में भिन्न मत भी रखते हैं। लेकिन प्राकृत के वैयाकरण वररूचि ने लिखा है 'प्रकृतिः संस्कृंत/ तस्मादुदभूतं प्राकृतं।' संस्कृत प्रकृति है। प्राकृत उसी से प्रकट हुई है। भारतीय संस्कृति का विकास और कथन संस्कृत में हुआ था। हिन्दी ने उसे आगे बढ़ाया। संस्कृत को मृतभाषा कहने वाले मित्र दयनीय हैं। भाषा कभी नहीं मरती। उसे बोलने वाले ही भाषा प्राणतेज रहित होते हैं। हिन्दी संस्कृत की उत्तराधिकारी है। बेशक विदेशी सत्ता ने संस्कृति व संस्कृत को दुर्बल बनाया लेकिन संस्कृत को मिटाया नहीं जा सकता। संस्कृत अमरत्व का संधान है। यूरोपीय सभ्यता का केन्द्र ईसाईयत है। ईसाईयत का विरोध या ईसाईयत की निकटता दोनों परस्पर पूरक हैं। भारतीय सभ्यता सोच विचार और चिन्तन का केन्द्र वैदिक दर्शन है। वैचारिक विविधता तर्क प्रतितर्क और सतत शोध इस संस्कृति की प्रकृति है। संस्कृत हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में शोध और बोध की विरासत है। अंग्रेजी ऐसी अनुभूति नहीं देती। लेकिन भारत में अंग्रेजी की ठसक है। अनेक हिन्दी विद्वान भी अंग्रेजी को अंतरराष्ट्रीय भाषा मानते हैं। गांधी जी हिन्दी लिखने बोलने में कठिनाई अनुभव करते थे। उन्होंने समर्थकों से कहा था 'अंग्रेजी की कोई जरूरत नहीं। वायसराय से भी अपनी भाषा में बात करो।' बंकिम चन्द्र भारतीय भाषाओं के प्रेमी थे। उन्होंने लिखा, 'हम चाहे कितनी ही अंग्रेजी लिख पढ़ लें, अंग्रेजी हमारे लिए मरे

जर्मन विद्वान मैक्समूलर संस्कृत और ऋग्वेद पर मोहित थे ही। विलियम जोन्स भी संस्कृत प्रेमी थे। अब लिथुआनिया ने विश्वास प्रकट किया है कि इसकी भाषा और संस्कृति का जुड़ाव भारत की भाषा संस्कृत से है। लिथुआनिया में संस्कृत के विद्वान विटिस विदुनस भारत आये हैं। वे विल्नियस यूनिवर्सिटी के एशियन एवं बहुसांस्कृतिक अध्ययन विभाग में प्रतिष्ठित विद्वान हैं।

इन दिनों

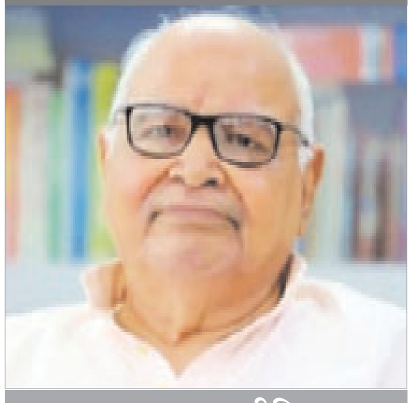

हृदयनारायण दीक्षित

हुए शेर की खाल ही सिद्ध होगी। हम उसे पहनकर सिंह गर्जना नहीं कर सकते।' अंग्रेजी ने हम सबके भीतर आत्महीन भाव पैदा किया है। अंग्रेजी संस्कारों के कारण ही हम वास्तविक इतिहास बोध से दूर हैं। स्वाधीनता संग्राम के समय अंग्रेजी प्रतीकों से भारत की टक्कर थी। संस्कृत और हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं की समृद्धि समय का आह्वान है। संविधान सभा में पं. नेहरू ने भी स्वीकार किया था कि संस्कृत भारत ही नहीं एशिया के बड़े क्षेत्र में विद्वानों की भाषा थी। आज संस्कृत की स्थिति वैसी नहीं है। संस्कृतविद् प्रायः आधुनिकता की अपेक्षा से दूर है और आधुनिकता प्रेमी संस्कृत से। संस्कृत आधुनिक विज्ञान, तकनीकी, उद्यम और प्रबोधन की भाषा भी हो सकती है। प्राचीन भारत का सारा ज्ञान विज्ञान, हर्ष विषाद और प्रसाद प्रकट करने वाली भाषा आखिरकार आधुनिक जगत की लोकप्रिय भाषा क्यों नहीं हो सकती? चुनौती बड़ी है। संस्कृत जैसा पूर्ण अनुशासन किसी भी भाषा में नहीं है लेकिन संस्कृत कालवाह्य घोषित हो रही है। हम विशिष्ट संस्कृति के कारण ही विश्व के अद्वितीय राष्ट्र हैं। संस्कृति और संस्कृत परस्पर एक हैं। संस्कृत और संस्कृतिनिष्ठ नया वातावरण बन रहा है। यह प्रसन्नता का विषय है। भारत में संस्कृत ही प्रार्थना की भाषा है। विवाह और अन्य संस्कारों की भी। इसी तरह मुस्लिम मित्रों के यहां संस्कार आदि की भाषा अरबी है। रोमन कैथोलिक में लैटिन है। यहूदियों में हिब्रू है। आथोर्डाक्स ईसाई ग्रीक का प्रयोग करते हैं। भिन्न-भिन्न सभ्यताओं में प्रार्थना और संस्कार की भाषाएं भिन्न-भिन्न हैं। हरेक भाषा के संस्कार होते हैं। वैदिक भाषा के अपने संस्कार हैं। वैदिक समाज ने इसी भाषा को संवाद का माध्यम बनाया था। उन्होंने इसी भाषा माध्यम को समाज गठन का उपकरण भी बनाया। इसी भाषा से दैनिक जीवन के कामकाज भी किये और इसी भाषा के माध्यम से सूर्य, चन्द्र, नदी, पर्वत और वनस्पति आदि से भी संवाद बनाया। यज्ञ कर्मकाण्ड में भी इसी भाषा का प्रयोग होता। अभिनय कला भारत में ही विकसित हुई। भरत मुनि ने संस्कृत में उसे नाट्य शास्त्र बनाया। इसे नाट्यवेद की संज्ञा मिली। दर्शन भारत में देखा गया। द्रष्टा ऋषि कहे गये। 'अर्थशास्त्र' संस्कृत में ही उगा पहली बार। कौटिल्य 'अर्थशास्त्र' के प्रथम प्रवक्ता हैं। आयुर्विज्ञान भी संस्कृत में प्रकट हुआ। ज्ञान विज्ञान और कला कौशल सहित राष्ट्रजीवन के सभी अनुशासन संस्कृत में ही प्रवाहमान हुए। सामूहिक हुए। एक से अनेक हुए। अनेक से एक हुए। संस्कृत ने एक संस्कृति दी और एक संस्कृति ने एक राष्ट्र। भतृहरि ने 'शब्द और अर्थ के सभी संकल्पों और विकल्पों को व्यवहारजन्य ही बताया था। आस्था ही नहीं इहलौकिक कर्मो के संधान का उपकरण भी संस्कृत ही है। संधान जैसा शब्द दूसरी भाषा में नहीं है।

वैचारिक भाव-भूमि के प्रसंग

कई फोटो अपने में बड़ा भाव और संदेश देने वाले होते हैं। चित्रकूट में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और जगतगुरु रामभद्राचार्य की भेंट के चित्र ऐसे ही हैं। कुछ दिन पहले प्रधानमंत्री मोदी को श्रीराम मंदिर अयोध्या के लोकार्पण का आमंत्रण दिया गया। इसके बाद शुक्रवार को चित्रकूट में मोदी और रामभद्राचार्य की मुलाकात हुई। यह विलक्षण संयोग है। अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त करने में इन दोनों महानुभावों का योगदान उल्लेखनीय है। प्रधानमंत्री ने रामभद्राचार्य की तीन पुस्तकों का विमोचन भी किया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि चित्रकूट की पावन और पुण्य भूमि पर मुझे दोबारा आने का अवसर मिला है। यह अलौकिक क्षेत्र है। इसके बारे में हमारे संतों ने कहा है कि चित्रकूट सब दिन बसत प्रभु सिया लखन समेत अर्थात चित्रकूट में प्रभु श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण जी के साथ नित्य निवास करते हैं। उन्होंने चित्रकूट में कांच मंदिर (श्री रघुवीर मंदिर) में दर्शन-पूजन किया। प्रधानमंत्री ने नये सुपर स्पेशलिटी अस्पताल का शुभारंभ किया। चित्रकूट में अरविंद भाई मफतलाल की सौवीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में उन पर आधारित डाक टिकट जारी किया। रामभद्राचार्य ने श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर के संबंध में 400 से अधिक प्रमाण सुप्रीम कोर्ट को दिये थे। उन्होंने प्राचीन ग्रंथों के प्रामाणिक उद्धरण प्रस्तुत किये थे। रामभद्राचार्य ने दावे के साथ कहा था कि वाल्मीकि रामायण के बाल खंड के आठवें श्लोक से श्रीराम जन्म के बारे में जानकारी शुरू होती है। यह सटीक प्रमाण है। इसके बाद स्कंद पुराण में राम जन्म स्थान के बारे में बताया गया है। राम जन्म स्थान से तीन सौ धनुष की दूरी पर सरयू माता बह रही हैं। एक धनुष चार हाथ का होता है। आज भी यदि नापा जाय तो जन्म स्थान से सरयू नदी उतनी ही दूरी पर बहती दिखेंगी। अथर्व वेद के दशम कांड के इकतीसवें अनु वाक्य के द्वितीय मंत्र में स्पष्ट कहा गया है कि आठ चक्रों व नौ प्रमुख द्वार वाली श्री अयोध्या देवताओं की पुरी है। उसी अयोध्या में मंदिर महल है। उसमें परमात्मा स्वर्ग लोक से अवतरित हुए थे। ऋग्वेद के दशम मंडल में भी इसका प्रमाण है। तुलसी शतक में कहा गया है कि बाबर के सेनापति व दुष्ट यवनों ने राम जन्मभूमि के मंदिर को तोड़कर मस्जिद का ढांचा बनाया और बहुत से हिंदुओं को मार डाला।

अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण का मार्ग प्रशस्त करने में इन दोनों महानुभावों का योगदान उल्लेखनीय है। प्रधानमंत्री ने रामभद्राचार्य की तीन पुस्तकों का विमोचन भी किया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि चित्रकूट की पावन और पुण्य भूमि पर मुझे दोबारा आने का अवसर मिला है। यह अलौकिक क्षेत्र है।

तुलसीदास ने तुलसी शतक में इस पर दुख भी प्रकट किया है। मंदिर तोड़े जाने के बाद भी हिंदू साधु रामलला की सेवा करते थे। इस पूरे प्रसंग से रामभद्राचार्य जी की विलक्षण प्रतिभा का अनुमान लगाया जा सकता है। उनका अध्ययन अद्भुत है। जिस शिशु की दो माह बाद ही नेत्र ज्योति चली जाए, उसके लिए जीवन अंधकारमय हो जाता है। लेकिन ऐसे अनेक विलक्षण लोग हैं, जिन्होंने इस अभाव को बाधक नहीं बनने दिया। प्रबल इच्छाशक्ति के साथ उन्होंने अभाव को प्रभाव में बदल दिया। आंखें न होने के बाबजूद अपना जीवन प्रकाशित किया, साथ में समाज को भी रोशनी दिखाई। रामभद्राचार्य ऐसी ही विभूति हैं। नेत्र ज्योति चली जाने से उनके परिवार में चिंता व निराशा थी। शिशु के भविष्य को लेकर बड़ी आशंका थी। तब किसी ने यह कल्पना नहीं की होगी कि एक दिन यह बालक समाज को मार्ग दिखायेगा। श्रीराम भूमि पर उनके तर्क अकाट्य थे। सभी लोग उनके अध्ययन व ज्ञान को देखकर हतप्रभ थे। भारतीय दर्शन व प्रज्ञा का चमत्कार प्रभावित करने वाला था। ज्ञानचक्षु जीवन आलोकित हो जाता है। इसे प्रत्यक्ष देखा जा रहा था। अति विशाल भारतीय वैदिक वांग्मय के अलावा अन्य सभी ग्रन्थों की पृष्ठ संख्या तक उनकी स्मृति में थी। उन्होंने इस विलक्षण ज्ञान को अपने तक सीमित नहीं रखा, बल्कि समाज का भी वह अनवरत मार्गदर्शन कर रहे हैं। विद्या का सतत दान कर रहे हैं। वह विश्वविद्यालय के कुलाधिपति है। इस रूप में वह विद्यार्थियों को शिक्षित करते हैं। वह प्रभावी व ज्ञानवर्धक रामकथा के वाचक हैं। इस रूप में समाज को प्रभु राम की मर्यादा का संदेश देते हैं। वह तुलसीपीठ के संस्थापक और पीठाधीश्वर हैं। चित्रकूट स्थित इस संस्थान के माध्यम से केवल धार्मिक ही नहीं, सामाजिक सेवा के कार्यक्रमों का संचालन किया जाता है। वह चित्रकूट में जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय के संस्थापक कुलाधिपति हैं। यह तब है जब अभाव के कारण सत्रह वर्ष की उम्र तक उनको औपचारिक शिक्षा का अवसर नहीं मिला था। उन्होंने कभी भी ब्रेल लिपि का उपयोग नहीं किया। सत्रह वर्ष की उम्र में ही उनके अनेक ग्रन्थ कंठस्थ हो गये थे। उनका बाईस भाषाओं पर अधिकार है। अभी तक 100 से अधिक पुस्तकें लिख चुके हैं।

■ डॉ. दिलीप अग्निहोत्री

है न विचित्र बात !

डॉक्टरों पर हमला करने वालों को भेजो जेल

पिछले दिनों राजधानी में सैकड़ों डॉक्टर राजघाट पर एकत्र हुए। ये वही डॉक्टर हैं, जो जानलेवा कोरोना की दूसरी लहर के समय भगवान के दूत बनकर रोगियों का इलाज कर रहे थे। लेकिन, अब ये डरे-सहमे हुए हैं। इनके डर की वजह यह है कि इन पर होने वाले हमलों और दुर्व्यवहार के मामलों की घटनाओं में तेजी से वृद्धि हो रही है। केन्द्र सरकार से यह मांग कर रहे हैं कि वो तुरंत ही कोई सख्त कानून लेकर आये ताकि डॉक्टर बिना किसी भय भाव के काम सकें। फिलहाल तो डॉक्टरों पर हमले लगातार बढ़ते ही चले जा रहे हैं। आप स्वयं गूगल करके देख लें। आपको डॉक्टरों पर हमलों के अनगिनत मामले मिलेंगे। बेशक, डाक्टरों के साथ बदतमीजी या मारपीट करना किसी भी सभ्य समाज में सही नहीं माना जा सकता। इसकी भरपूर निंदा तो होनी ही चाहिए और जो इस तरह की अक्षम्य हरकतें करते हैं, उन्हें कठोर दंड भी मिलना चाहिए। बेशक, देशभर में हजारों-लाखों निष्ठावान डॉक्टर हैं। वे रोगी का पूरे मन से इलाज करके उन्हें स्वस्थ करते हैं। आपको पटना से लेकर लखनऊ और दिल्ली से मुंबई समेत देश के हरेक शहर और गांव में सुबह से देर रात तक कड़ी मेहनत करते हुए हजारों डॉक्टर बंधु मिल जायेंगे। इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विनय अग्रवाल भी राजघाट तक के मार्च में शामिल थे। उनकी मांग है कि डॉक्टरों पर हमले करने वालों पर पांच लाख रुपये तक का जुर्माना और तीन साल तक की कैद हो। ये सारे कदम इसलिए उठाये जाने की जरूरत है ताकि डॉक्टरों पर हमले करने के बारे में कोई सपने में भी न सोचे। ड़ॉ. विनय अग्रावल कोरोना काल में किसी फरिश्ते की तरह कोरोना की चपेट में आये लोगों को अस्पताल में बेड दिलवा रहे थे। यह उन दिनों की बातें हैं जब कोरोना के रोगियों के संबंधी अस्पतालों में बेड तलाश रहे थे। निश्चय ही उस डरावने दौर को याद करते ही दिल बैठने लगता है जब कोरोना के कारण प्रलय वाली स्थिति बन गई थी। तब कोरोना के रोगियों के इलाज करने के लिए सिर्फ डॉक्टर और उनका स्टाफ ही सामने आ रहे थे। उस भयानक दौर में डॉ. विनय अग्रवाल और उनके साथी डॉक्टर दिन-रात रोगियों का इलाज कर रहे थे। उन्होंने उस दौरान सैकड़ों कोरोना रोगियों के लिए बेड की व्यवस्था करवाई थी। आज वे ही डॉक्टर अपनी जान की रक्षा करने के लिए सरकार से गुजारिश कर रहे हैं। यह वास्तव में बेहद दुखद स्थिति है। आप कभी राजधानी में देश के चोटी के डॉ. राममनोहर लोहिया अस्पताल यानी आरएमएल में जाइये। वहां की इमरजेंसी सेवाओं में हर समय करीब एक दर्जन बलिष्ठ भुजाओं वाले बाउंसर तैनात मिलते हैं। यहां पर मरीजों के दोस्तों और रिश्तेदारों के डॉक्टरों के साथ कई बार हाथापाई करने के बाद अस्पताल मैनेजमेंट ने बाउंसरों को तैनात कर दिया है। जब से यहां पर बाउंसर रहने लगे हैं तब से अस्पताल में शांति है। वरना तो लगातार डॉक्टरों के साथ बदसलूकी और मारपीट के मामले सामने आते थे। कई बार डॉक्टरों को इलाज में कथित देरी या किसी अन्य कारण के चलते कुछ सिरफिरे लोग मारने-पीटने भी लगते थे। यहां पर कुछ महिला बाउंसर भी हैं। याद रख लें कि अगर डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में भी डॉक्टर सुरक्षित नहीं हैं तो फिर बाकी जगहों की बात करना बेकार है। इस अस्पताल में सरकारी बाबुओं से लेकर देश के सांसदों और मंत्रियों तक का इलाज होता है। कोरोना काल में यहां के डॉक्टरों ने अनगिनत लोगों की जान बचाई थी। राजधानी के ही लोकनायक जयप्रकाश नारायण अस्पताल ने भी अपने डॉक्टरों को बचाने के लिए बाउंसर रख दिये हैं।

■ आर.के. सिन्हा

बन्दूक-संस्कृति से दागदार होती अमेरिका की छवि

दुनिया में स्वयं को सभ्य एवं स्वयंभू मानने वाले अमरीका में बढ़ रही 'बंदूक संस्कृति' के साथ-साथ लोगों में बढ़ रही असहिष्णुता, हिंसक मनोवृत्ति और आसानी से हथियारों की सहज उपलब्धता का दुष्परिणाम बार-बार होने वाली दुखद घटनाओं के रूप में सामने आना चिन्ताजनक है। अमेरिका में एक हत्यारे ने गोलियां बरसाकर करीब 21 लोगों को मौत की नींद सुला दिया और कई को जख्मी कर दिया है। तीन स्थानों पर गोलीबारी करने के बाद हत्यारा घटनास्थल से भागने में सफल हुआ है। आश्चर्यकारी है कि दुनिया की सबसे दुरस्त एवं सक्षम अमेरिकी पुलिस एक हत्यारे को पकड़ने में इतनी लाचार हो गई कि उसे सहयोग के लिए आम लोगों से अपील करनी पड़ी। हिंसा की बोली बोलने वाला, हिंसा की जमीन में खाद एवं पानी देने वाला, दुनिया में हथियारों की आंधी लाने वाला अमेरिका अब खुद हिंसा का शिकार हो रहा है। अमेरिका की आधुनिक सभ्यता की सबसे बड़ी मुश्किल यही रही है कि यहां हिंसा इतनी सहज बन गयी है कि हर बात का जवाब सिर्फ हिंसा की भाषा में ही दिया जाने लगा। वहां हिंसा का परिवेश इतना मजबूत हो गया है कि वहां की बन्दूक-संस्कृति से वहां के लोग अपने ही घर में बहुत असुरक्षित हो गये थे। अमेरिका को अपनी बिगड़ती छवि के प्रति सजग होना चाहिए क्योंकि यह एक बदनुमा दाग है जो उसकी अन्तर्राष्ट्रीय छवि को आघात लगा रहा है। दुनिया में बंदूक की संस्कृति को बल देने वाले अमेरिका के लिये अब यह खुद के लिये एक बड़ी समस्या बन चुकी हैं। अमेरिका घृणा, अपराध, हिंसा और बंदूक संस्कृति के गढ़ के रूप में पहचान बना रहा है। किसी सिख या किसी मुस्लिम बच्चे की हत्या हो या किसी अश्वेत पर बर्बरता, अमेरिका की स्थिति लगातार निंदनीय, डरावनी एवं असंतुलित होती जा रही है। कोई भी सामान्य सा दिखने वाला आदमी हथियार लेकर आता है और अनेक लोगों की जान ले लेता है। नवीनतम घटना 25 अक्तूबर को देर रात 'एंड्रोस्कोगिन काऊंटी' के अंतर्गत पडने वाले लेविस्टन में हुई, इस हादसे का सबसे खराब पहलू यह है कि अनेक लोग भगदड़ की वजह से घायल हुए तो अनेक हत्यारे की गोलियों से गहरी नींद सो गये हैं। नरसंहार के कथित आरोपी 40 वर्षीय रॉबर्ट कार्ड को पुलिस ने हथियारबंद और खतरनाक व्यक्ति माना है, पर सवाल है कि क्या वह रातों-रात हत्यारा एवं हिंसक हुआ है? हत्यारा रॉबर्ट कार्ड अमेरिकी सेना से जुड़ा रहा है और आग्नेयास्त्र प्रशिक्षक है। मानसिक अस्वस्थता एवं मनो विकारों से ग्रस्त हत्यारे के खिलाफ अनेक शिकायतें पहले भी मिल चुकी थी, प्रश्न है कि उन्हें क्यों नहीं गंभीरता से लिया गया। अमेरिका में आये दिन ऐसी खबरें आती रही कि किसी सिरफिरे ने अपनी बंदूक से कहीं स्कूल में तो कभी बाजार में अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी और उसमें नाहक ही लोग मारे गये। अब तो अमेरिकी बच्चों के हाथों में भी बन्दूकें हैं। इसके पीछे एक बड़ा कारण वहां आम लोगों के लिए हर तरह के बंदूकों की सहज उपलब्धता है और इन बन्दूकों का उपयोग मामूली बातों और उन्मादग्रस्त होने पर अंधाधुंध गोलीबारी में होता रहा है, जो गहरी चिन्ता का कारण बनता रहा। आम जन-जीवन में किसी सिरफिरे व्यक्ति की सनक से किसी बड़ी अनहोनी का अन्देशा हमेशा वहां बना रहता है, वहां की आस्थाएं एवं निष्ठाएं इतनी जख्मी हो गयी कि विश्वास जैसा सुरक्षा-कवच मनुष्य-मनुष्य के बीच रहा ही नहीं। साफ चेहरों के भीतर कौन कितना बदसूरत एवं उन्मादी मन समेटे है, कहना कठिन है। अमेरिका की हथियारों की होड़ एवं तकनीकीकरण की दौड़ पूरी मानव जाति को ऐसे कोने में धकेल रही है, जहां से लौटना मुश्किल हो गया है। अब तो दुनिया के साथ-साथ अमेरिका स्वयं ही इन हथियारों एवं हिंसक मानसिकता का शिकार है। दरअसल, अमेरिका अपने यहां नफरत, मानसिक असंतुलन, विद्रोह एवं असंतोष रोकने के अभियान में नाकाम हो रहा है। एफबीआई की वार्षिक अपराध रिपोर्ट रेखांकित करती है कि बंदूक संस्कृति एवं इससे जुड़ी हिंसा बहुत व्यापक हो गई है। पिछले साल अमेरिका में लगभग पांच लाख हिंसक अपराधों में बंदूकों का इस्तेमाल किया गया था। वर्ष 2020 में बंदूक संस्कृति अमेरिकी बच्चों की मौत का मुख्य कारण बन गई और 2022 में हालात और बदतर हो गये। जान गंवाने वाले बच्चों की संख्या 12 प्रतिशत बढ़ गई। इन हालातों में अमेरिका किस तरह दुनिया का आदर्श बन सकता है। जबकि दुनिया अमेरिकी संस्कृति का अनुसरण करती है, वहीं अमेरिका तमाम देशों की सामाजिक व मानवाधिकार रिपोर्ट जारी करता है। अमेरिका अगर अपनी कथनी-करनी का भेद मिटाने की ओर बढ़े, तो उसके साथ-साथ दुनिया को ज्यादा फायदा होगा। राजनीतिक प्रेक्षकों के अनुसार अमरीका में 'बंदूक संस्कृति' बढ़ाने में वहां की नकारात्मक राजनीति की बड़ी भूमिका है। आम जनता तो हथियारों पर अंकुश लगाने के पक्ष में है परंतु अपने निहित स्वार्थों के कारण अमरीका में हथियारों को बढ़ावा देने वाली वहां की सशक्त हथियार लॉबी और राजनीति से जुड़े लोग इस पर अंकुश नहीं लगने देते। जब भी बंदूक संस्कृति पर नियंत्रण करने की बात उठती है तो हथियार रखने के संवैधानिक अधिकार की कट्टर समर्थक मानी जाने वाली 'रिपब्लिकन पार्टी' के नेता और उनके समर्थक इसके विरोध में उतर आते हैं जिनके सामने डैमोक्रेटिक पार्टी बेबस होकर रह जाती है। पिछले साल जून में भारी तादाद में लोगों ने सड़कों पर उतर कर बंदूकों की खरीद-बिक्री से संबंधित कानून को बदलने की मांग की। जरूरत इस बात की है कि इस समस्या के पीड़ितों को राहत देने के साथ-साथ बंदूकों के खरीददार से लेकर इसके निर्माताओं और बेचने वालों पर भी सख्त कानून के दायरे में लाया जाय। विडम्बना देखिये कि अमेरिका दुनिया का सबसे अधिक शक्तिशाली और सुरक्षित देश है लेकिन उसके नागरिक सबसे अधिक असुरक्षित और भयभीत नागरिक हैं। वहां की जेलों में आज जितने कैदी हैं, दुनिया के किसी भी देश में नहीं हैं। ऐसे कई वाकये हो चुके हैं कि किसी रेस्तरां, होटल या फिर जमावड़े पर अचानक किसी सिरफिरे ने गोलीबारी शुरू कर दी और बड़ी तादाद में लोग मारे गये। खुद सरकार की ओर से कराये गये एक अध्ययन में यह तथ्य सामने आया था कि अमेरिका में सत्रह साल से कम उम्र के करीब तेरह सौ बच्चे हर साल बंदूक से घायल होते हैं। अमेरिकी प्रशासन को 'बंदूक संस्कृति' ही नहीं बल्कि हथियार संस्कृति पर भी अंकुश लगाना होगा, अब तो दुनिया को जीने लायक बनाने में उसे अपनी मानसिकता को बदलना होगा। किसी भी संवेदनशील समाज को इस स्थिति को एक गंभीर समस्या के रूप में देखना-समझना चाहिए।

अमेरिका में एक हत्यारे ने गोलियां बरसाकर करीब 21 लोगों को मौत की नींद सुला दिया और कई को जख्मी कर दिया है। तीन स्थानों पर गोलीबारी करने के बाद हत्यारा घटनास्थल से भागने में सफल हुआ है। आश्चर्यकारी है कि दुनिया की सबसे दुरुस्त एवं सक्षम अमेरिकी पुलिस एक हत्यारे को पकड़ने में इतनी लाचार हो गई कि उसे सहयोग के लिए आम लोगों से अपील करनी पड़ी। हिंसा की बोली बोलने वाला, हिंसा की जमीन में खाद एवं पानी देने वाला, दुनिया में हथियारों की आंधी लाने वाला अमेरिका अब खुद हिंसा का शिकार हो रहा है।

■ ललित गर्ग

स्वामी, परिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा. लि. की ओर से इसके पब्लिकेशन डिवीजन, रेड़मा मेदिनीनगर (डालटनगंज), से हर्षवर्द्धन बजाज द्वारा प्रकाशित एवं पारिजात माइनिंग इण्डस्ट्रीज (इण्डिया) प्रा.लि. C/O शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पम्प, रातू, रांची-835222, झारखंड द्वारा मुद्रित. रजिस्ट्रेशन नं. RNI. 61316/94 पोस्टल रजिस्ट्रेशन नं.-13 । प्रधान संपादक : सुरेश बजाज, संपादक : हर्षवर्द्धन बजाज, स्थानीय संपादक : ओम प्रकाश अमरेन्द्र*, प्रेस कार्यालय : रांची रोड, रेड़मा, मेदिनीनगर, (डालटनगंज) पलामू-822102, फोन नम्बर : 07759972937, 06562-240042/ 222539, फैक्स नम्बर : 06562-241176/231257, रांची कार्यालय : 502बी, पांचवी मंजिल मंगलमूर्ति हाईट्स, रानी बगान, हरमू रोड, रांची-83001, फोन नं.- 0651-2283384/ फैक्स : 0651-2283386, दिल्ली कार्यालय : 25-एलएफ, तानसेन मार्ग, नई दिल्ली-1, गढ़वा कार्यालय : मेन रोड, गढ़वा-822114, फोन : 9430164580, लातेहार कार्यालय : रमेश सेनेटरी, मेन रोड, लातेहार -829206, फोन : 9128656020, 7763034341, लोहरदगा कार्यालय : सरस्वती निवास, तेली धर्मशाला के सामने, कृषि मार्केट। - फोन : 7903891779, 8271983099, ई-मेल : rnm_hb@yahoo.co.in, rnm.hvb@gmail.com (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार।)

सुहाग का प्रतीक लाल रंग का है विशेष महत्व

पलामू में महिलाएं करवा चौथ की तैयारियों में महीनों पूर्व से जुट जाती हैं। खास बात यह है कि करवा चौथ का व्रत दशहरे और दिवाली के बीच पड़ता है। इस समय बाजारों में बहुत ही ज्यादा चहल-पहल होती है। हर तरफ महिलाओं का बोलबाला होता है महिलाएं कहीं घर की साज सज्जा का सामान लेते तो कहीं अपने लिए नए कपड़े पसंद करते हुए देखी जा सकती है। बाजारों में नए कपड़ों की धूम मची रहती है। दुकानदार भी पर्व श्रृंखला की पहले से ही कर लेते हैं। करवा चौथ के लिए भी विशेष रूप से उपयोग में आने वाले तरह-तरह से सजाए गए करवा व छलनी बाजारों में नजर आने लगते है। महिलाएं व्रत विधि को पूरा करने के लिए पहले से ही सम्पूर्ण पूजन सामग्री के साथ खुद के सोलह श्रृंगार की सामग्रीजुटाने में लग जाती है। आधुनिक युग में तो यह त्यौहार और अधिक उत्साह व जोश के साथ मनाया जाता है। महिलाएं एक-दूसरे से अधिक सुंदर दिखने के लिए विभिन्न सौंदर्य प्रसाधनों का प्रयोग करती हैं। व्रत के लिए महिलाएं हाथों एवं पैरों पर मेहंदी लगाती हैं तथा लाल रंग के वस्त्र धारण करती हैं। वैसे तो लाल रंग इस त्योहार का मुख्य रंग है परंतु आजकल महिलाएं अपनी इच्छा को ज्यादा महत्व देती हैं तथा अपनी इच्छा अनुसार ही वस्त्र के रंग तय करती हैं। करवा चौथ से जुडी कमोबेश सभी कथाओं में पति-पत्नी के जीवन की व्याख्या की गई है। सब कथाओं का सार यही है कि यदि पत्नी अपने मन में दृढ़ निश्चय कर ले तो अपने पति को मृत्यु के मुंह से भी निकाल सकती है। वर्तमान में पतियों द्वारा पत्नियों को इस पर्व पर उपहार भी दिए जाते हैं। करवा चौथ के दिन शादीशुदा महिलाएं एवं कुंवारी लड़कियां सुबह सूर्य उगने से पहले ही सरगी खा कर अपना व्रत शुरू करती है। शादीशुदा महिलाओं के लिए सरगी उनकी सास के द्वारा बनाया जाता है। इसके बाद करवा चौथ का व्रत शुरू हो जाता है और महिला पूरा दिन निर्जला व्रत रहती है। सारा दिन पूरी भक्ति भाव के साथ भगवान का भजन एवं करवा चौथ की कथा का पाठ करती है।

❖ गुड्डू कुमार

देखते ही बनता है नवविवाहिताओं का उमंग

करवा चौथ पर्व को लेकर नवविवाहिताओं का उमंग देखते ही बनता है। शादीशुदा जोड़ों के लिए करवा चौथ का दिन उनके प्यार को और परवान चढ़ा देता है। इस दिन सुहागिन महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र के लिए व्रत रखती हैं। यह पर्व कार्तिक महीने में कृष्ण पक्ष के चौथे दिन मनाया जाता है जो आमतौर पर अक्टूबर या नवंबर के महीने में पड़ता है। इस साल करवा चौथ 1 नवंबर बुधवार को धूमधाम से मनाया जाएगा। इसको लेकर सुहागिन महिलाएं बेसब्री से इंतजार कर रही है। सुहागिन महिलाएं के लिए मेहंदी सौभाग्य की निशानी मानी जाती है। भारत में ऐसी मान्यता है कि जिस लड़की के हाथों की मेहंदी ज्यादा गहरी रचती है, उसे अपने पति तथा ससुराल से अधिक प्रेम मिलता है। लोग ऐसा भी मानते हैं कि गहरी रची मेहंदी पति की लंबी उम्र तथा अच्छा स्वास्थ्य भी दशार्ती है। मेहंदी का व्यवसाय त्योहारों के मौसम में सबसे ज्यादा फलता-फूलता है, खासतौर पर करवा चौथ के दौरान। इस समय लगभग सभी बाजारों में भीड़-भाड़ का माहौल मिलेगा। हर गली-नुक्कड़ पर मेहंदी आर्टिस्ट महिलाओं के हाथ-पांव पर तरह-तरह के डिजाइन बनाते मिल जाएंगे। जब चांद निकलता है तो सभी विवाहित स्त्रियां चांद को देखती हैं और सारी रस्में पूरी करती हैं। पूजा करने बाद वे अपना व्रत खोलती हैं और जीवन के हर मोड़ पर अपने पति का साथ देने का वादा करती हैं। चंद्रदेव के साथ-साथ भगवान शिव, देवी पार्वती और कार्तिकेय की भी पूजा की जाती है। माना जाता है कि अगर इन सभी की पूजा की जाए तो माता पार्वती के आशीर्वाद से जीवन में सभी प्रकार के सुख मिलते हैं। महाभारत में भी करवाचौथ के महात्म्य पर एक कथा का उल्लेख मिलता है। भगवान श्रीकृष्ण ने द्रौपदी को करवाचौथ की यह कथा सुनाते हुए कहा था कि पूर्ण श्रद्धा और विधि-पूर्वक इस व्रत को करने से समस्त दुख दूर हो जाते हैं व जीवन में सुख-सौभाग्य तथा धन-धान्य की प्राप्ति होने लगती है। श्री कृष्ण भगवान की आज्ञा मानकर द्रौपदी ने भी करवा-चौथ का व्रत रखा था।उस समय से करवा चौथ के दिन सुहागिन महिलाएं सूर्योदय से लेकर चंद्रोदय तक कठोर उपवास रखती हैं।

❖ सुरेन्द्र कुमार

जीवन को प्रेममय बनाता है करवा चौथ

करवा चौथ का त्योहार हर साल कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को मनाया जाता है। इस साल यह त्योहार 1 नवंबर को मनाया जाएगा। इस दिन सुहागिन महिलाएं पति की लंबी आयु के लिए उपवास रखती हैं। पूरे भारत में लगभग हर महीने कोई ना कोई त्यौहार या व्रत होते ही हैं। हमारा समाज भले ही पुरुष प्रधान है, परंतु प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति में स्त्री और पुरुष को सामान्य दर्जा देकर नारी को पूजनीय माना गया है। करवा चौथ के दिन सुहागिन महिलाएं यथासम्भव और यथाशक्ति न्यूनाधिक सोलह शृंगार से अलंकृत होकर अपने अन्तःकरण के उल्लास को प्रकट करती है। पति से स्त्री के संबंध चाहे जैसे भी क्यों न हों। उनके बीच तनाव हो अथवा कोई और समस्या चल रही है। यह पर्व उसे दूर करने का प्रमुख साधन है। इस दिन दोनों ही अपने अपने अहं को त्यागकर जीवन को प्रेममय बनाने का निश्चय करते हैं। करवा चौथ का व्रत पति और पत्नी के बीच स्नेह और प्यार को दशार्ता है। आज के समय में इसे पति दिवस भी कहा जाने लगा है। करवा चौथ के व्रत से सम्बंधित काफी कहानियाँ प्रचलित हो लोग अपनी श्रद्धा और रीति-रिवाजों के अनुसार खुशी और उत्साह से इस पर्व को मनाते हैं। इस दिन

भगवान शिव और माता पार्वती के साथ-साथ भगवान गणेश और कार्तिकेय की भी पूजा की जाती है। मां गौरी से पति और परिवार के उत्तम स्वास्थ्य और समृद्धि की कामना की जाती है। व्रती महिलाएं संपूर्ण दिन बिना पानी एवं भोजन के कठिन व्रत रखकर शुभ मुहुर्त में पूजन करती हैं। सुहाग का प्रतीक होने के कारण पर्व में लाल रंग के कपड़ों का विशेष महत्व है। शाम को पूजा के पश्चात सभी महिलाओं को चंद्र उदय की प्रतीक्षा रहती है। एक हाथ में छन्नी लेकर उससे चंद्रमा के दर्शन करते हैं एवं दूसरे हाथ से साथ ही साथ चंद्रमा को जल अर्पित करते हैं। फिर महिलाएं चंद्रमा की तरफ से छन्नी घुमाते हुए उस छन्नी से अपने-अपने पतियों के चेहरे देखती हैं एवं उनके चरण स्पर्श करती हैं। करवा चौथ दो शब्दों का मेल है जिसमें करवा का अर्थ होता है मिट्टी का बर्तन एवं चौथ का अर्थ होता है चतुर्थी इसलिए करवा चौथ के दिन विवाहित महिलाएं करवे का खास विधि विधान से पूजन करती हैं। यह व्रत पति-पत्नी के बीच के अटूट प्रेम को दशार्ता है जहां पत्नी अपने पति की लंबी आयु के लिए निर्जला होकर व्रत रहती हैं तो वही पुरुष भी अपनी पत्नी की सारी जिम्मेदारियां खुद पर लेकर हमेशा उसका ख्याल रखने का संकल्प लेते हैं। करवा चौथ का त्यौहार महिलाओं के अंदर की सहनशीलता को भी दशार्ता है। कहने के लिए तो करवा चौथ के व्रत में महिलाओं का प्रमुख योगदान होता है परंतु महिला चंद्र दर्शन के बाद खुद ही अपना व्रत नहीं खोल सकती इसके लिए इनके पति अपने हाथों से अपनी पत्नियों को जलपान व अन्न ग्रहण कराकर व्रत का पारण करते हैं।

❖ कुमारी रिया

पति-पत्नी दोनों के लिए खास महत्व रखता है करवा चौथ

ग्रामीण स्त्रियों से लेकर आधुनिक महिलाओं तक सभी नारियाँ करवाचौथ का व्रत बडी. श्रद्धा एवं उत्साह के साथ रखती हैं। करवा चौथ का त्यौहार भी हर त्योहार की भाँति कुछ न कुछ सिखाता है। जैसे वीरवती ने अपने भाइयों की बातों में आकर बहुत बड़ी भूल कर दी। इससे हमें सीख मिलती है कि एकदम किसी की बातों में नहीं आना चाहिए क्योंकि आंखों देखा भी हमेशा सच नहीं होता। करवा चौथ एक ऐसा त्यौहार है जो पति-पत्नी के प्यार को और ज्यादा बढ़ाता है। यह पर्व कहने को तो बस महिलाओं का होता है परंतु इस पर्व से कहीं न कहीं संपूर्ण परिवार का माहौल खुशहाल हो जाता है। यह पर्व रिश्तों को मजबूत बनाने वाला होता है जिस कारण यह पति-पत्नी दोनों के लिए खास महत्व रखता है। यही कारण है कि करवा चौथ वाले दिन पत्नी द्वारा अपने पति की लंबी आयु और उसकी सुख-समृद्धि के लिए की गई पूजा-अर्चना पति की जिंदगी में पत्नी की अहमियत को ओर भी ज्यादा बढ़ा देती है। पति-पत्नी के प्रेम का यह पावन पर्व उनके रिश्ते में प्रगाढ़ता लाता है। पति की दीघार्यु और मंगल कामना हेतु सुहागिन नारियों का यह पावन पर्व है। करवा चौथ एक ऐसा त्यौहार है जो वर्षों से हर वर्ष महिलाओं द्वारा बहुत ही हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। करवा द्वारा कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को चंद्रमा को अर्ध्य देकर पारण करने का विधान होने से इसका नाम करवा चौथ है। करवा चौथ यह संदेश देता है कि पति-पत्नी एक दूसरे के बिना अधूरे हैं।

❖ डाली कुमारी

भारतीय नारी के लिए परमेश्वर का रूप है पति

पति कैसा भी हो भारतीय नारी के लिए वह परमेश्वर का रूप है। करवा चौथ हमें सिखाता है कि नारी शक्ति सब पर भारी पड़ सकती है। नारी अगर चाहे तो अपने सामने यमराज को भी झुका सकती है। इसलिए नारी को भी समाज मे पुरषों की तरह समान भाव दिया जाना चाहिए। क्योंकि सुहागिन नारी का पर्व होने के नाते करवा चौथ को महिलाएं यथासंभव और यथाशक्ति न्यूनाधिक सोलह श्रृंगार से अलंकृत होकर अपने अंतःकरण के उल्लास को प्रकट करती है। पति चाहे गूंगा हो, बहरा हो, अपाहिज हो या असाध्य रोग से ग्रस्त हो, क्रूर-अत्याचारी-अनाचारी या व्याभिचारी हो उससे हर प्रकार का संवाद और संबंध शिथिल पड़ चुके हैं फिर भी हिंदू नारी इस पर्व को मनाएगी अवश्य। इस दिन महिलाएं अपने-अपने पति की दीघार्यु एवं उनकी सभी कामना पूर्ति की प्रार्थना करती है। सुहागिन महिलाओं को करवा चौथ के दिन मंगल सूत्र, नोज पिन, बिंदी, चूड़ियां, झुमके आदि पहनना अनिवार्य माान जाता है। ये सारी चीजें महिलाओं के लिए सौभाग्य, समृद्धि और सुखी वैवाहिक जीवन का प्रतीक हैं। इसके अलावा हाथों में मेहंदी भी लगानी चाहिए। करवा चौथ के त्योहार में सरगी बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। शाम का समय सभी महिलाओं को इस व्रत में बहुत भाता है क्योंकि इसी समय महिलाएं बहुत अच्छे से सजती सवरती हैं।

❖ गोलू कुमार

करवा चौथ के प्रचार-प्रसार में बॉलीवुड की भूमिका अहम

करवा चौथ एक ऐसा त्यौहार है,जो पति पत्नी के प्यार को और ज्यादा बढ़ाता है। यह पर्व कहने को तो बस महिलाओं का होता है परंतु इस पर्व से कहीं न कहीं संपूर्ण परिवार का माहौल खुशहाल हो जाता है। करवा चौथ का त्यौहार हर वर्ष आता है एवं पति-पत्नी के बीच साल भर चाहे कितनी भी खटपट हो परंतु इस दिन दोनों को एक-दूसरे की अहमियत पता लगती है। यह पर्व संदेश देता है कि पति-पत्नी एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं। चाहे कितनी भी खटपट हो एक-दूसरे से बात करके इसका अंत कर देना चाहिए। करवा चौथ का त्यौहार भी हर त्योहार की भाँति सकारात्मक संदेश देता है। करवा चौथ दो शब्दों का मेल है जिसमें करवा का अर्थ होता है मिट्टी का बर्तन एवं चौथ का अर्थ होता है चतुर्थी। इसलिए करवा चौथ के दिन विवाहित महिलाएं करवे का खास विधि विधान से पूजन करती हैं। हर त्योहार की भाँति यह त्योहार भी किसी कहानी से जुड़ा है जो कितने सालों से पति-पत्नी के सच्चे प्रेम का प्रतीक बना हुआ है। कुछ वर्षों से तो इस त्योहार को मनाने की अवधारणाएं बदल गई है। करवा चौथ हर साल हिंदू कैलेंडर के कार्तिक महीने कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। बॉलीवुड ने इस व्रत के प्रचार और प्रसार में काफी अहम भूमिका निभाई है। बालीवुड के कारण पर्व भारत ही नहीं विदेशों में भी विख्यात कर दिया है। विदेशी महिलाएं भी इस अनोखे हिन्दू संस्कृति के त्यौहार को खुशी और सम्मान से मनाती हैं। यह व्रत महिलाओं द्वारा पति की लम्बी उम्र के लिए रखा जाता है।

– उर्मिला कुमारी

सबसे ज्यादा सौभाग्यदायक व्रत है करवा चौथ

करवा चौथ व्रत को करने वाली स्त्रियों को चाहिए कि वह सूर्य निकलने से पूर्व ही फलाहार इत्यादि ग्रहण कर लें उसके बाद उन्हें पूरे दिन बिना जल और आहार के व्रत रखना होता है। सायं को चंद्रमा निकलने के बाद उनका दर्शन कर उन्हें अर्घ्य दें तथा पूजन करें। सुहाग की सलामती का पर्व करवा चौथ 01 नवम्बर 2023 को मनाया जायेगा। करवा चौथ पति की दीघार्यु एवं अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए इस दिन भगवान गणेश जी की अर्चना भी की जाती है। करवा चौथ चांद से सुख समृद्धि मांगने का दिन भी होता है। इस दिन पूरे श्रृंगार में सुहागिनें मां पार्वती और शिव के साथ चांद की पूजा कर खुशियों का वरदान मांगती हैं। इस दिन सौभाग्यवती स्त्रियां पति के स्वास्थ्य, आयु एवं मंगलकामना के लिए व्रत करती हैं। ग्रामीण स्त्रियों से लेकर आधुनिक महिलाओं तक सभी महिलाएं करवा चौथ का व्रत बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ रखती हैं। इस व्रत की विशेषता यह है कि केवल सौभाग्यवती स्त्रियों को ही यह व्रत करने का अधिकार है। हालांकि आजकल ऐसी लड़कियां जिनकी शादी तय हो चुकी है वह भी यह व्रत करने लगी हैं। कहीं-कहीं तो पति और पत्नी दोनों ही इस व्रत को करते हैं। मान्यता है कि यह व्रत 12 वर्ष तक अथवा 16 वर्ष तक लगातार हर वर्ष किया जाता है। अवधि पूरी होने के पश्चात इस व्रत का उद्यापन किया जाता है। जो सुहागिन स्त्रियां आजीवन रखना चाहें वे जीवनभर इस व्रत को कर सकती हैं। इस व्रत के समान सौभाग्यदायक व्रत अन्य कोई दूसरा नहीं है। इस पर्व की धूम पहले उत्तर भारत में ज्यादा होती थी लेकिन फिल्मों और टीवी ने इस पर्व को देशभर में लोकप्रिय बना दिया।

करवा चौथ व्रत पूजन विधि

बालू अथवा सफेद मिट्टी की वेदी पर शिव-पार्वती, स्वामी कार्तिकेय, गणेश एवं चंद्रमा की स्थापना करें। इसके बाद देवों का पूजन करें। पूजन हेतु निम्न मंत्र बोलें- 'ॐ शिवायै नमः' से पार्वती का, 'ॐ नमः शिवाय' से शिव का, 'ॐ षण्मुखाय नमः' से स्वामी कार्तिकेय का, 'ॐ गणेशाय नमः' से गणेश का तथा 'ॐ सोमाय नमः' से चंद्रमा का पूजन करना चाहिए। पूजा के बाद तांबे या मिट्टी के करवे में चावल, उड़द की दाल, सुहाग की सामग्री जैसे- कंघी, शीशा, सिंदूर, चूड़ियां, रिबन और रूपया रखकर दान करना चाहिए तथा सास के पांव छूकर फल, मेवा व सुहाग की सारी सामग्री उन्हें देनी चाहिए। इसके बाद करवा चौथ की कथा सुनें। सायंकाल को चंद्रमा के उदित हो जाने पर चंद्रमा का पूजन कर अर्घ्य प्रदान करें।

करवा चौथ व्रत कथा

एक समय की बात है कि एक करवा नाम की पतिव्रता स्त्री अपने पति के साथ नदी के किनारे के गांव में रहती थी। एक दिन उसका पति नदी में स्नान करने गया। स्नान करते समय वहां एक मगर ने उसका पैर पकड़ लिया। वह मनुष्य करवा-करवा कह के अपनी पत्नी को पुकारने लगा। उसकी आवाज सुनकर उसकी पत्नी करवा भागी चली आई और आकर मगर को कच्चे धागे से बांध दिया। मगर को बांधकर यमराज के यहां पहुंची और यमराज से कहने लगी- हे भगवन! मगर ने मेरे पति का पैर पकड़ लिया है। उस मगर को पैर पकड़ने के अपराध में आप अपने बल से नरक में ले जाओ। यमराज बोले- अभी मगर की आयु शेष है, अतः मैं उसे नहीं मार सकता। इस पर करवा बोली, अगर आप ऐसा नहीं करोगे तो मैं आप को श्राप देकर नष्ट कर दूंगी। सुनकर यमराज डर गए और उस पतिव्रता करवा के साथ आकर मगर को यमपुरी भेज दिया और करवा के पति को दीघार्यु दी। हे करवा माता! जैसे तुमने अपने पति की रक्षा की, वैसे सबके पतियों की रक्षा करना।

एक बार अर्जुन नीलगिरि पर तपस्या करने गये। द्रौपदी ने सोचा कि वहां हर समय अनेक प्रकार की विघ्न बाधाएं आती रहती हैं। उनके शमन के लिए अर्जुन तो यहां हैं नहीं, अतरू कोई उपाय करना चाहिए। यह सोचकर उन्होंने भगवान श्रीकृष्ण का ध्यान किया। भगवान वहां उपस्थित हुए तो द्रौपदी ने अपने कष्टों के निवारण हेतु कोई उपाय बताने को कहा। इस पर श्रीकृष्ण बोले, "एक बार पार्वतीजी ने भी शिवजी से यही प्रश्न किया था तो उन्होंने कहा था कि करवा चौथ का व्रत गृहस्थी में आने वाली छोटी मोटी विघ्न बाधाओं को दूर करने वाला है। यह पित्त प्रकोप को भी समाप्त करता है।" फिर श्रीकृष्ण ने द्रौपदी को एक कथा सुनाई- प्राचीन काल में एक धर्मपरायण ब्राह्मण के सात पुत्र तथा एक पुत्री थी। बड़ी होने पर पुत्री का विवाह कर दिया गया। कार्तिक की चतुर्थी को कन्या ने करवा चौथ का व्रत रखा। सात भाइयों की लाड़ली बहन को चंद्रोदय से पहले भूख सताने लगी। उसका फूल-सा चेहरा मुरझा गया। भाइयों के लिए बहन की यह वेदन असहनीय थी। वे कुछ उपाय सोचने लगे। पहले तो उन्होंने बहन से चंद्रोदय से पहले ही भोजन करने को कहा, पर बहन न मानी। तब भाइयों ने स्नेहवश पीपल के वृक्ष की आड़ में प्रकाश करके कहा, 'देखो चंद्रोदय हो गया। उठो, अर्घ्य देकर भोजन करो।'

❖ शुभा दुबे

पति-पत्नी के पवित्र रिश्तों का पर्व है करवा चौथ

करवा चौथ का व्रत हर साल महिलाओं द्वारा अपने पतियों के लिए किया जाता हैं और यह न केवल एक त्यौहार है बल्कि यह पति-पत्नी के पवित्र रिश्तों का पर्व है। कहने को तो करवा चौथ का त्योहार एक व्रत है लेकिन यह नारी शक्ति और उसकी क्षमताओं का सवश्रेष्ठ उदहारण हैं।

भारत एक धर्म प्रधान व आस्थावान देश हैं। यहां साल के सभी दिनो का महत्व होता है तथा साल का हर दिन पवित्र माना जाता है। भारत में करवा चौथ हिन्दुओं का एक प्रमुख त्योहार है। यह भारत के राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और पंजाब का पर्व है। यह कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को मनाया जाता है। यह व्रत सुबह सूर्योदय से पहले करीब 4 बजे के बाद शुरू होकर रात में चन्द्रमा दर्शन के बाद सम्पूर्ण होता है। ग्रामीण स्त्रियों से लेकर आधुनिक महिलायें करवा चौथ का व्रत बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह के साथ रखती हैं। करवा चौथ का व्रत हर साल महिलाओं द्वारा अपने पतियों के लिए किया जाता हैं और यह न केवल एक त्योहार है बल्कि यह पति-पत्नी के पवित्र रिश्तों का पर्व है। आज के नये जमाने में भी हमारे देश में महिलायें हर वर्ष करवा चौथ का व्रत पहले की तरह पूरी निष्ठा व भावना से मनाती है। आधुनिक होते समाज में भी महिलायें अपने पति की दीघार्यु को लेकर सचेत रहती है। शास्त्रों के अनुसार पति की दीघार्यु एवं अखण्ड सौभाग्य की प्राप्ति के लिए इस दिन भालचन्द्र गणेश जी की पूजा-अर्चना की जाती है। करवा चौथ में दिन भर उपवास रखकर रात में चन्द्रमा को अर्ध्य देने के उपरान्त ही भोजन करने का विधान है। वर्तमान समय में करवा चौथ व्रतोत्सव ज्यादातर महिलाएं अपने परिवार में प्रचलित प्रथा के अनुसार ही मनाती हैं। लेकिन अधिकतर स्त्रियां निराहार रहकर चन्द्रोदय की प्रतीक्षा करती हैं। सायंकाल चंद्रमा के उदित हो जाने पर चंद्रमा का पूजन कर अर्ध्य प्रदान करें।

इसके पश्चात ब्राह्मण, सुहागिन स्त्रियों व पति के माता-पिता को भोजन कराएं। इसके पश्चात स्वयं व परिवार के अन्य सदस्य भोजन करें। कार्तिक कृष्ण पक्ष की चंद्रोदय व्यापिनी चतुर्थी अर्थात उस चतुर्थी की रात्रि को जिसमें चंद्रमा दिखाई देने वाला है। उस

दिन प्रातः स्नान करके अपने पति की आयु, आरोग्य, सौभाग्य का संकल्प लेकर दिनभर निराहार रहें। उस दिन भगवान शिव-पार्वती, स्वामी कार्तिकेय, गणेश एवं चंद्रमा का पूजन करें। शुद्ध घी में आटे को सेंककर उसमें शक्कर अथवा खांड मिलाकर नैवेद्य हेतु लड्डू बनाएं। काली मिट्टी में शक्कर की चासनी मिलाकर उस मिट्टी से तैयार किए गए मिट्टी के अथवा तांबे के बने हुए अपनी सामर्थ्य अनुसार 10 अथवा 13 करवे रखें। इस व्रत को करने से स्त्रियां अपने सुहाग की रक्षा हर आने वाले संकट से वैसे ही कर सकती हैं जैसे एक ब्राह्मण ने की थी। प्राचीनकाल में एक ब्राह्मण था। उसके चार लडके एवं एक गुणवती लडकी थी। एक बार लडकी मायके में थी। तब करवा चौथ का व्रत पड़ा। उसने व्रत को विधिपूर्वक किया। पूरे दिन निर्जला रही। कुछ खाया-पीया नहीं, पर उसके चारों भाई परेशान थे कि बहन को प्यास लगी होगी, भूख लगी होगी, पर बहन चंद्रोदय के बाद ही जल ग्रहण करेगी। भाइयों से न रहा गया उन्होंने शाम होते ही बहन को बनावटी चंद्रोदय दिखा दिया। एक भाई पीपल की पेड़ पर छलनी लेकर चढ़ गया और दीपक जलाकर छलनी से रोशनी उत्पन्न कर दी। तभी दूसरे भाई ने नीचे से बहन को आवाज दी देखो बहन, चंद्रमा निकल आया है।

बहन ने भोजन ग्रहण किया। भोजन ग्रहण करते ही उसके पति की मृत्यु हो गई। अब वह दुःखी हो विलाप करने लगी। तभी वहां से रानी इंद्राणी निकल रही थीं। उनसे उसका दुःख न देखा गया। ब्राह्मण कन्या ने उनके पैर पकड़ लिए और अपने दुःख का कारण पूछा। तब इंद्राणी ने बताया कि तूने बिना चंद्र दर्शन किए करवा चौथ का व्रत तोड़ दिया इसलिए यह कष्ट मिला। अब तू वर्ष भर की चौथ का व्रत नियमपूर्वक करना तो तेरा पति जीवित हो जाएगा। उसने इंद्राणी के कहे अनुसार चौथ व्रत किया तो पुनः सौभाग्यवती हो गई। इसलिए प्रत्येक स्त्री को अपने पति की दीघार्यु के लिए यह व्रत करना चाहिए। द्रोपदी ने यह व्रत किया और अर्जुन सकुशल मनोवांछित फल प्राप्त कर वापस लौट आए। तभी से हिन्दू महिलाएं अपने अखंड सुहाग के लिए करवा चौथ व्रत करती हैं।

– रमेश सर्राफ धमोरा

व्रत कोई भी हो महिलाओं का उद्देश्य पति की लम्बी आयु

व्रत से दीक्षा प्राप्त होती है। दीक्षा से दक्षिणा प्राप्त होती है। दक्षिणा से श्रद्धा प्राप्त होती है। श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है। यदि पति-पत्नी करवा चौथ के इस व्रत की सभी विशेषताओं को समझते हुए एक-दूसरे का हर कदम पर साथ देंगे। एक-दूसरे के प्रति अटूट निष्ठा रखेंगे। एक-दूसरे का हर परिस्थिति में साथ देंगे तो निश्चित ही ऐसा घर स्वर्ग के समान बन जाएगा। पुण्य प्राप्ति के लिए किसी पुण्य तिथि में उपवास करने या किसी उपवास के कर्मनुष्ठान द्वारा पुण्य संचय करने के संकल्प को व्रत कहते हैं। व्रत और उपवास द्वारा शरीर को तपाना तप है। व्रत धारण कर, उपवास रखकर पति की मंगलकामना सुहागिन का तप है। तप द्वारा सिद्धि प्राप्त करना पुण्य का मार्ग है। अतः सुहागिन करवा चौथ का व्रत धारण कर उपवास रखती हैं। समय, सुविधा और स्वास्थ्य के अनुकूल उपवास करने में ही व्रत का आनन्द है। क्यों कि पतिव्रता पत्नि अपने पति के लिए भरपूर सम्मान की भावना रखती है। जहा एक ओर वह अपने पति के लिए हर त्याग करने के लिए भी तैयार रहती है तो वही वक्त आने पर पति का हर कदम पर साथ देती है। करवा चौथ व्रत सुहागन स्त्रियों द्वारा रखा जाता है जो अपने सुहाग की लंबी उम्र और अच्छी सेहत की कामना करती है। वहीं कुंवारी कन्याएं भी इस व्रत को बड़े ही उल्लास के साथ अच्छे जीवन साथी को पाने की उम्मीद से करती है।

– वेद प्रकाश

संकलन : ओम प्रकाश प्रजापति

KASHYAP'S DENTAL CLINIC
Dr. Vaibhav Kashyap
Oral & Dental Surgeon, C.c. Endodontist & Implantologist Certified Orthodontist, MIDA
" Smiles & More"
छात्र-छात्राओं के लिए 50% की छूट
Facilities
❖ आरसीटी
❖ पायरिया का ईलाज
❖ टेढ़े-मेढ़े दाँतों का ईलाज
❖ स्माईल डिजाइन
❖ इनविजिवल क्लिप
❖ दंत रोपण
❖ फिक्स दाँत लगाना
❖ अत्याधुनिक मशीन और तकनीक के द्वारा ईलाज

CHAMBER
SKYLINE - 4006, 4th Floor, Kadru, Opp. Dr. Lal's Hospital, Ranchi
Contact No. : 9199533383, 7903835453
Time : 9 am to 2 pm & 4 pm to 8 pm
Sunday : 9 am to 2 pm
E-mail : vaibhav.kashyap2011@gmail.com

गागर में सागर

उत्तराखंड के तीन दिवसीय दौरे पर आ रही हैं राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

देहरादून। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू तीन दिवसीय दौरे पर उत्तराखंड आने वाली हैं। राष्ट्रपति 7 नवंबर को उत्तराखंड पहुंचेंगी। उसके बाद उनका 8 नवंबर को श्रीनगर गढ़वाल और कुमाऊं दौरे का कार्यक्रम भी है। 9 नवंबर को वह उत्तराखंड राज्य स्थापना दिवस के कार्यक्रम में भाग लेंगी। मुख्य सचिव डॉ. एसएस संधु ने राष्ट्रपति के दौरे को लेकर समीक्षा की। बैठक में शासन व प्रशासन के अधिकारियों के अलावा एचएन बहुगुणा गढ़वाल विवि और गोविंद बल्लभ पंत कृषि विवि के कुलपति भी शामिल हुए। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक, राष्ट्रपति 7 नवंबर को उत्तराखंड पहुंचेंगी। राष्ट्रपति के दौरे के मद्देनजर मुख्य सचिव ने सुरक्षा व आवश्यक व्यवस्थाएं जुटा लेने के निर्देश दिए।

प. बंगाल में सड़क हादसा, छह की मौत

खड़गपुर। पश्चिम बंगाल में पश्चिम मेदिनीपुर जिले के खड़गपुर थाना अंतर्गत बारामुला इलाके में आज सुबह हुए सड़क हादसे में कम से कम छह लोगों की मौत हो गई। कई अन्य लोग घायल हो गए। घायलों को खड़गपुर महकमा अस्पताल और मेदिनीपुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया है। चार घायलों की हालत गंभीर है। एक घायल को इलाज के लिए कोलकाता ले जाया गया है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि एक पिकअप वैन में फूलों की बोरियां चढ़ाने के दौरान सीमेंट की बोरियों से भरे ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी। इससे पिकअप वैन बगल के जलाशय में जा गिरी। वैन पर लगभग 20-22 फूल विक्रेता मौजूद थे। यह लोग वैन को कोलाघाट ले जाने की तैयारी कर रहे थे। पुलिस का कहना है कि यह हादसा तड़के करीब तीन बजे डेबरा टोल प्लाजा से एक किलोमीटर दूर बारामुला में हुआ। मृतक मकसूदपुर के रहने वाले हैं। अभी इनकी पहचान नहीं हो पाई है।

बब्बर खालसा के चार आतंकी गिरफ्तार, हथियार बरामद

चंडीगढ़। पंजाब पुलिस ने आतंकी संगठन बब्बर खालसा इंटरनेशनल के चार आतंकियों को गिरफ्तार करके भारी मात्रा में हथियार बरामद किए हैं। पुलिस महानिदेशक गौरव यादव ने शनिवार को इस बारे में जानकारी देते हुए बताया कि मोहाली जिला पुलिस द्वारा गिरफ्तार आतंकी आगामी त्योहारों के दिनों में टारगेट किलिंग कर पंजाब का माहौल खराब करने की फिराक में थे। डीजीपी के अनुसार एसएएस नगर (मोहाली) पुलिस के सीआईए विंग ने एक आतंकवादी मॉड्यूल का भंडाफोड़ किया है। संगठन के सदस्यों के संबंध पाकिस्तान में बैठे आतंकी हरविंदर सिंह रिंदा के साथ हैं। रिंदा के आतंकी संगठन बीकेआई के साथ मिलकर ये पाकिस्तान से हथियारों की तस्करी कर रहे थे। पकड़े गए आरोपित ड्रोन की सहायता से पाकिस्तान से हथियार मंगवा कर पंजाब में सप्लाई करने का भी काम कर रहे थे। उन्होंने बताया कि इनके कब्जे से छह विदेशी पिस्टल, 275 जिंदा कारतूस भी बरामद किए गए हैं।

युवाओं के भविष्य के लिए सरकार प्रतिबद्ध : मोदी

प्रधानमंत्री मोदी ने रोजगार मेला में 51 हजार से अधिक युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए

एजेंसी। नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शनिवार को कहा कि देश के विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में आयोजित रोजगार मेले युवाओं के भविष्य के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता का प्रमाण हैं। उन्होंने कहा कि हम न केवल रोजगार प्रदान कर रहे हैं बल्कि एक पारदर्शी प्रणाली भी बनाए हुए हैं। प्रधानमंत्री ने शनिवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से राष्ट्रीय रोजगार मेले को संबोधित किया और विभिन्न सरकारी विभागों और संगठनों में नवनियुक्त 51,000 से अधिक कर्मियों को नियुक्ति पत्र वितरित किए। देश भर से चुने गए युवा रेल मंत्रालय, डाक विभाग, गृह मंत्रालय, राजस्व विभाग, उच्च शिक्षा विभाग, स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग और शिक्षा मंत्रालय सहित स्वास्थ्य और परिवार कल्याण

मंत्रालयों और विभागों में सरकार में शामिल होंगे। प्रधानमंत्री के संबोधन के दौरान देशभर के 37 स्थान मेले से जुड़े रहे। सभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि रोजगार मेलों की यात्रा एक महत्वपूर्ण पड़ाव पर पहुंच गई है, क्योंकि रोजगार मेले पिछले साल अक्टूबर में शुरू हुए थे। तबसे निरंतर केंद्र शासित और एनडीए शासित राज्यों में विभिन्न रोजगार मेलों में लाखों युवाओं को सरकारी नौकरियों के लिए नियुक्ति पत्र प्रदान किए जा चुके हैं। प्रधानमंत्री ने कहा, दिवाली में अभी कुछ समय बाकी है लेकिन नियुक्ति पत्र पाने वाले 50 हजार युवाओं के परिवार के लिए ये मौका दिवाली से जरा भी कम नहीं है। मोदी ने कहा कि सरकार न केवल प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करने का प्रयास कर रही है बल्कि परीक्षा प्रक्रिया का पुनर्गठन भी कर रही है। उन्होंने कहा कि कर्मचारी चयन चक्र के तहत भर्ती में लगने वाला समय भी घटाकर आधा कर दिया गया है। एसएससी के तहत कुछ परीक्षाओं के बारे में चर्चा करते हुए प्रधानमंत्री ने बताया कि परीक्षाएं अब हिंदी और अंग्रेजी के अलावा 13 विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में आयोजित की जा रही हैं, जिससे उन उम्मीदवारों के लिए भाषा की बाधा को तोड़ना आसान हो गया है। प्रधानमंत्री ने कहा, सरकार रोजगार के अवसर प्रदान करने वाले पारंपरिक क्षेत्रों को मजबूत कर रही है, साथ ही नवीकरणीय ऊर्जा, अंतरिक्ष, स्वचालन और रक्षा निर्यात जैसे नए क्षेत्रों को भी बढ़ावा दे रही है।ह्व उन्होंने ड्रोन प्रौद्योगिकी क्षेत्र में नए रास्ते खोलने का भी जिक्र किया और इसकी मदद से किए जा रहे फसल मूल्यांकन और पोषक तत्वों के छिड़काव का उदाहरण दिया।

प्रधानमंत्री ने खादी के पुनरुत्थान का जिक्र करते हुए कहा कि खादी की जो चमक पहले खो गई थी, वह अब वापस आ गई है। उन्होंने बताया कि 10 साल पहले के महज 30 हजार करोड़ की तुलना में अब खादी ने 1.25 लाख करोड़ से अधिक की बिक्री दर्ज की है। इससे खादी और ग्रामोद्योग क्षेत्र में कई नौकरियां पैदा हुई हैं, विशेषकर महिलाओं को लाभ हुआ है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि किसी भी देश के प्रतिस्पर्धी लाभ के लिए युवाओं की शक्ति का पूरी तरह से एहसास होना जरूरी है। उन्होंने कौशल और शिक्षा की पहल का उल्लेख किया, जो युवाओं को नए अवसरों का पूरा लाभ उठाने के लिए तैयार कर रहा है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत नए मेडिकल कॉलेज, आईआईटी, आईआईएम और आईआईआईटी खोले जा रहे हैं और पीएम कौशल विकास योजना के तहत करोड़ों युवाओं को प्रशिक्षित किया गया है। प्रधानमंत्री ने शरद पूर्णिमा के शुभ अवसर का उल्लेख किया और नई भर्तियों से वोकल फॉर लोकल का संदेश फैलाने का आग्रह किया, जो देश के भीतर रोजगार पैदा करने का एक माध्यम भी है।

काशी विश्वनाथ का दर्शन करने के लिए लागू होगा ड्रेस कोड

महिलाएं साड़ी, पुरुष धोती-कुर्ता पहन कर ही मंदिर के गर्भ गृह में पूजा अर्चना कर सकेंगे

आरपी सिंह। वाराणसी

अब आप अपनी मनमजी, मस्ती, स्टाइल, फैशन बाजी में जो मन चाहे कपड़े पहनकर काशी में बाबा विश्वनाथ का दर्शन नहीं कर पाएंगे। यदि आप औरत हैं तो साड़ी, पुरुष हैं तो धोती-कुर्ता पहन कर ही मंदिर के गर्भ गृह में पूजा अर्चना के लिए जा सकते हैं। इसके लिए तैयारी शुरू हो गयी है। इस बारे में संपूर्णानंद संस्कृत वि.वि. में प्रोफेसर रहे नागेंद्र पांडेय जो काशी विश्वनाथ मंदिर न्यास के अध्यक्ष हैं, ने कहा कि न्यास की आगामी बैठक में मंदिर

आने वाले श्रद्धालुओं के लिए एक परिधान निर्धारित करने पर प्रस्ताव रखा जाएगा। यह बैठक अगले माह नवंबर में होगी। नागेंद्र पांडेय ने कहा कि उम्मीद की जाती है कि धर्मस्थल विश्वनाथ धाम आने वाले दर्शनार्थी शालीन व मर्यादित वस्त्र धारण करके आएं। श्रद्धालुओं को काशी विश्वनाथ मंदिर में ऐसे मर्यादित वस्त्र पहनकर आना चाहिए, जो देखने में अच्छे लगे। पुरुषों के लिए धोती-कुर्ता और महिलाओं के लिए साड़ी पहन कर ही गर्भगृह में दर्शन पूजन करने को लेकर मंदिर न्यास की अगली बैठक में प्रस्ताव रखा जाएगा। न्यास की बैठक में विचार-विमर्श के बाद इस पर फैसला लिया जाएगा। फिलहाल मात्र अर्चकों के लिए दो सेट पोशाक न्यास की तरफ से देने का निर्णय लिया गया है, जिसे लागू किया जाएगा। मंदिर में पुजारी अभी तक धोती पहनते हैं, लेकिन अब उनके लिए जाड़े में चादर और गर्मी में दुपट्टा दिया जाएगा, इस पर न्यास का लोगो होगा, जो उनकी पहचान बताएगा। मालूम हो कि काशी विश्वनाथ धाम के नये स्वरूप के निर्माण में 700 करोड़ रुपये के लगभग खर्च हुए और पौने तीन साल समय लगा।

भारत ने 26 राफेल-समुद्री जेट विमानों की खरीद के लिए फ्रांस को एलओआर भेजा

एजेंसी। नई दिल्ली

भारत ने 26 राफेल-समुद्री लड़ाकू जेट खरीदने के लिए फ्रांसीसी सरकार को अनुरोध जारी किया है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में रक्षा अधिग्रहण परिषद (डीएसी) ने भारतीय नौसेना के लिए 26 राफेल-समुद्री लड़ाकू जेट और तीन स्कॉर्पीन डीजल-इलेक्ट्रिक पनडुब्बियों की खरीद के प्रस्तावों को पहले ही मंजूरी दे दी थी। मंत्रालय ने कहा कि डीएसी ने फ्रांसीसी सरकार से भारतीय नौसेना के लिए संबंधित सहायक उपकरण, हथियार, सिम्युलेटर, स्पेयर, दस्तावेजीकरण, चालक दल प्रशिक्षण और रसद समर्थन के साथ 26 राफेल-समुद्री लड़ाकू जेट की खरीद के लिए आवश्यकता की स्वीकृति (एओएन) प्रदान की। अंतर-सरकारी समझौता (आईजीए)। इसमें कहा गया है कि अन्य देशों द्वारा समान

विमान की तुलनात्मक खरीद कीमत सहित सभी प्रासंगिक पहलुओं को ध्यान में रखने के बाद कीमत और खरीद की अन्य शर्तों पर फ्रांसीसी सरकार के साथ बातचीत की जाएगी। इसके अलावा, भारतीय डिजाइन किए गए उपकरणों के एकीकरण और विभिन्न प्रणालियों के लिए रखरखाव, मरम्मत और संचालन (एमआरओ) हब की स्थापना को उचित बातचीत में अनुबंध दस्तावेजों में शामिल किया जाएगा। अब भारतीय रक्षा मंत्रालय की ओर से प्रस्तावित सौदे के लिए फ्रांसीसी आयुध महानिदेशालय को एक विस्तृत अनुरोध पत्र (एलओआर) जारी किया गया है। सूत्रों ने कहा कि इसमें 22 सिंगल-सीट जेट और चार ट्विन-सीट ट्रेनर के साथ-साथ हथियार, सिम्युलेटर, स्पेयर, क्रू ट्रेनिंग और लॉजिस्टिक्स सपोर्ट शामिल होंगे। रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार फ्रांस को अपनी पेशकश, कीमत और अन्य विवरण के साथ कुछ महीनों में जवाब देना चाहिए। लागत पर बातचीत और सुरक्षा पर कैबिनेट समिति की अंतिम मंजूरी के बाद एक बार अनुबंध पर हस्ताक्षर हो जाने के बाद, डिलीवरी तीन साल में शुरू हो जाएगी। सरकार-से-सरकारी सौदे के लिए एलओआर, जिसमें डसॉल्ट एविएशन निर्मित जेट की ऑफ-द-शेल्फ खरीद शामिल है, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा 10 अक्टूबर को फ्रांस की यात्रा के तुरंत बाद आया है।

राष्ट्रनिर्माण में भी दें योगदान : अनुराग ठाकुर

एजेंसी। हमीरपुर

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) हमीरपुर का 14वां दीक्षांत समारोह शनिवार को संस्थान के सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण, युवा मामले एवं खेल मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। समारोह में संस्थान के 1265 विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान की गईं। इस अवसर पर सभी विद्यार्थियों को बधाई देते हुए अनुराग सिंह ठाकुर ने कहा कि आज का यह दिन उनके (विद्यार्थियों) परिश्रम और समर्पण का प्रतिफल है और अपनी सफलता को सेलिब्रेट करने का अवसर है। उन्होंने कहा कि आज का भारत तेजी से बुलंदियों को छू रहा है तथा विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। भारत के लिए अमृतकाल के अगले 25 वर्ष बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इसमें युवाओं के लिए अपार अवसर हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे इन अवसरों का लाभ उठाकर आगे बढ़ें और राष्ट्रनिर्माण में भी अपना हरसंभव योगदान दें।

गुजरात : आर्थिक तंगी से परेशान एक ही परिवार के 7 सदस्यों ने की सामूहिक आत्महत्या

सूरत। गुजरात के सूरत से दिल को झकझोर देने वाली एक घटना सामने आई है, जहां आर्थिक तंगी के चलते एक परिवार के सात सदस्यों ने आत्महत्या कर ली। मृतकों में माता-पिता, पति-पत्नी और तीन बच्चे हैं। पुलिस के अनुसार प्रथमदृष्ट्या इनमें 6 लोगों ने जहरीले पदार्थ का सेवन किया जबकि एक ने फंदा लगाकर आत्महत्या की। पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी भी मौके पर पहुंच कर जांच में जुट गए हैं। मौके से एक सुसाइड नोट मिला है, जिसमें आर्थिक तंगी का जिक्र है। पालनपुर जकातनाका के समीप विद्याकुंज स्कूल के पीछे सिद्धेश्वर अपार्टमेंट के सी-2 ब्लॉक में शनिवार सुबह दिल-दहलाने वाली घटना सामने आई। मनीष सोलंकी नामक फर्नीचर और बिल्डिंग के कांट्रेक्टर का घर का दरवाजा शनिवार सुबह देर तक नहीं खुला तो पड़ोसियों ने मनीष के रिश्तेदारों को सूचना दी।

राजनीति

कांग्रेस-भाजपा ने पुराने राजनीतिक राजवंशों को दिया टिकट

26 वंशजों को चुनावी मैदान में उतारा

एजेंसी। जयपुर

कांग्रेस और भाजपा एक-दूसरे पर राजनीति में भाई-भतीजावाद का आरोप लगाते रहे हैं और बार-बार इसकी आलोचना करते रहे हैं। हालांकि, इस सार्वजनिक रुख के बावजूद, दोनों पार्टियों ने राजस्थान में अपने दिग्गज नेताओं के परिवार के सदस्यों को टिकट दिया है।

राजस्थान में करीब 81 सीटें हैं, जो कई नेताओं का गढ़ मानी जाती हैं। इनमें से 40 सीटें दशकों से कुछ नेताओं और उनके परिवारों की पॉकेट रही हैं। दोनों दलों ने अपने वरिष्ठ नेताओं के रिश्तेदारों को 26 टिकट दिए हैं। इसमें दिग्गज नेताओं के 15 बेटे, छह बेटियां-पोतियां, तीन पत्नियां, एक बहू और एक रिश्तेदार शामिल हैं। राजस्थान में अब तक बीजेपी ने 124 और कांग्रेस ने 76 टिकट बांटे हैं। इनमें से भाजपा ने 11 और कांग्रेस ने 15 ऐसे उम्मीदवारों को टिकट दिए जिनके परिवार के सदस्य विधायक, सांसद और मंत्री रहे हैं। बीजेपी ने देवली-उनियारा से पूर्व सांसद प्रत्याशी

किरोड़ी सिंह बैंसला के बेटे विजय बैंसला को टिकट दिया है। इसके बाद विद्याधर नगर से दीया कुमारी हैं जो पूर्व सांसद गायत्री देवी की पोती हैं और जयपुर के पूर्व शाही परिवार से आती हैं।

बीकानेर से सिद्धि कुमारी, जिनके दादा करणी सिंह 1952 से 1977 तक सांसद थे, को बीजेपी से टिकट मिला है। श्रीमाधोपुर से चार बार विधायक रहे हरलाल सिंह खर्रा के बेटे झाबर सिंह खर्रा को इस बार अपने पिता के निर्वाचन क्षेत्र से टिकट मिला है।

मंजीत चौधरी को मुंडावर से टिकट मिला है और वह पूर्व विधायक धर्मपाल चौधरी के बेटे हैं। पूर्व मंत्री दिगंबरसिंह के बेटे शैलेश सिंह को डीग कुम्हेर से टिकट मिला है।

इसी तरह नसीराबाद से रामस्वरूप लांबा को टिकट मिला है। वह पूर्व मंत्री और सांसद सांवरलाल जाट के बेटे हैं। पूर्व सांसद नाथूराम मिर्धा की पोती डॉ. ज्योति मिर्धा नागौर से बीजेपी के सिंबल पर चुनाव लड़ेंगी। धरियावद से कन्हैयालाल मीणा लड़ेंगे चुनाव। वह धरियावद के पूर्व विधायक गौतमलाल मीणा के बेटे हैं। दीप्ति माहेश्वरी राजसमंद से चुनाव लड़ेंगी और वह पूर्व मंत्री किरण माहेश्वरी की बेटी हैं।

सुमिता भींचर मकराना के पूर्व विधायक श्रीराम भींचर की बहू हैं और अब उसी सीट से चुनाव लड़ेंगी। भाजपा के ठीक बाद कांग्रेस ने भी पारिवारिक संपर्क वाले कई नेताओं को मैदान में उतारा है। सुशीला डूडी पूर्व विपक्ष नेता रामेश्वर डूडी की पत्नी हैं, जो अब नोखा से कांग्रेस के सिंबल पर चुनाव लड़ेंगी। सरदार शहर से अनिल शर्मा पूर्व विधायक भवर लाल शर्मा के बेटे हैं, जबकि ब्रजेंद्र ओला पूर्व केंद्रीय मंत्री शीशराम ओला के बेटे हैं।

रामगढ़ से जिस जुबेर खान को टिकट दिया गया है, वह कांग्रेस विधायक सफिया जुबेर के पति हैं। सुजानगढ़ से उम्मीदवार बनाए गए मनोज मेघवाल पूर्व मंत्री भंवरलाल मेघवाल के बेटे हैं, जबकि रीटा चौधरी मंडावा से छह बार जीत चुके रामनारायण चौधरी की बेटी हैं।

सवाई माधोपुर से टिकट पाने वाले दानिश अबरार पूर्व राज्यसभा सांसद अबरार अहमद के बेटे हैं, जबकि टोंक से लड़ने वाले सचिन पायलट पूर्व केंद्रीय मंत्री राजेश पायलट और पूर्व विधायक-सांसद रमा पायलट के बेटे हैं।

डेगाना से चुनावी मैदान में उतरे विजयपाल मिर्धा, नाथूराम मिर्धा परिवार से हैं और पूर्व विधायक रिछपाल मिर्धा के बेटे हैं। ओसियां से दिव्या मदेरणा को भी टिकट दिया गया है। वह पूर्व विधानसभा अध्यक्ष परसराम मदेरणा की पोती और पूर्व मंत्री महिपाल मदेरणा की बेटी हैं। लूणी से महेंद्र विश्नोई को टिकट दिया गया है। वह पूर्व मंत्री रामसिंह विश्नोई के पोते और पूर्व विधायक मलखान विश्नोई के बेटे हैं। वल्लभनगर से उम्मीदवार बनाई गईं प्रीति शक्तावत पूर्व मंत्री गुलाब सिंह शक्तावत की बहू और पूर्व विधायक गजेंद्र शक्तावत की पत्नी हैं।

मांडलगढ़ से टिकट पाने वाले विवेक धाकड़ कन्हैयालाल धाकड़ के बेटे हैं, जबकि, राजाखेड़ा से टिकट पाने वाले रोहित बोहरा पूर्व मंत्री प्रद्युम्न सिंह के बेटे हैं।

हैरानी की बात यह है कि कुछ दिन पहले कांग्रेस प्रभारी सुखजिंदर सिंह रंधवाड़ा ने पार्टी में बढ़ते भाई-भतीजावाद पर चिंता जताई थी।

'आर्या' में ऐसी ताकत है जो बवंडर का मुकाबला कर सकती है : सुष्मिता सेन

क्राइम थ्रिलर 'आर्या 3' में एक्ट्रेस और पूर्व मिस यूनिवर्स सुष्मिता सेन का किरदार आर्या सरीन एक बेहतरीन पावरहाउस हैं, जिसमें ऐसी ताकत है जो बवंडर का मुकाबला कर सकती है। सुष्मिता ने कहा, पहले सीजन से ही वह शो चलाने वाली सिंगल मदर हैं। सुष्मिता ने कहा, मेरा किरदार 'आर्या' बहुत मजबूत है। उसमें दर्द सहने की क्षमता है। वह काफी हद तक शांत है। जब तक जरूरी न हो, वह रिएक्ट करना नहीं बल्कि रिस्पॉन्ड देना पसंद करती है। मैं वैसे ही बनी हूं, लेकिन उसने मुझसे ज्यादा विश्वासघात देखा है, इसके लिए भगवान का शुक्र है, मैंने अपनी लाइफ में अच्छे लोग देखे हैं। मैं उम्मीद कर रही हूं कि इस शो में वह अच्छे लोगों से मिलेंगी, जिससे उनके जीवन में कुछ आशा, कुछ रोमांस वापस आ जाएगा।" दूरदर्शी राम माधवानी द्वारा निर्मित और सह-निर्देशित और अमिता माधवनी, राम माधवानी, राम माधवानी फिल्म्स और एंडेमोल शाइन इंडिया द्वारा सह-निर्मित, 'आर्या 3' 3 नवंबर से डिज्नी पल्स हॉटस्टार पर प्रसारित होगा।

आदित्य रॉय कपूर-अनन्या पांडे का वीडियो हुआ वायरल

बॉलीवुड में इस वक्त आदित्य रॉय कपूर और अनन्या पांडे के रिश्ते की खूब चर्चा हो रही है। चाहे स्पेन की यात्रा हो या सिद्धार्थ-कियारा की शादी का रिसेप्शन, दोनों को एक साथ कई समारोहों में भाग लेते देखा जा रहा है। फिलहाल सोशल मीडिया पर आदित्य और अनन्या का मुंबई की एक पार्टी का वीडियो वायरल हो रहा है। आदित्य रॉय कपूर और अनन्या पांडे मुंबई के एक मशहूर रेस्टोरेंट में डिनर के लिए गए। इस समय दोनों ने एक-दूसरे का हाथ कसकर पकड़ रखा था और वायरल वीडियो में दिख रहा है कि एक्ट्रेस ने अपना सिर आदित्य के कंधे पर रखा हुआ है। डिनर पार्टी में दोनों ने ब्लैक ड्रेस पहनी थी।

एक्ट्रेस रिंकू घोष ने 'जुनूनियत' के बंद होने पर कहा-'हर अंत की एक नई शुरूआत होती है'

'दुर्गेश नंदिनी', 'मोहे रंग दे', 'मिसेज पम्मी प्यारे लाल' जैसे शो फेम एक्ट्रेस रिंकू घोष ने दुख व्यक्त किया है कि उनका शो 'जुनूनियत' जल्द ही ऑफ एयर होने वाला है, उन्होंने कहा कि हर अंत की एक नई शुरूआत होती है। यह लोकप्रिय शो अंकित गुप्ता (जहान), गौतम सिंह विग (जॉर्डन) और नेहा राणा (इलाही) द्वारा संचालित प्रेम और संगीत की कहानी के साथ दर्शकों का मनोरंजन कर रहा है। शो के बंद

होने के बारे में बात करते हुए, रिंकू ने कहाः "पहले तो मैं थोड़ी उदास थी। मैं इसके इतनी जल्दी खत्म होने के लिए तैयार नहीं थी, क्योंकि शो अच्छा चल रहा है। फ्रिक्शन कैटेगरी में यह चैनल पर बिताया गया दूसरा सबसे ज्यादा समय है, लोगों को भी यह काफी पसंद आ रहा है।" 'इम्तिहान' फेम एक्ट्रेस ने कहा, "सीरियल करते समय आप अपने सह-कलाकारों के साथ कई बंधन बनाते हैं क्योंकि हम अपना अधिकांश समय एक-दूसरे के साथ बिताते हैं। ऐसा लगता है जैसे एक परिवार टूट रहा है। लेकिन, अब मैं इसे एक और नए अध्याय की शुरूआत के रूप में लेती हूं।

गागर में सागर

राज्यपाल ने वाल्मीकि जयंती पर लोगों को दी शुभकामनाएं

रांची। राज्यपाल सीपी राधाकृष्णन ने वाल्मीकि जयंती की सभी को शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने शनिवार को ट्वीट कर कहा कि प्रभु श्री राम के आदर्श चरित्र को लिपिबद्ध कर महाग्रंथ ह्यरामायण की रचना करने वाले, महान रचनाकार आदिकवि महर्षि वाल्मीकि की जयंती पर उन्हें कोटिशः नमन किया है। साथ ही सभी लोगों को वाल्मीकि जयंती की शुभकामनाएं दी है।

मुख्यमंत्री ने कौमी तंजीम के पत्रकार के निधन पर जताया शोक

रांची। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने कौमी तंजीम अखबार के स्थानीय संपादक एएच रिजवी के निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि उनका निधन पत्रकारिता जगत के लिए अपूरणीय क्षति है। स्वतंत्र और निष्पक्ष पत्रकारिता को उन्होंने हमेशा मजबूत करने का काम किया। पत्रकारिता में उनके योगदान को कभी भूला नहीं सकते। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और शोक संतप्त परिजनों को दुख सहन करने की शक्ति दें। मुख्यमंत्री के प्रेस सलाहकार अभिषेक प्रसाद ने भी एएच रिजवी के निधन पर गहरा दुख जताया है। उन्होंने कहा कि वे सरल व्यवहार और कुशल व्यक्तित्व के धनी थे। पत्रकारिता को उन्होंने अलग आयाम दिया। ईश्वर दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में जगह दें और शोक संतप्त परिजनों को दुःख की इस घड़ी में संबल प्रदान करें।

मां काली की पूजा 12 नवंबर को

रांची। मां काली की पूजा 12 नवम्बर को मनाया जाएगा। राजधानी रांची में काली पूजा भी धूमधाम से मनाई जाती है। इस दौरान कई आकर्षक पंडाल बनाए जाते हैं। इसी क्रम में युवा मोर्चा काली पूजा समिति टाटीसिलवे की ओर से पूजा धूमधाम से मनाने का निर्णय लिया गया है। समिति के अध्यक्ष सनिल जॉय ने शनिवार को बताया कि इस वर्ष भव्य रूप से काल्पनिक पंडाल का निर्माण बंगाल के कारीगरों की ओर कराया जाएगा। पूजा स्थल और आसपास भव्य लाइटिंग की व्यवस्था की जाएगी। 12 नवम्बर को मां काली की पूजा की जाएगी। 13 नवम्बर को भक्ति जागरण होगा। 14 नवम्बर को महाआरती की जाएगी। इसमें आसपास के सैकड़ों भक्तजन जुटेंगे। महाआरती को ऐतिहासिक बनाने के लिए कमेटी के लोग जोर-शोर से जुटे हैं।

पशुचिकित्सा महाविद्यालय में तीन दिवसीय वेट उत्सव 2023 की शुरूआत

रांची। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के पशुचिकित्सा एवं पशुपालन महाविद्यालय में शनिवार को तीन दिवसीय 'वेट उत्सव 2023' शुरू हुआ। उत्सव का उद्घाटन करते हुए पशु चिकित्सा संकाय के अधिष्ठाता डॉ. सुशील प्रसाद ने कहा कि व्यक्तित्व के संतुलित विकास के लिए छात्र-छात्राओं का सांस्कृतिक, साहित्यिक कार्यक्रमों और खेलकूद गतिविधियों में भी भाग लेना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना अध्ययन में समय और ऊर्जा लगाना। संगीत और साहित्य की साधना में लगने से मनुष्य की कोमल भावनाएं पुष्पित, पल्लवित और समृद्ध होती हैं। महाविद्यालय के वार्डन डॉ. प्रवीण कुमार ने बताया कि शनिवार को रंगोली, पोस्टर डिस्प्ले, वाद विवाद प्रतियोगिता, ऑन द स्पॉट पेंटिंग तथा क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 29 और 30 जनवरी को एकल गायन, एकल नृत्य, बैडमिंटन मेंस डबल्स एवं मिश्रित युगल, मैराथन, टग आफ वार, फेस पेंटिंग, कविता एवं शायरी, समूह नृत्य एवं समूह गीत तथा माइम प्रतियोगिता होगी। समापन समारोह महाविद्यालय के प्रेक्षागृह में होगा। उन्होंने बताया कि महाविद्यालय में स्नातक तथा विभिन्न स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में लगभग 250 छात्र छात्राएं हैं जिनका एक बड़ा भाग कार्यक्रमों में भाग ले रहा है। आयोजन की सफलता के लिए महाविद्यालय के शिक्षकगण उत्साह पूर्वक लगे हुए हैं।

जीवन को ही आध्यात्मिक रूप में जीने का प्रयास करना चाहिए : हरिवंश

रांची। राज्यसभा के उप सभापति हरिवंश ने कहा कि भागवत चेतना में किसी काम को करने से उस काम का भाव ही बदल जाता है। उन्होंने कहा कि कुछ पल के लिए अध्यात्म से जुड़ जाना बड़ी बात नहीं होती। अपने जीवन को ही आध्यात्मिक रूप में जीने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने श्री अरविंद के कथन को दोहराते हुए कहा कि यदि एक बार मनुष्य आध्यात्मिक करण के लिए राजी हो जाए, तो सबकुछ बदल जाएगा। हरिवशं श्री अरविंद सोसायटी देवी मंडप में शनिवार को आयोजित हिंदी क्षेत्रीय समिति के 44वें वार्षिक सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। दो दिवसीय सम्मेलन के पहले दिन डेढ़ सौ से अधिक साधक सम्मेलन में शामिल हुए। मौके पर अध्यक्ष प्रदीप नारंग, विजय पोद्दार, आलोक तुलस्यान सहित अन्य कई लोगों ने अपने वक्तव्य दिये।

श्री श्याम मंदिर में शरद पूर्णिमा उत्सव धूमधाम से मनाया गया

मंदिर का पट खुलते ही भक्तों की लगी कतार

नवीन मेल संवाददाता। रांची

हरमू रोड स्थित श्री श्याम मंदिर में शरद पूर्णिमा उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। शरद पूर्णिमा के अवसर पर बाबा श्याम को श्वेत पोशाक (बागा) श्वेत आभूषण श्वेत फूलों का श्रृंगार किया गया। श्वेत प्रसाद के रुप में बाबा श्याम को कांजू एवं खीर का भोग लगाया गया उसके बाद सभी भक्तों के बीच वितरण किया गया। शनिवार सुबह से ही भक्तों का आना मंदिर में लगा हुआ था। सुबह मंदिर के पट खुलते ही बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन को मंदिर में पहुंच रहे थे। श्रृंगार के लिए तीनों मंड का परदा लगा कर श्वेत श्रृंगार किया गया। श्रृंगार आरती में भक्त बाबा श्याम का विशेष श्वेत दर्शन कर भाव विभोर हो रहे थे। श्रृंगार आरती प्रातः 8.30 बजे की गई। आज सभी मंड का परदा सभी देवी देवताओं के वस्त्र सभी आभूषण एवम सभी श्रृंगार श्वेत दूधिया रोशनी से जगमग कर रहे थे। श्वेत लाइट से पूरा मंदिर दूधिया रोशनी बिखेर रहा था। चंद्र ग्रहण होने के कारण आज सयन आरती दिन में 3 बजे की गई। दोपहर 3:30 बजे मंदिर के पट बंद कर दिए गए। अब रविवार 29 अक्टूबर को प्रातः नियमित समय पर खुलेंगे। पूरे झारखंड में एकमात्र हरमू रोड स्थित श्री श्याम मंदिर में ही शरद पूर्णिमा उत्सव खाटूधाम के परंपरा अनुसार इसी रूप में मनाया गया। आज के दिन बाबा श्याम का प्राकृतिक पंखा भी खोला गया जो वैशाख सुदी तीज अक्षय तृतीया के अवसर पर लगाया गया था। बाबा श्याम को नया श्वेत चंदवा भी लगाया गया। आज चंद्र ग्रहण होने के कारण रात्रि ढाई बजे के बाद पूरे मंदिर परिसर को धोया जाएगा एवं साफ सफाई कराई गयी। शरद पूर्णिमा उत्सव में आज मुख्य रूप से अध्यक्ष सुरेश सरावगी एवं महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया उपाध्यक्ष श्रवण ढानढनिया मंत्री श्याम सुंदर शर्मा गौरव अग्रवाल मोनू कोषाध्यक्ष पंकज गाड़ोदिया उपमंत्री अनिल नारनोली रतन शर्मा रौनक पोद्दार अरविंद सोमानी किशन शर्मा आदि उपस्थित थे।

स्वास्थ्य महानिदेशालय के उपनिदेशक की टीम कर्मियों को कर रही अपमानित

रांची। सीजीएचडब्ल्यू यूनियन सीआईपी के पूर्व महासचिव अब्दुल कलाम ने स्वास्थ्य महानिदेशालय के उपनिदेशक एके वर्मा और उनकी टीम पर आरोप लगाया है। कहा है कि सीआईपी के कर्मचारी एवं नर्सिंग स्टाफ को बुलाकर उन्हें अपमानित और प्रताड़ित किया जा रहा है। नियुक्ति के 2 से 10 साल बीत जाने के बाद अनावश्यक प्रश्न किये जा रहे हैं। जबरन कहा जा रहा है कि कर्मचारियों की नियुक्ति सेटिंग से हुई है। अब्दुल ने कहा कि तानाशाही रवैया अपना कर नियमों को तक पर रखकर महानिदेशालय ने साजिश के तहत संस्थान के डायरेक्टर डॉ बी दास को बिना किसी कारण के पद से हटा दिया। एक गैर मनोचिकित्सक डॉ तरुण कुमार को संस्थान के निदेशक का प्रभार दे दिया गया। डॉ तरुण ने संस्थान के कर्मियों के परिजनों तथा पूर्व कर्मियों को संस्थान में प्रवेश करने से रोक लगाने का आदेश निकाल दिया है। उन्होंने मांग की है कि इस पर तुरंत रोक लगाई जानी चाहिए।

विहिप ने महर्षि वाल्मीकि का पूजन कर मनायी जयंती

नवीन मेल संवाददाता। रांची

विश्व हिंदू परिषद रांची महानगर की ओर से शनिवार को बिरसानगर, चाणक्य नगर, प्रताप नगर, श्रीराम नगर सहित कई स्थानों पर महर्षि वाल्मीकि जयंती मनायी गयी। कार्यक्रम में सभी वर्ग के लोगों ने एकत्र होकर महर्षि वाल्मीकि का पूजन किया और जयंती मनायी। साथ ही उनके चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं पुष्प अर्पण कर कार्यक्रम का का भी आयोजन किया गया। बिरसानगर समिति की ओर से हटिया चौक स्थित शिव मंदिर में महर्षि वाल्मीकि जयंती मनाई गई। इसमें पुरुषों के साथ-साथ माताएं बहने भी काफी संख्या में उपस्थित थी। इस अवसर पर मुख्य रूप से उपस्थित विश्व हिंदू परिषद के प्रांत सामाजिक समरसता प्रमुख मिथिलेश्वर मिश्र ने कहा महर्षि वाल्मीकि ने रामायण महाकाव्य की रचना की एवं इसके माध्यम से भगवान राम की प्रेरक कथा को जन जन तक पहुंचने का कार्य किया। महर्षि वाल्मीकि की पूजा करने वाले वाल्मीकि समाज के बंधु उन धर्म योद्धाओं के वंशज हैं जिन्होंने विदेशी आक्रांताओं की यातनाएं सही परंतु हिंदू धर्म नहीं छोड़ा। हिंदू धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिए जातिगत भेदभाव को मिटाकर हिंदू समाज को संगठित करना ही विश्व हिंदू परिषद का लक्ष्य है।

महर्षि बाल्मीकि जयंती प्रकट दिवस के रूप में मनाई गई

नवीन मेल संवाददाता। रांची

शनिवार को भाजपा अंनु. जाति मोर्चा रांची महानगर के तत्वावधान में महर्षि बाल्मीकि जयंती कार्यक्रम को प्रकट दिवस के रूप में हरमू रांची में मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता रामलगन राम ने किया। मौके पर उपस्थित नेता व कार्यकर्ताओं ने उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की और उनके जीवन पर प्रकाश डाला। इस मौके पर रामचंद्र नायक, निरज पासवान,भगत वाल्मीकि, उपेन्द्र रजक, रामलगन राम, धर्मेन्द्र कु0 राम ने कहा कि प्राचीन वैदिक काल के महान ऋषियों के श्रेणी में प्रमुख स्थान रखते थे। वह संस्कृत भाषा के कवि थे और वे अपने दिव्य ज्ञान से काव्य रामायण के रचयिता थे। वह महर्षि बनने से पूर्व रत्नाकर के नाम से जाने जाते थे, उनके गुरू नारद मुनी थे। एकबार नारद मुनी ने कहा कि तुम यह निम्न कार्य किस लिए करते हो तो उन्होंने कहा कि अपने परिवार को पालने के लिए। तब उन्होंने कहा कि यह अपराध है। साथ ही नारद ने सत्य व ज्ञान से परिचय करवाया और वह महर्षि बन गये और आज पूरे राज्य व देश में इनकी जयंती मनाई जाती है। कार्यक्रम में उपस्थित रंजन पासवान, योगेन्द्र लाल, खुदा राम, शिकाश रवि, राकेश राम, रेनू पासवान, रेखा पासवान, सुबोध कुमार, संतोष रवि विनोद राजन, रंधिर रजक, करण नायक, सहित दर्जनों लोग उपस्थित थे।

राज्य स्तरीय कला उत्सव का आयोजन आज से

नवीन मेल संवाददाता। रांची

स्कूली शिक्षा साक्षरता विभाग, झारखंड सरकार, झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद के तत्वावधान में राज्य स्तरीय कला उत्सव का आयोजन 29 एवं 30 अक्टूबर 2023 को झारखंड शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद जेसी आरटी रातू में आयोजित की जा रही है। जिसमें राज्य के सभी जिलों से 10 विधाओं में बालक और बालिका वर्ग के कुल 480 प्रतिभागी भाग लेंगे। कला उत्सव में भाग लेने वाले यह प्रतिभागी अपने-अपने जिले में विभिन्न 10 विधाओं के प्रथम आए हुए प्रतिभागी राज स्तरीय कला उत्सव में भाग ले रहे हैं। ये 10 विधाएं जिनमें प्रतियोगिता होनी वे हैं संगीत (गायन) - शास्त्रीय संगीत,संगीत (गायन) - पारंपरिक लोक संगीत, संगीत (वादन) - अवनद्ध वाद्, संगीत (वादन) - स्वर वाद्य, नृत्य - शास्त्रीय नृत्य, नृत्य - लोक नृत्य, दृश्य कला (द्वि-आयामी), द्दश्य कला (त्रि-आयामी),स्थानीय खिलौने एवं खेल नाटक एकल अभिनय आदि शामिल हैं। राज्य स्तरीय कला उत्सव का उद्घाटन 11:30 बजे राजसभा सांसद डॉ. महुआ माजी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर करेंगी एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में धर्मेंद्र कुमार दीक्षित, निदेशक संस्कृति, सांस्कृतिक कार्य निदेशालय, उपनिदेशक महिप कुमार सिंह, बांके बिहारी सिंह जीसीईआरटी एवं राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी धीर सेन सोरेंग उपस्थित होंगे।

समाज में बदलाव तभी आएगा जब बच्चों का संस्कार बदलेगा : सीमा शर्मा

नवीन मेल संवाददाता। रांची

शहर में मातृ पूजन कार्यक्रम का आयोजन सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, धुर्वा, रांची के प्राथमिक खंड के तत्वावधान में शनिवार को हुआ। इसका उद्देश्य वर्तमान समय में भौतिकतावादी शिक्षा के प्रभाव एवं मूल्यपरक शिक्षा के अभाव में बच्चे जन्मदात्री मां को विस्मृत कर रहे हैं, जिससे सदियों की पारिवारिक परंपराओं का ताना-बाना टूट के कगार पर है और वृद्धा आश्रम का बाहुल्य हो रहा है। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि रांची महाविद्यालय रांची की प्राध्यापक डॉ सीमा शर्मा ने कहा कि समाज में बदलाव तभी आएगा जब बच्चों का संस्कार बदलेगा। संस्कार जगाने के लिए हमें तन-मन से माता-पिता की पूजा अर्चना करनी चाहिए। उन्होंने विद्यालय की सराहना करते हुए कहा कि सरस्वती शिशु विद्या मंदिर, धुर्वा शिक्षा के साथ-साथ संस्कार जगाने का कार्य करता है । बच्चों का संस्कार बदलने के लिए बच्चों के प्रति माता का मधुर संबंध होना चाहिए। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि स्टेट बैंक आफ इंडिया की सहायक महाप्रबंधक कविता कुमारी ने कहा कि बच्चों में संस्कार युक्त वातावरण के लिए इस तरह के कार्यक्रम सरस्वती शिशु विद्या मंदिर जैसे विद्यालयों में ही होते हैं ।

प्रपत्र VII
समाहरणालय, गढ़वा (जिला भू–अर्जन शाखा, गढ़वा)
या समाहर्त्ता या समुचित सरकार

अधिघोषणा

(अधिनियम–30 / 2013 की धारा–19(1) के अधीन)

अधिघोषणा संख्या 949 / भू0अ0,गढ़वा, दिनांक 17 / 10 / 2023

चूंकि झारखण्ड सरकार / समाहर्त्ता को यह प्रतीत होता है कि सार्वजनिक प्रयोजनार्थ यथा परियोजना **हुर मोड (गढ़वा–शाहपुर) पथ से डालटनगंज सीमा होते हुए डुमरिया डंडा तक पथ (कुल लम्बाई 19.00 कि0मी0)** हेतु ग्राम–डण्डा, थाना नं0–301, थाना–डण्डा, अंचल–डण्डा, जिला–गढ़वा में कुल :– **1.944** एकड़ भूमि अपेक्षित है।

इसलिए अधिघोषणा किया जाता है कि उपर्युक्त परियोजना के लिए अर्जन के अधीन एक भू–खण्ड है, जो मानक माप से कमोवेश **1.944** एकड़ है और जो ग्राम–डण्डा, थाना नं0–301, थाना–डण्डा, अंचल–डण्डा, जिला–गढ़वा में है, जिसका विवरण निम्नलिखित है :–

क्र.	खाता संख्या	सर्वे प्लॉट संख्या	स्वामित्व का प्रकार	भूमि का प्रकार	अर्जन के अधीन क्षेत्रफल (एकड़ में)	पूरा पता सहित वर्त्तमान रैयत का नाम	सीमा (भूखंड स) उ0	द0	पू0	प0
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	242	540	रैयती	–	0.030	जयगोविन्द महतो पिता स्व0 विदेशी महतो	540	सड़क	533	541
2	242	559	रैयती	–	0.090	अमोला देवी पति राजेश्वर चौधरी	559	सड़क	655	533
3			रैयती	–	0.040	सुधु चौधरी पिता महादेव चौधरी	559	सड़क	655	533
4			रैयती	–	0.008	बुधन चौधरी, पिता महादेव चौधरी	559	सड़क	655	533
5			रैयती	–	0.022	हलकनिया देवी पति रामेश्वर चौधरी वो कामेश्वर चौधरी, पिता भगवती चौधरी	559	सड़क	655	533
6			रैयती	–	0.040	नागेश्वर चौधरी पिता रामधनी चौधरी	559	सड़क	655	533
7	158	655	रैयती	–	0.023	मुनारीक चौधरी पिता रामधनी चौधरी	655	सड़क	661	559
8			रैयती	–	0.024	विगन साव वै0 पिता जगरनाथ साव	655	सड़क	661	559
9			रैयती	–	0.020	रामदास राम वगै0, पिता फुलेश्वर राम	655	सड़क	661	559
10			रैयती	–	0.024	बैजनाथ साव, पिता विश्वनाथ साव	655	सड़क	661	559
11			रैयती	–	0.022	विगन प्रसाद गुप्ता वगै0, पिता जग्रनाथ गुप्ता	655	सड़क	661	559
12			रैयती	–	0.017	लखन चौधर वगै0 यमुना चौधरी	655	सड़क	661	559
13	152	661	रैयती	–	0.017	सुधु चौधरी पिता महादेव चौधरी	661	सड़क	662	655
14			रैयती	–	0.020	तेतरी देवी पति नागेश्वर चौधरी	661	सड़क	662	655
15			रैयती	–	0.028	छठनी देवी, पति चन्द्रकेश्वर चौधरी	661	सड़क	662	655
16	133	664	रैयती	–	0.026	मुन्शी चौधरी, पिता रामधनी चौधरी	644	सड़क	667	662
17	148	667	रैयती	–	0.042	रामदास चौधरी वगै0 पिता विरझु चौधरी वो मनोज चौधरी वगै0, पिता चान्ददेव चौधरी	667	सड़क	1208	664
18			रैयती	–	0.051	कामेश्वर चौधरी पिता स्व0 भगवती चौधरी	667	सड़क	1208	664
19	133	669	रैयती	–	0.050	शंकर चौधरी वगै0, पिता प्रमेश्वर चौधरी	664	668	667	670
20	150	673	रैयती	–	0.024	बुटेश्वर चौधरी, पिता देवचन्द चौधरी	सड़क	673	671	676
21			रैयती	–	0.012	रघुनाथ चौधरी, पिता जतन चौधरी	सड़क	673	671	676
22	134	663	रैयती	–	0.022	तेतरी देवर, पति गणेश चौधरी	663	सड़क	664	661
23	56	1386	रैयती	–	0.050	कामेश्वर चौधरी पिता स्व0 भगवती चौधरी	1386	सड़क	1386	1386
24			रैयती	–	0.040	मनोज चौधरी, पिता बुटेश चौधरी	1386	सड़क	1386	1386
25	52	1390	रैयती	–	0.057	अमर प्रसाद गुप्ता वगै0 पिता जयगोविन्द साव	1390	सड़क	1870	1386
26	244	529	रैयती	–	0.039	जयश्री चौधरी, पिता गुली चौधरी	सड़क	529	518	539
27			रैयती	–	0.022	श्रवण प्रसाद साव वै0 पिता राजेन्द्र साव	सड़क	529	518	539
28			रैयती	–	0.068	हिरा साव वगै0, पिता द्वारिका साव	सड़क	529	518	539
29	241	518	रैयती	–	0.068	जयश्री चौधरी वगै0 पिता गुली चौधरी	सड़क	518	495	529
30	244	495	रैयती	–	0.100	जयश्री चौधरी वगै0 पिता गुली चौधरी	सड़क	495	677	518
31			रैयती	–	0.075	बुधन चौधरी वगै0, पिता महादेव चौधरी	सड़क	495	677	518
32			रैयती	–	0.045	प्रदीप साव, पिता शत्रुधन साव	सड़क	495	677	518
33			रैयती	–	0.032	अजय प्रसाद, पिता शत्रुधन प्रसाद	सड़क	495	677	518
34			रैयती	–	0.021	कुन्ती कुवंर, पति महेन्द्र साव	सड़क	495	677	518
35	129	677	रैयती	–	0.044	किरण देवी, पिता सखिचन्द्र प्रसाद	सड़क	677	676	495
36	130	676	रैयती	–	0.041	हिरा प्रसाद साव वगै0 पिता द्वारिका साव	सड़क	676	673	647
37	150	673	रैयती	–	0.024	बुटेश्वर चौधरी, पिता देवचन्द चौधरी	सड़क	673	671	676
38			रैयती	–	0.012	रघुनाथ चौधरी, पिता जतन चौधरी	सड़क	673	671	676
39	152	671	रैयती	–	0.011	अरूण कुमार चौधरी, पिता हिरा चौधरी	सड़क	671	670	673
40			रैयती	–	0.011	प्रमानंद चौधरी, पिता हीरा चौधरी	सड़क	671	670	673
41			रैयती	–	0.011	प्रेमचन्द्र चौधरी वगै0 पिता हीरा चौधरी	सड़क	671	670	673
42	134	670	रैयती	–	0.100	तेतरी देवी, पति गणेश चौधरी	सड़क	670	सड़क	670
43			रैयती	–	0.075	फुलमती देवी पति कामेश्वर चौधरी	सड़क	670	सड़क	670
44	146	1203	रैयती	–	0.026	कामेश्वर चौधरी पिता स्व0 भगवती चौधरी	सड़क	1203	1204	1202
45	148	1205	रैयती	–	0.052	रामदास चौधरी वगै0 पिता विरझु चौधरी वो मनोज चौधरी वगै0, पिता चान्ददेव चौधरी	सड़क	1205	1206	1203
46	49	1869	रैयती	–	0.006	कामेश्वर साव पिता स्व0 ब्रहमदेव साव वो संजय प्रसाद वगै0 पिता कंचन साव	सड़क	1869	1669	1871
47			रैयती	–	0.035	नरेश राम, पिता जानकी राम	सड़क	1869	1669	1871
48			रैयती	–	0.031	अनार कुवंर, पिता जितन राम	सड़क	1869	1669	1871
49			रैयती	–	0.022	कलावती देवी, पति सीता राम चौधरी	सड़क	1869	1669	1871
50			रैयती	–	0.043	ओम प्रकाश गुप्ता वगै0, पिता देव प्रताप साव	सड़क	1869	1669	1871
51	55	1872	रैयती	–	0.007	किसमतिया कुवंर, पति चरितर चौधरी	सड़क	1872	1871	1871
52			रैयती	–	0.004	सरोज देवी, पति मंदीप प्रसाद	सड़क	1872	1871	1871
53			रैयती	–	0.008	पावपाती देवी, पति नेपाल चौधरी	सड़क	1872	1871	1871
54			रैयती	–	0.040	मुरारी प्रसाद गुप्ता वगै0, पिता शिवशंकर साव	सड़क	1872	1871	1871
55			रैयती	–	0.042	मनोज चौधरी वगै0, पिता चान्ददेव चौधरी	सड़क	1872	1871	1871
56			रैयती	–	0.010	अनील चौधरी वगै0 पति रामदास चौधरी	सड़क	1872	1871	1871
57			रैयती	–	0.020	दुखनी देवी, पति राम प्रसाद चौधरी	सड़क	1872	1871	1871
				कुल :–	1.9440					

यह अधिघोषणा हितबद्ध व्यक्तियों की आपत्तियों के सुनने और अधिनियम सं0–30 / 2013 की धारा 15 में प्रदत्त यथा उपबंधित सम्यक जांच के पश्चात् किया गया है। भूमि अर्जन के कारण पुनर्व्यवस्थापन के लिए संभावित परिवारों की संख्या :– शून्य,

जिनके लिए पुनर्व्यवस्थापन के क्षेत्र चिन्हित किए गए है, जिसका संक्षिप्त विवरण निम्नवत है :– ग्राम–डण्डा, थाना नं0–301, थाना–डण्डा, अंचल–डण्डा, जिला–गढ़वा, क्षेत्रफल– 0, एकड़– 0, जिला भूमि अर्जन पदाधिकारी, गढ़वा के कार्यालय में किसी कार्य दिवस के दिन भूमि योजना का निरीक्षण किया जा सकता है।

पुनर्वासन और पुनर्व्यवस्थापन योजना के सार नीचे दिये गये है :– शून्य

उपायुक्त, गढ़वा।

PR 310063 (Land Reforms) 23-24 (D)

पृष्ठ एक के शेष

सीएम 16 नवंबर से करेंगे 'आपकी योजना आपकी सरकार...

को झामुमो प्रभावहीन और हाट बाजार की सभा बता कर तंज कसता रहा है। लेकिन यह भी एक तथ्य है कि बाबूलाल मरांडी ने अपने संकल्प से सिद्धि तक की यात्रा के दौरान अपने आक्रमण के केंद्र में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को रखा है। इस बीच भ्रष्टाचार, महिला सुरक्षा, बेरोजगारी सहित कई मुद्दों को भी उठाया था। अब मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की तैयारी अपनी यात्रा के दौरान बाबूलाल मरांडी के आरोपों का जवाब देने के साथ साथ महागठबंधन की सरकार की बड़ी जनकल्याणकारी योजनाओं, यूनिवर्सल पेंशन, ओल्ड पेंशन स्कीम, नियुक्ति एवं अन्य उपलब्धियों को जनता के बीच ले जाने की है।

झारखंड में फरेबियों की सरकार...

लोगों ने की लेकिन जनजातीय गौरव दिवस के रूप में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मनाने का फैसला लिया। हम यहां के बारे में सुनते थे लेकिन मौजूदा सरकार ने कभी यहां का दर्द नहीं समझा। अटल बिहारी वाजपेयी थे, जिन्होंने झारखंड की स्थापना की। झारखंड में अटल बिहारी वाजपेयी हमेशा याद किए जायेंगे। हेमंत सोरेन ने ट्राइबल की चर्चा की। इसी नाम पर वोट मांगे और जितना नुकसान हेमंत सरकार ने आदिवासियों का किया उतना किसी ने नहीं किया। जेपी नड्डा ने कहा कि भाजपा की सरकार और भाजपा के कार्यकर्ता जब सत्ता पर बैठते हैं, तो लोगों की सेवा के लिए बैठते हैं। लोगों के काम करने के लिए बैठते हैं। झारखंड की तस्वीर और तकदीर बदलने के लिए बैठते हैं लेकिन जब झामुमो के लोग सत्ता पर बैठते हैं, तो वो अपनी सेवा के लिए बैठते हैं। मेवा खाने के लिए बैठते हैं। उन्होंने कहा कि हेमंत सरकार ने वोट की राजनीति के लिए धर्मांतरण पर आंख मूंद ली। वोट की राजनीति, धर्मांतरण पर मौन स्वीकृति देना यह बताता है कि वह वोट के लिए हर कुछ करने के लिए तैयार है। ये बताता है कि हेमंत सोरेन को आदिवासियों की संस्कृति की नहीं सिर्फ वोट की चिंता है। उन्होंने कहा कि झारखंड में तुष्टिकरण चरम पर है। मंदिर और मूर्तियां टूट रही है परंतु कोई एक्शन नहीं होता। महादेव की बारात को रोकी जा रही है पुलिस मूक दर्शक है। झारखंड की क्या स्थिति हो गई है जब मुंडा, बाबूलाल और रघुवर का राज था तब नक्सली पर काबू था आज नक्सली आतंक मचा रहे हैं घटनाएं बढ़ी है। पुलिस रक्षक की बजाय भक्षक बन गई है महिलाओं के साथ उत्पीड़न और अनाचार, बलात्कार किया जा रहे हैं। स्कूल के गेट से नाबालिग को उठाया जा रहा है। यह जंगलराज नहीं तो क्या है। झारखंड में जो जमीन घोटाला हुआ है इतिहास में ऐसा नहीं हुआ। ट्रांसफर पोस्टिंग का धंधा चालू है। केंद्र की मोदी सरकार ने झारखंड को आगे बढ़ाने का काम किया लेकिन यहां की निक्क्मी सरकार ने कांग्रेस के साथ मिली भगत कर यहां का विकास काम ठप कर दिया है।

हेमंत सरकार सिर्फ कमाने में...

से लेकर सभी दफ्तरों में बिना पैसे का कोई काम नहीं होता है। जमीन, कोयला, बालू , पत्थर हर जगह सिर्फ लूट ही लूट है। इन लुटेरे को झारखंड सरकार बचाती है। हेमंत सोरेन तो लुटेरों को संरक्षण दे रहे हैं। लुटेरे को पकड़कर ईडी ने जेल भेजना शुरू किया तो उन्हें बचाने के लिए सुप्रीम कोर्ट से महंगे वकीलों पर करोड़ों रुपए खर्च किए जा रहे हैं। हेमंत कहते हैं कि वह आंदोलनकारी के बेटे हैं डरते नहीं हैं लेकिन जब ीि वालों ने नोटिस दिया तो वह सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट भागे भागे फिर रहे हैं। अगर कोई गड़बड़ी नहीं किया तो उन्हें भागने की जरूरत क्या है ? ईडी के दफ्तर जाकर उन्हें सारी चीज साफ-साफ बता देनी चाहिए।

विश्व कप में ऑस्ट्रेलिया ने न्यूजीलैंड को 5 रन से हराया

एजेंसी। धर्मशाला

ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच शनिवार को विश्व कप मुकाबला विशाल स्कोर वाला रहा जिसमें ऑस्ट्रेलिया ने पांच रन से रोमांचक जीत हासिल की। ऑस्ट्रेलिया ने 49.2 ओवर में 388 रन का रिकॉर्ड स्कोर बनाया जबकि न्यूजीलैंड की टीम विशाल लक्ष्य का जबरदस्त ढंग से पीछा करने के बावजूद 50 ओवर में नौ विकेट पर 383 रन ही बना सकी। मुकाबले की अंतिम गेंद तक इस हाई स्कोरिंग मैच का रोमांच बना रहा। ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच यह अब तक सबसे ज्यादा स्कोर वाला वनडे मैच बन गया। इस मैच में कुल 758 रन बने। ऑस्ट्रेलिया की छह मैचों में यह चौथी जीत है जबकि न्यूजीलैंड को दूसरी हार का सामना करना पड़ा। दोनों टीमों के आठ-आठ अंक हैं। लेकिन इस नतीजे ने अंक तालिका में भी रोचकता बढ़ा दी है। भले ही ऑस्ट्रेलिया ने भी चार मैच जीत लिए हों लेकिन खासकर न्यूजीलैंड के आने वाले मैच मजबूत टीमों के खिलाफ हैं। ऑस्ट्रेलिया की पारी में अपना पहला विश्व कप मैच खेल रहे ट्रेविस हेड को मात्र 67 गेंदों में 10 चौकों और सात छक्कों से सजी 109 रन की तूफानी पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच का पुरस्कार मिला। न्यूजीलैंड के लिए भी रचिन रविंद्र ने 89 गेंदों में 116 रन की शानदार शतकीय पारी खेली लेकिन वह अपनी टीम को जीत की मंजिल तक नहीं ले जा पाए।

वर्ल्ड कप 2023 पॉइंट्स टेबल

टीम	मैच	जीत	हार	नेट प्वाइंट्स	नेट प्वाइंट्स
सा. अफ्रीका	6	5	1	10	+2.032
भारत	5	5	0	10	+1.353
न्यूजीलैंड	6	4	2	8	+1.232
ऑस्ट्रेलिया	6	4	2	8	+0.970
श्रीलंका	5	2	3	4	-0.205
पाकिस्तान	6	2	4	4	-0.387
अफगानिस्तान	5	2	3	4	-0.969
नीदरलैंड्स	6	2	4	4	-1.277
बांग्लादेश	6	1	5	2	-1.338
इंग्लैंड	5	1	4	2	-1.634

स्कोर बोर्ड

ऑस्ट्रेलिया	रन	बॉल	4	6
डेविड वॉर्नर	81	65	5	6
ट्रैविस हेड	109	67	10	7
मिचेल मार्श	36	51	2	0
स्टीव स्मिथ	18	17	2	0
मार्नस लाबुशेन	18	26	2	0
ग्लेन मैक्सवेल	41	24	5	2
जॉश इंग्लस	38	28	4	1
पैट कमिंस	37	14	2	4
मिचेल स्टार्क	1	3	0	0
ऐडम जैम्पा	0	3	0	0
जॉश हेजलवुड	0	0	0	0

अतिरिक्त : 09, **कुल :** 388/10 (49.2 ओवर)
विकेट पतन: 1-175, 2-200, 3-228, 4-264, 5-274, 6-325, 7-387, 8-388, 9-388, 10-388 . डीआरएस
गेंदबाजी : मैट हेनरी 6.2-0-67-1, ट्रेंट बोल्ट 10-0-77-3, लॉकी फर्ग्युसन 3-0-38-0, मिचेल सैंटनर 10-0-80-2, ग्लेन फि लिप्स 10-0-37-3, रचिन रविंद्र 8-0-56-0, जिमी नीशम 2-0-32-1

न्यूजीलैंड	रन	बॉल	4	6
डेवन कॉन्वे	28	17	6	0
विल यंग	32	37	4	1
रचिन रविंद्र	116	89	9	5
डैरिल मिचेल	54	51	6	1
टॉम लेथम	21	22	2	0
ग्लेन फि लिप्स	12	16	1	0
जिमी नीशम	58	39	3	3
मिचेल सैंटनर	17	12	1	1
मैट हेनरी	9	8	1	0
ट्रेंट बोल्ट	10	8	0	1
लॉकी फर्ग्युसन	0	1	0	0

अतिरिक्त : 26, **कुल :** 383/9 (50 ओवर)
विकेट पतन: 1-61, 2-72, 3-168, 4-222, 5-265, 6-293, 7-320, 8-346, 9-383 . डीआरएस
गेंदबाजी : मिचेल स्टार्क 9-0-89-0, जॉश हेजलवुड 9-0-70-2, पैट कमिंस 10-0-66-2, ग्लेन मैक्सवेल 10-0-62-1, ऐडम जैम्पा 10-0-74-3, मिचेल मार्श 2-0-18-0

भारत की निगाहें इंग्लैंड के खिलाफ जीत का विजय रथ जारी रखने पर

एजेंसी। लखनऊ

जब जून में 2023 पुरुष एकदिवसीय विश्व कप कार्यक्रम की घोषणा की गई थी, तो किसी ने 29 अक्टूबर को देखा होगा और बीआरएसएबीवी एकाना क्रिकेट स्टेडियम में भारत-इंग्लैंड के बीच होने वाले मुकाबले को अपने कैलेंडर में एक प्रमुख मुकाबले के रूप में चिह्नित किया होगा । मेजबान टीम का मुकाबला गत चैंपियन से है। अभी रुकें और भारत सबसे प्रबल दावेदार होने की टूर्नामेंट-पूर्व बिलिंग पर खरा उतरा है - पांच में से पांच मैच जीतकर और अंक तालिका में शीर्ष-दो में जगह बनाने की उम्मीद। लेकिन स्क्रिप्ट उस तरह से घटित नहीं हुई जैसी इंग्लैंड के लिए सोची गई थी, मौजूदा चैंपियन पांच में से चार मैच हारने और प्रतियोगिता से जल्दी बाहर होने के कगार पर है। पिछले हफ्ते एचपीसीए स्टेडियम में न्यूजीलैंड पर चार विकेट की जीत के बाद धर्मशाला के ठंडे मौसम में आराम करने के बाद, भारत अपनी जीत की गति को जारी रखने के इरादे से पिछले दो दिनों से लखनऊ में पसीना बहाकर रविवार के मुकाबले में उतर रहा है। कप्तान रोहित शर्मा से लेकर विराट कोहली और विकेटकीपर केएल राहुल तक उनके बल्लेबाज शानदार फॉर्म में हैं और टीम के लिए अच्छा प्रदर्शन करने के लिए खड़े हैं। तेज गेंदबाजी आक्रमण की अगुवाई करते हुए तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने न्यूजीलैंड के खिलाफ पांच विकेट लेकर तत्काल प्रभाव छोड़ा है। स्पिन गेंदबाजी विभाग में रवींद्र जड़ेजा और कुलदीप यादव बेहद प्रभावी रहे हैं। बायें टखने की चोट के कारण हार्दिक पंड्या अभी भी अनुपलब्ध हैं, ऐसे में भारत धर्मशाला में उतारी गई अंतिम एकादश की तरह ही अंतिम एकादश उतार सकता है। हार्दिक की अनुपस्थिति में टीम के संतुलन के सवाल पर भारतीय थिंक-टैंक टूर्नामेंट में एकमात्र अजेय टीम बने रहने की अपनी खोज पर विचार कर रहा होगा। धर्मशाला में हार्दिक की अनुपस्थिति का मतलब था कि भारत को सूर्यकुमार यादव और मोहम्मद शमी को लाकर उनकी कमी को पूरा करना था, जबकि शार्दुल ठाकुर को बाहर रखा गया था।

टीमें इस प्रकार है

भारत : रोहित शर्मा (कप्तान), हार्दिक पांड्या (उप-कप्तान), शुभमन गिल, विराट कोहली, श्रेयस अय्यर, केएल राहुल (विकेटकीपर), रवींद्र जड़ेजा, शार्दुल ठाकुर, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, कुलदीप यादव, मोहम्मद शमी, रविचंद्रन अश्विन, ईशान किशन और सूर्यकुमार यादव।

इंग्लैंड : जोस बटलर (कप्तान और विकेटकीपर), मोइन अली, गस एटकिंसन, जॉनी बेयरस्टो, सैम करेन, लियाम लिविंगस्टोन, डेविड मलान, आदिल राशिद, जो रूट, हैरी ब्रुक, बेन स्टोक्स, ब्रायडन कार्स, डेविड विली, मार्क वुड और क्रिस वोक्स.

नीदरलैंड ने वर्ल्ड कप 2023 में जीता दूसरा मैच, बांग्लादेश को 87 रनों से दी शिकस्त

स्कोर बोर्ड

नीदरलैंड्स	रन	बॉल	4	6
विक्रमजीत सिंह	3	9	0	0
मैक्स ओ'डाउड	0	3	0	0
वेस्ली बरेसी	41	41	8	0
कॉलिन ऐकरमैन	15	33	1	0
स्कॉट एडवर्ड्स	68	89	6	0
बास डलीडे	17	32	2	0
साइब्रैंड एंगलब्रेख्त	35	61	3	0
लोगन वैन बीक	23	16	2	1
शारिज अहमद	6	8	0	0
आर्यन दत्त	9	6	0	1
पॉल वैन मीकरेन	0	2	0	0

अतिरिक्त : 12, **कुल :** 229/10 (50 ओवर)
विकेट पतन: 1-3, 2-4, 3-63, 4-63, 5-107, 6-185, 7-185, 8-194, 9-212, 10-229 . डीआरएस
गेंदबाजी : शोरिफुल इस्लाम 10-0-51-2, तस्किन अहमद 9-1-43-2, शाकिब अल हसन 10-1-37-1, मेहदी हसन मिराज 4-0-17-0, मुस्तफि जुर रहमान 10-1-36-2, महेदी हसन 7-0-40-2

बांग्लादेश	रन	बॉल	4	6
लिटन कुमार दास	3	12	0	0
तंजिद हसन	15	16	3	0
मेहदी हसन मिराज	35	40	5	1
नजमुल शान्तो	9	18	2	0
शाकिब अल हसन	5	14	0	0
मुशफि कुर रहीम	1	5	0	0
महमुदउल्लाह	20	41	2	0
महेदी हसन	17	38	1	0
तस्किन अहमद	11	35	1	0
मुस्तफि जुर रहमान	20	35	2	1
शोरिफुल इस्लाम	0	0	0	0

अतिरिक्त : 06, **कुल :** 142/10 (42.2 ओवर)
विकेट पतन: 1-19, 2-19, 3-45, 4-63, 5-69, 6-70, 7-108, 8-113, 9-142, 10-142 . डीआरएसा
गेंदबाजी : आर्यन दत्त 10-3-26-1, लोगन वैन बीक 9-1-30-1, कॉलिन ऐकरमैन 7-1-25-1, पॉल वैन मीकरेन 7.2-0-23-4, बास डलीडे 7-0-25-2, शारिज अहमद 2-0-13-0

एजेंसी। कोलकाता

विश्व कप 2023 में शनिवार को नीदरलैंड ने बांग्लादेश को 87 रनों से हरा दिया। नीदरलैंड के द्वारा 229 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी बांग्लादेश की टीम 42.2 ओवर में अपने सभी विकेट खोकर सिर्फ 142 रन बना सकी। बांग्लादेश की ओर से मेहदी हसन ने 40 गेंदों पर 5 चौके और 1 छक्के की मदद से सर्वाधिक 35 रन बनाए। बता दें कि नीदरलैंड ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय किया था। नीदरलैंड ने कप्तान स्कॉट एडवर्ड्स के 68 रन की शानदार पारी के बदौलत नीदरलैंड 50 ओवर में 10 विकेट के नुकसान पर 229 रनों का स्कोर खड़ा किया नीदरलैंड की ओर से पॉल वैन मीकेरेन ने सर्वाधिक 4 विकेट चटकाए। बता दें कि बांग्लादेश ने प्लेइंग इलेवन में दो बदलाव किए थे। नसुम अहमद और हसन महमूद की जगह तस्कीन अहमद को मौका मिला था। ईडन गार्डन पर यह मौजूदा विश्व कप का पहला मुकाबला है। नीदरलैंड के खिलाफ 230 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी बांग्लादेश ने लगातार अंतराल पर अपने विकेट गंवाए। खबर लिखे जाने तक बांग्लादेश का स्कोर 33.2 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 114 रन है। बांग्लादेश की ओर से तस्कीन अहमद 4 रन पर जबकि मुस्तफिजुर रहमान 1 रन पर बैटिंग कर रहे हैं। नीदरलैंड की ओर से पॉल वैन मीकेरेन ने सर्वाधिक 3 विकेट चटकाए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी बांग्लादेश की टीम ने खबर लिखे जाने तक 79 रन के अंदर अपने 6 विकेट गंवा दिए हैं। बांग्लादेश की ओर से क्रीज पर महमुदुल्लाह 7 रन बनाकर जबकि मेहंदी हसन 2 रन बनाकर डटे हुए हैं। नीदरलैंड के खिलाफ लक्ष्य का पीछा करने उतरी बांग्लादेश की शुरूआत खराब रही। बांग्लादेश के दोनों ओपनर जल्द ही पवेलियन लौट गए। खबर लिखे जाने तक बांग्लादेश का स्कोर 16 ओवर में 4 विकेट के नुकसान पर 63 रन है। बांग्लादेश के कप्तान शाकिब अल हसन 5 रन बनाकर आउट हो गए। नीदरलैंड की ओर से पॉल वैन मीकेरेन ने सर्वाधिक 2 विकेट चटकाए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी बांग्लादेश की टीम को पांचवें ओवर में ओपनर लिटन दास के रूप में बड़ा झटका लगा है। लिटन दास 3 रन बनाकर आउट हो गए। खबर लिखे जाने तक बांग्लादेश का स्कोर 1 विकेट के नुकसान पर 5 ओवर में 19 रन है। नीदरलैंड ने कप्तान स्कॉट एडवर्ड्स के 68 रन की शानदार पारी के बदौलत नीदरलैंड 50 ओवर में 10 विकेट के नुकसान पर 229 रनों का स्कोर खड़ा किया। इस तरह नीदरलैंड की टीम ने बांग्लादेश को 230 रनों का लक्ष्य दिया है। नीदरलैंड की टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए बांग्लादेश के खिलाफ 48 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 203 रन बना लिए हैं। न्यूजीलैंड का 8वां विकेट शरीज अहमद के रूप में गिरा है।

एशियन पैरा गेम्स 2023 : भारत ने 100 पदक का आंकड़ा पार किया, 30 स्वर्ण के करीब

एजेंसी। हांगझू

भारतीय पैरा-एथलीटों ने चीन के हांगझू में चौथे एशियाई पैरा खेलों में चमक जारी रखी और शनिवार को सामूहिक रूप से प्रतिष्ठित 100 पदक का आंकड़ा पार कर लिया। इससे पहले, भारत ने 2018 जकार्ता खेलों में अपने प्रदर्शन में सुधार करते हुए गुरुवार को 72-पदक (15 स्वर्ण, 24 रजत, 33 कांस्य) के आंकड़े को पार करते हुए अपने अब तक के सर्वश्रेष्ठ पदक को पीछे छोड़ दिया। लेखन के समय भारत की पदक तालिका में 29 स्वर्ण, 31 रजत और 51 कांस्य सहित कुल 111 पदक थे, और प्रतियोगिताओं के अंत तक गिनती बढ़ने की उम्मीद है। शनिवार को पुरुषों की टी-47 400 मीटर स्पर्धा में दिलीप गावित द्वारा जीते गए 26वें स्वर्ण के साथ भारत ने प्रतिष्ठित 100 पदक का आंकड़ा पार कर लिया। इस बीच, चीन 200 से अधिक स्वर्ण पदकों सहित 500 से अधिक पदकों के साथ बाकियों से आगे है।

भारत ने पूरे किये 100 पदक, एशियाई पैरा खेलों में जीत पर पीएम मोदी ने दी बधाई

इस उपलब्धि पर प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने बधाई दी और कहा कि ये जीत सभी के लिए प्रेरणा होगी। प्रधानमंत्री ने एक्स पर लिखा, एशियाई पैरा खेलों में 100 पदक! अद्वितीय खुशी का क्षण। यह सफलता हमारे एथलीटों की प्रतिभा, कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प का परिणाम है। यह उल्लेखनीय मील का पत्थर हमारे दिलों को बेहद गर्व से भर देता है। मैं अपनी गहरी सराहना व्यक्त करता हूं। हमारे अविश्वसनीय एथलीटों, कोचों और उनके साथ काम करने वाली पूरी सहायता प्रणाली का आभार। ये जीतें हम सभी को प्रेरित करती हैं। वे एक अनुस्मारक के रूप में काम करती हैं कि हमारे युवाओं के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। इस बीच, प्रतिष्ठित खेलों के आखिरी दिन भारत के लिए पदकों की बारिश जारी रही। इससे पहले शनिवार को रोवर्स अनीता और नारायण कोंगनापल्ले ने पीआर 3 मिक्स्ड डबल्स स्कल्स में रजत पदक जीता। मिश्रित युगल जोड़ी ने 8:50.71 के समय के साथ पोडियम फिनिश किया।

मनु भाकर ने निशानेबाजी में भारत के लिए 11वां पेरिस ओलंपिक कोटा हासिल किया

एजेंसी। नई दिल्ली

ओलंपियन और भारत के सबसे सफल समकालीन निशानेबाजों में से एक मनु भाकर ने कोरिया के चांगवोन में चल रही 15वीं एशियाई शूटिंग चैंपियनशिप में महिलाओं की 25 मीटर पिस्टल में पांचवें स्थान पर रहकर शूटिंग में भारत का 11वां पेरिस 2024 ओलंपिक कोटा हासिल किया। मनु ने फाइनल में 24 का स्कोर किया और शूट-ऑफ में हारकर एक और अंतरराष्ट्रीय पदक से चूक गईं। ईरान की हनियेह रोस्तमियान दूसरे स्थान पर रहीं, उन्होंने चीन का पदक छीन लिया, क्योंकि पावरहाउस राष्ट्र ने अन्य सभी स्थानों को एक से चार तक ले लिया। यह देखते हुए कि चीन केवल एक कोटा का दावा कर सकता है और हनियाह ने पहले ही अपना कोटा सुरक्षित कर लिया था, दूसरा पेरिस स्थान भारतीय ने हासिल किया। बाहर होने से पहले, मनु अक्सर शीर्ष दो में और पूरे समय पदक की स्थिति में रहती थीं, सातवीं और आठवीं श्रृंखला में दो और तीन के स्कोर से पहले उन्हें चौथे स्थान के लिए चीन की झाओ नान के साथ शूट-ऑफ में जाना पड़ा। वह चूक गईं लेकिन कोटा पहले ही सुरक्षित हो चुका था। मनु ने अपने कार्यक्रम के बाद कहा, उद्देश्य स्पष्ट रूप से कोटा था, क्योंकि इसके बाद जीतने की बहुत कम संभावनाएँ बची हैं। तो हां, मुझे खुशी है कि मैंने कोटा जीत लिया है लेकिन पोडियम फिनिश बेहतर होता। मैं कुछ सुधारों पर काम कर रही हूं और मुझे लगता है कि मैं सही रास्ते पर हूं लेकिन यहां से और भी अधिक मेहनत करने की जरूरत होगी।"

एशियन पैरा गेम्स पदक तालिका

19th Asian Games

रैंक	देश	सोना	चांदी	कांस्य	कुल
1	चीन	214	167	140	521
2	आईआर ईरान	44	46	41	131
3	जापान	42	49	59	150
4	दक्षिण कोरिया	30	33	40	103
5	भारत	29	31	51	111
6	इंडोनेशिया	29	30	36	95
7	थाईलैंड	27	26	55	108
8	उज्बेकिस्तान	25	24	30	79
9	फिलीपींस	10	4	5	19
10	हांगकांग(चीन)	8	15	24	47

आयोजन

लीजेंड्स लीग क्रिकेट 2023 के टिकटों की बिक्री शुरू

खेल प्रेमियों का होगा मनोरंजन : रमन रहेजा

पेटीएम और पेटीएम इनसाइडर पर उपलब्ध

टिकटों की कीमत 249 रु. से शुरू

रांची के मैचों के लिए टिकट उपलब्ध

नवीन मेल संवाददाता। रांची

लीजेंड्स लीग क्रिकेट (एलएलसी) ने इस सीजन के टिकटों की बिक्री शुरू करने की घोषणा की। खेल प्रेमियों को बेसब्री से इसका इंतजार था। वे अब पेटीएम और पेटीएम इनसाइडर पर टिकट खरीद सकते हैं। एलएलसी 2023 के मैच 18 नवंबर से 9 दिसंबर 2023 तक भारत के पांच शहरों में खेले जाएंगे। रांची में सभी मैच जेएससीए इंटरनेशनल स्टेडियम में खेले जाएंगे और टिकटों की कीमत 249 रु. से शुरू होगी। एलएलसी के इस सीजन रांची के मैचों के टिकट पेटीएम और पेटीएम इनसाइडर पर उपलब्ध हैं। लीजेंड्स लीग क्रिकेट के सीईओ रमन रहेजा ने कहा कि हम ने इस सीजन खेल प्रेमियों के मनोरंजन की जबरदस्त तैयारी की है। पेटीएम और पेटीएम इनसाइडर से अहम साझेदारी कर उन्हें एक्सक्लूसिव टिकटिंग पार्टनर बनाया है। भारत के पांच शहरों - देहरादून, रांची, जम्मू, विशाखापत्तनम और सूरत में होने वाले ये मैच यादगार बनने वाले हैं। आप भी एक्शन के लिए तैयार हो जाइए। कैलेंडर पर निशान लगा लीजिए और पेटीएम और पेटीएम इनसाइडर पर टिकट बुक कर लीजिए। पेटीएम इनसाइडर के बिजनेस हेड वरुण खरे ने बताया कि हम लीजेंड्स लीग टी20 में खेल प्रेमियों को उनके पसंदीदा क्रिकेट के दिग्गजों को एक बार फिर एक्शन में देखने का अवसर देने के लिए बेहद उत्साहित हैं। रांची, देहरादून, जम्मू, विशाखापत्तनम और सूरत में गौतम गंभीर, सुरेश रैना, हरभजन सिंह, आरोन फिंच, इरफान पठान, पार्थिव पटेल, क्रिस गेल, मार्टिन गुप्टिल जैसे दिग्गज क्रिकेटरों का खेल देखने का यह अभूतपूर्व अवसर है। इस तरह देश के कोने-कोने में क्रिकेट की धूम मचेगी। यह अवसर अविस्मरणीय अनुभव रहेगा। इन दिग्गजों को लाइव देखने के लिए आप पेटीएम ऐप और पेटीएम इनसाइडर वेबसाइट और ऐप पर आसानी से टिकट खरीद सकते हैं। इस साल लीजेंड्स लीग क्रिकेट टूर्नामेंट में 6 टीमें हैं और ये मैच पांच शहरों में खेले जाएंगे। इस सीजन लीग में दो नई फ्रेंचाइजी शामिल की गई है - सदर्न सुपर स्टार्स और अर्बनराइजर्स हैदराबाद। एलएलसी 2023 का उद्घाटन मैच 18 नवंबर को रांची में होगा है, जहां पिछले सीजन के चैंपियन इंडिया कैपिटल्स का मुकाबला भीलवाड़ा किंग्स से होगा। इस सीजन 22 दिनों में कुल 19 मैच खेले जाएंगे। टूर्नामेंट रोमांचक होने वाला है क्योंकि एलएलसी 2023 में इस खेल के दिग्गज क्लास की नई परिभाषा करने के लिए मैदान में उतरेंगे। रांची के बाद 24 नवंबर को देहरादून में मैच होगा। जम्मू में 27 नवंबर से 1 दिसंबर तक चार मैच खेले जाएंगे, जबकि विशाखापत्तनम में 2 दिसंबर से 4 दिसंबर तक तीन मैच खेले जाएंगे। एलएलसी 2023 के नॉकआउट मैच सूरत में खेले जाएंगे, जिसमें क्वालीफायर 5 दिसंबर से 7 दिसंबर तक रोमांचक खेल प्रदर्शन करेंगे। 9 दिसंबर के शानदार मैच से सीजन का समापन होगा।